मकतबा दारुस्सुन्ना की जानिब से घर घर दीन की तालीम पहुंचाने, दीनी जानकारी को आम करने और मुसलमानों के दिलो में नबी ﷺ का इश्क़ पैदा करने और सुन्नतों का आमिल बनाने की पहली कोशिश बनाम :

आँखों का तारा नामे मुहम्मद



मुसन्निफ़

मौलाना अबू शफीअ मुहम्मद शफीक़ खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

आप इस किताब में पढ़ सकेंगे

मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा और दीन की खिदमत

- मुहब्बत और इश्क़ में फर्क़
- इश्क़े रसूल की निशानियां
- मुस्तफ़ा ﷺ ईमान की जान हैं
- प्यारे नबी की प्यारी सुन्नतें
- आँखों का तारा नामे मुहम्मद
- सुन्नतों पर अमल का सवाब
- हुज़ूर ﷺ के आशिक़ तमाम मख्लूक़ है
- सहाबए किराम का अंदाज़े इश्क़
- दुरूद शरीफ कि अनोखी फ़ज़ीलत
- नबी ﷺ से मुहब्बत करने की मिसाल

मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ اللَّطِیْفِ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِہِ الشَّفِیْقِ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

मकतबा दारुस्सुन्ना की जानिब से घर घर दीन की तालीम पहुंचाने, दीनी जानकारी को आम करने और मुसलमानों के दिलो में नबी ﷺका इश्क़ पैदा करने और सुन्नतों का आमिल बनाने की पहली कोशिश बनाम :

आँखों का तारा

नामे मुहम्मद

आप इस किताब में पढ़ सकेंगे

* दीन सीखो इनआम पाओ
* मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा और दीन की खिदमत
* तकरीज़े जमील
* मुसन्निफ़ का तआरूफ
* आँखों का तारा नामे मुहम्मद
* दुरूद शरीफ कि अनोखी फ़ज़ीलत
* मुहब्बत और इश्क़ में फर्क़
* नबी ﷺ से मुहब्बत करने की मिसाल
* इश्क़े रसूल ﷺ के फवाइद
* सहाबए किराम का अंदाज़े इश्क़
* मुस्तफ़ा ﷺ ईमान की जान हैं
* हुज़ूर ﷺ के आशिक़ तमाम मख्लूक़ है
* इश्क़े रसूल की निशानियां
* सुन्नतों पर अमल का सवाब
* प्यारे नबी की प्यारी सुन्नतें
* कलाम व सलाम

मुसन्निफ़

मौलाना अबू शफीअ मुहम्मद शफीक़ खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मकतबा दरुस्सुन्ना आगरा

दीन सीखो इनाम पाओ

खुशखबरी खुशखबरी

मदीने जाना हुआ आसान

मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा पेश कर रहा है दो किताबें

(1) आँखों का तारा नामे मुहम्मद MRP: 170

(2) दीने इस्लाम की खूबियाँ MRP: 80

दोनों किताबों की कुल क़ीमत 250 रुपए है

लेकिन आफ़र में आगरा वालों के लिये सिर्फ 100 रुपए

और दूसरे शहर वालों के लिये 115 रुपए में दी जा रही हैं

इन किताबों को खरीदने वालों को 19 इनाम भी दिये जाएंगे

जिसकी तफ़सील येह है कि किताबों को खरीदने वालों के

दर्मियान 28 Dec 2025 को Lucky Draw

किया जाएगा और पहले जिस का नाम निकलेगा उसे

मदीने का टिकट यानी उमरा पैकेज दिया जाएगा।

इसी तरह बाकी 18 को मक्के, मदीने, बगदाद के मुकद्दस

तबर्रूकात और इनाम दिये जायेगें।

लिहाज़ा जल्द अपना ऑर्डर बुक करवायें

6395069872 / 8808693818

7078592022

8006862521

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ اللَّطِیْفِ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِہِ الشَّفِیْقِ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

मकतबा दारुससुन्ना आगरा की जानिब से घर घर दीन की तालीम पहुँचाने, दीनी जानकारी को आम करने और इश्के रसूल की अहमियत, ज़रूरत और प्यारे नबी की प्यारी सुन्नतों को आसान अंदाज़ में पेश करने की पहली कोशिश बनाम

दीन सीखो और इनाम पाओ

आँखों का तारा नामे मुहम्मद

अल्लाह पाक हमें अपने नबी की मुहब्बत और उनकी सुन्नतों को सीखने और उस पर अमल करने की तौफीक़ अता फरमाये

जुमादल ऊला 1447 हिजरी **NOV 2025**

पेज : 160 **MRP: 170**

CONTACT: +91 6395069872 / 8808693818

नोट : मैं अपने तमाम इस किताब को पढ़ने वालों से इल्तिजा करता हुँ कि इस किताब की कम्पोजिंग से लेकर चेक करने तक के सारे मराहिल गहरी नज़र से किये गये हैं लेकिन फिर भी गलती का इम्कान मौजूद है। लिहाज़ा जो भी इस किताब में कोई गलती पाये वह ज़रूर इस मेल आई डी पर मेल कर के बताये ताकि अगले एडीशन में उस को दुरुस्त किया जा सके।

EMAIL: SHAFIQMADANI26@GMAIL.COM

दुआए खैर का तालिब

अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफीक़ खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

फेहरिस्त

पहले इसे पढ़ लीजिए

ऐ आशिक़ाने रसूल!1447हिजरी बमुताबिक 2025 ईसवी में होने वाला हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मीलाद आम मीलाद नहीं था बल्कि येह 1500 साला मीलाद था यानी इस साल हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दुनिया में पैदा हुए 1500 साल हो गए, इसी लिए तमाम आशिक़ाने रसूल ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मीलाद और जलूसे मीलाद को बड़े एहतिमाम के साथ और बड़े अच्छे अंदाज़ में मनाने की कोशिश की, यहां तक कि कई इलाक़ों में जुलूसे मीलाद के वक़्त बारिश हो रही थी लेकिन फिर भी आशिक़ाने रसूल ने बारिश में भीगते हुए जुलूसे मीलाद में शिरकत की और अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बारगाह में ख़िराजे तहसीन पेश कर के अब्दी और सरमदी बरकतों को अपने दामन में समेटने की कोशिश की अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ है कि हर आशिक़े रसूल को दुनिया व आख़िरत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बरकतें, रहमतें, इनायतें नसीब फ़रमाए और तमाम आशिक़ाने रसूल की ख़ैर फ़रमाए। आमीन

या रसूलल्लाह तेरे चाहने वालों की ख़ैर
सब ग़ुलामों का भला हो सब करें तैबा की सैर

नबीﷺ का आशिक़ कैसा होता है?

ऐ आशिक़ाने रसूल! नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का येह मीलाद हमें सिर्फ साल में एक बार नहीं बल्कि सारी ज़िंदगी मनाना है और बिलख़ुसूस 1447 हिजरी में पूरे साल मीलाद मनाना है। अपने अंदर अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इश्क़ बढ़ाना है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत से अपने किरदार को जगमगाना है। और दुनिया को बता देना है कि नबी

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आशिक़ ऐसा होता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आशिक़ कैसा होता है ?

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आशिक़ नमाज़ी होता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आशिक़ सुन्नतों पर अमल करने वाला होता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आशिक़ अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हर वक़्त ज़िक्र करने वाला होता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आशिक़ झूट नहीं बोलता। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आशिक़ किसी को धोका नहीं देता। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आशिक़ ख़ुश अख्लाक़ और बा किरदार होता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आशिक़ सच्चा मुस्लमान होता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आशिक़ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नतों की चलती फिरती तस्वीर होता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आशिक़ दुनिया में कहीं भी रहे मगर उस का दिल मदीने में होता है।

जानो दिल होशो खिरद सब तो मदीने पहुंचे
तुम नहीं चलते रज़ा सारा तो सामान गया

लिहाज़ा नीयत कीजिए कि इस साल के आख़िर आख़िर तक हम अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत को ज़रूर पढ़ लेंगे। अलहम्दु लिल्लाह दीन की ज़रूरी बातें, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत को आम करने, हर मुस्लमान तक नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत को आसान अंदाज़ में पहुंचाने की कोशिश में आपका **'मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा'** दिन रात लगा हुआ है। और इसी की एक कड़ी येह किताब है।

दीन सीखो और इनाम पाओ

आज कल देखा जा रहा है कि दीनी किताबों को पढ़ने का शौक़ो ज़ौक़ बिल्कुल ख़त्म होता जा रहा है जिसकी वजह से एक मुस्लमान को अपने दीन की ज़रूरी जानकारी नहीं हो पा रही और इस का बुरा नतीजा और बुरा असर येह हुआ कि मुस्लमानों के दिलों से अपने दीन, ईमान, क़ुरआन, अल्लाह और रसूल की अज़मत, वुक़अत, रिफ़अत ख़त्म होती जा रही है। यहां तक कि ऐसे भी हालात होते जा रहे हैं कि उनको अपने नबी का नाम तक मालूम नहीं और जब हमारा येह हाल है तो हमारी आने वाली नस्लों का क्या हाल होगा ? बस अल्लाह पाक हमारे हाले ज़ार पर रहम फ़रमाए।

मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा और दीन की ख़िदमत

हमारे **'मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा'** की टीम ने इस पर काफ़ी ग़ौरो फ़िक्र किया कि मुस्लमानों को अपने दीन की ज़रूरी जानकारी कैसे दी जाये? और मुस्लमानों के अंदर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत को पढ़ने का शौक़ो ज़ौक़ कैसे पैदा किया जाये ? लिहाज़ा काफ़ी ग़ौरो फ़िक्र के बाद टीम की मुशावरत से येह तै हुआ कि:

(1)**---** किताबों को आसान अंदाज़ में और उर्दू में कम और हिन्दी में ज़्यादा छापी जाएं।

(2)**---** किताबों को बहुत ज़्यादा मोटी नहीं बल्कि 100 से 150 पेज की रखी जायें।

(3)**---** किताबों को इस अंदाज़ से लिखा जाये कि उस में क़ुरआन और हदीस के साथ साथ अक़्ली दलीलें, लोजिक और हिकमतें भी बयान की जाएं ताकि पढ़ने वाले को किताब से दिलचस्पी हो।

(4)**---** किताबों की ख़रीदारी पर कुछ ना कुछ इनाम रखा जाये जिसकी वजह से किताबों को ख़रीदने में लोग पीछे ना रहें बल्कि इनाम को पाने की लगन में दीनी किताबें खरीदें और पढ़ें और अपने ईमान को मज़बूत करें।

(5)**---** येह ऑफ़र हर दो महीने में निकाला जाये और हालात और मुआमलात के पेशे नज़र इन किताबों में दीन की ज़रूरी जानकारी हो।

लकी ड्रा अक्टूबर 2025

अल्लाह पाक के करम से मजलिस की मीटिंग के बाद इस पर काम शुरू हुआ और देखते ही देखते 10 Sep 2025 को **लकी ड्रॉ अक्टूबर 2025** के नाम से पहला इनामी क़दम उठाया गया जिसमें येह ऐलान किया गया कि

तक़रीबन 1,000 रुपये की किताबें सिर्फ 600 रुपये में दी जा रही हैं और इस तरह के 600 Packet बनाए गए हैं और 600 Packet को ख़रीदने वालों के नाम की पर्ची बनाई जाएगी फिर 1 Oct 2025 को उनके नाम की पर्ची की क़ुरआ अंदाज़ी की जाएगी यानी Lucky Draw निकाला जाएगा और जिसका नाम निकलेगा उस को मदीने का टिकट यानी उमरे का Package दिया जाएगा और जो उमरे पर नहीं जाना चाहता उसे 80,000 रुपये दिए जाऐंगे।

इस ऐलान को सुनते ही एक धूम पड़ गई और 30 Sep 2025 तक इन किताबों की ख़रीदारी का सिल्सिला जारी रहा। और 1 Oct 2025 को महफ़िले मदीना मुन्अक़िद की गई जिसमें इस लकी ड्रॉ का मक़सद, किताबों का तआरुफ़, दीन की ख़िदमत करने के उन्वान से बयान हुआ और ख़रीदने वालों के नाम का क़ुरआ डाला गया यानी Lucky Draw किया गया और

जिसका नाम निकला उस को मदीने का टिकट दिया गया इस Lucky Draw में जिसका नाम निकला उन का नाम पता येह है

अमान बिन शाने इलाही आगरा

अल्लाह पाक के करम से इस काविश की काफ़ी पज़ीराई हुई और इस्लामी भाईयों की जानिब से काफ़ी पैग़ामात आए कि इस तरह का दूसरा सिल्सिला कब शुरू होगा ?

दीन सीखो इनाम पाओ का तआरुफ़

अब इस सिल्सिले को मज़ीद आगे बढ़ाते हुए हमारे **'मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा'** की टीम ने **दीन सीखो इनाम पाओ** इनामी ऑफ़र के नाम से येह ऐलान किया है कि:

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इश्क़ से लबरेज़ किताब **'आँखों का तारा नामे मुहम्मद'** का हदिया 170 रुपये और **'दीने इस्लाम की खूबियाँ'** का हदिया 80 रुपये, यूं दोनों किताबों का कुल हदिया 250 रुपये हुए लेकिन ऑफ़र में आगरा वालों के लिए **सिर्फ 100 रुपये में** और आगरा के इलावा दीगर इलाक़े वालों के लिए **115 रुपये में** दी जाएंगी। और इस के ख़रीदने वालों को **19 इनाम** दिए जाऐंगे यानी पहली पर्ची वाले को **मदीने का टिकट** और बाक़ी 18 पर्ची वालों को मक्का शरीफ़ और मदीना शरीफ़ नीज़ बग़दाद शरीफ़, अजमेर शरीफ़ और बरेली शरीफ़ के **तबर्रुकात के साथ दूसरे तोहफ़े** पेश किए जाऐंगे ।

हमारा साथ दें

अब इस में आप से अर्ज़ है कि इस को ख़ुद भी खरीदें और दूसरों को ख़रीदने का ज़ेहन बनाएं। नीज़ अपने मरहूमीन के इसाले सवाब के लिए, अपने दीन की तालीम और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत को आम करने और घर घर पहुंचाने के लिए **12 किताबें, 25 किताबें, 50 किताबें, 100 किताबें** अपनी हैसियत के मुताबिक़ **तक़सीम करवायें** और इस नेक काम में हमारा साथ देकर सवाब कमाएं। अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ है कि अल्लाह पाक हमें दीन की ख़ूब ख़ूब ख़िदमत करते रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। तमाम मुस्लमानों की ख़ैर फ़रमाए। हरमैन शरीफ़ैन की हाज़िरी से मुशर्रफ़ फ़रमाए। ईमान की ज़िंदगी और ईमान पर ख़ातिमा नसीब फ़रमाए। हमारे दीन, ईमान, अक़ाइद की हिफ़ाज़त फ़रमाए। अमीन

कहते रहते हैं दुआ के वास्ते बंदे तेरे
कर दे पूरी आरज़ू हर बेकसो मजबूर की

मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफीक़ खान अत्तारी मदनी फतहेपुरी की किताबों को डाउन लोड करने का QR कोड



मुसन्निफ़ का तआरुफ़

नाम और निस्बत

नाम मुहम्मद शफीक़ खान,वालिद का नाम मुहम्मद शरीफ खान है, सिल्सिला क़ादरिया रज़विया अ़त्तारिया में शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिए दा'वते इस्लामी, हज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल, मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादरी रज़वी से 2004 ईसवी में बैअ़त होने की वजह से अपने नाम के साथ अ़त्तारी लिखते है, आपकी विलादत क़स्बा ललौली जिला फतेहपुर हंसवा, सूबा यू पी, हिंद में हुई, आप की तारीखे पैदाइश 10 जून 1986 ईसवी है।

दीनी माहौल से वाबस्तगी और सफ़रे इल्म

हज़रत ने इब्तिदाअन हिंदी इंग्लिश की ता'लीम हासिल करके सन 2000 ईस्वी में ऐ. सी. का काम सीखने और करने के लिये बम्बई चले गये थे और वहां पर 4 साल क़ियाम किया फिर 2004 ईस्वी में अपने वतन लौटे और वतन में ही उन्हें दा’वते इस्लामी का दीनी माहौ़ल मिला, दा’वते इस्लामी के दीनी माहौल से वाबस्ता होने के बाद मुख्तलिफ कोर्सेज़ किये और 2006 ईस्वी में अपने ही इलाके के दारुल उ़लूम बनाम जामिया अ़रबिया गुलशने मा'सूम कस्बा ललौली में क़ारी इक़्बाल अ़हमद अ़त्तारी से क़ुरआ़ने पाक नाज़िरा और ह़ज़रत मौलाना अ़तीक़ुर्रह़मान मिस्बाही से दर्से निज़ामी के दरजए ऊला और कुछ दरजाए सानिया की किताबें पढ़ीं, इसके बाद मज़ीद ता’लीम हासिल करने के लिये चिरैयाकोट जिला मऊ तशरीफ ले गये और वहां दरजए सानिया मुकम्मल करने के बाद अहले सुन्नत के अ़ज़ीम इ़ल्मी इदारे अल जामिअ़तुल अशरफिया मुबारकपुर आ’ज़मगढ़ में मतलूबा दरजए सालिसा का टेस्ट दिया और अल्लाह पाक

के फ़ज़्ल से कामयाब होने के बाद दरजए सालिसा की तालीम वहीं हासिल की, फिर दरजए राबिआ दारुल उ़लूम ग़ौसिया (जो जिला आ'ज़मगढ़ के गाँव सरय्या में वाक़ेअ़ है) में मुकम्मल की, फिर उसके बाद दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना, फैज़ाने अ़त्तार नेपालगंज,नेपाल में दाखिला लिया और दरजए खामिसा से दौरए ह़दीस तक की ता'लीम वहीं मुकम्मल फरमाई।

तदरीसो तसनीफ़ की शुरुआत

2014 में फराग़त के बाद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर,आगरा तशरीफ ले गये और एक साल वहां तदरीस फरमाई, फिर मज़ीद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी मरकज़ के हुक्म पर बंगलादेश के दारुल हुकूमत ढाका के जामिअ़तुल मदीना तशरीफ ले गये और वहीं पर दा'वते इस्लामी के जामिआ़त के दरजए सानिया में चलने वाली इ़ल्मे सर्फ की किताब बनाम मराहुल अरवाह की उर्दू शरह़ शाफ़िकुल मिस्बाह और दरजए राबिअ़ा में चलने वाली इ़ल्मे नहव की किताब बनाम शरह जामी की उर्दू शरह़ अश शफीकुन नोअमानी तसनीफ फरमाई।

उसके बाद फिर जामिअ़तुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर आगरा तशरीफ लाकर दरजए सानिया में चलने वाली ह़दीस की किताब बनाम अल अरबईने नवाविय्या की उर्दू शरह़ शफ़ीकिया तह़रीर फरमाई, और तब से अब तक तस्नीफात का सिल्सिला जारी है। आखिरी मालूमात के मुताबिक अब तक कुल 50 से ज़ाइद किताबें तसनीफ़ हो चुकी हैं।

खिलाफ़तो इजाज़त

25 अप्रैल 2024 ईसवी को शागिर्दे हाफिज़े मिल्लत, मुरीदे मुफ़्तिए आज़म हिन्द, खलिफ़ए बुरहाने मिल्लत, मुबल्लिगे इस्लाम, हज़रत अल्लामा मौलाना अब्दुल मुबीन नोअमानी ने सिलसिलए कादरिया, रज़्विया की खिलाफ़तो इजाज़त से नवाज़ा।

खिदमते दीन

हज़रत जिस तरह एक मुदर्रिस और मुसन्निफ़ हैं उसी तरह मुक़र्रिर और मुबल्लिग भी हैं। आप के इस्लाही बयानात खौफे खुदा व इश्क़े मुस्तफा से लबरेज़ होते हैं। सुनने वालों पर रिक्कत तारी होती और दीन से मुहब्बत नसीब होती है। मज़ीद वक़्तन फ़वक़्तन मुख्तलिफ़ दीनी तहरीकें भी चलाते रहते हैं। अभी हाल ही में {दीन सीखो और इनाम पाओ} के नाम से घर घर दीनी तालीम पहुँचाने की तहरीक शुरू फरमाई है। अल्लाह पाक हज़रत की इस कोशिश को अपनी बारगाह में क़बूल फरमा कर तरक्की अता फरमाये। अमीन

अल्लाह पाक से दुआ है कि मौसूफ को बे बहा बरकातो समरात से नवाज़े और इस कारहाए नुमाया को अपनी बारगाह में शर्फे क़बूलियत अ़ता करके मौसूफ के लिये तोशए आखिरत बनाए। आमीन

अज़ : अल आजिज़ मुहम्मद शादाब खान मदनी कोटा राजस्थान

आँखों का तारा नामे मुहम्मद

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اللَّطِيْفِ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِهِ الشَّفِيْقِ

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ

وَعَلٰی اٰلِكَ وَ اَصْحَابِكَ يَا حَبِيْبَ اللهِ

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللهِ

وَعَلٰی اٰلِكَ وَ اَصْحَابِكَ يَا نُوْرَ اللهِ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللهِ۔ (پ۲٦، الفتح ۲۹)

صَدَقَ اللهُ وَ صَدَقَ رَسُوْلُ اللهِ عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَ سَلَّم

दुरूद शरीफ़ की अनोखी फ़ज़ीलत

मेरे शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत,बानिये दावते इस्लामी, हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादरी रज़वी ज़ियाई ज़ीदा मज्दुहू अपने रिसाले 'ज़ियाए दुरूदो सलाम' के सफ़ा नंबर 3 पर हदीसे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं :

مَنْ صَلّٰى عَلَيَّ فِيْ يَوْمٍ خَمْسِيْنَ مَرَّةً صَافَحْتُهٗ يَوْمَ الْقِيَامَةِ۔

तर्जमा : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दरूदे पाक पढ़ेगा, क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़हा करूँगा यानी हाथ मिलाऊंगा।

(القربۃ الی رب العالمین لابن بشکوال، ص ۹۰، حدیث ۹۰)

ऐ आशिक़ाने रसूल! दरूदे पाक की येह फ़ज़ीलत आपने पहले भी कई बार सुनी होगी लेकिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस फ़रमान में जो राज़, हिक्मत और फ़लसफ़ा पोशीदा है यानी छुपा हुआ है शायद उस की जानिब आपकी तवज्जोह नहीं गई होगी, आज इंशाअल्लाह आपके सामने वो राज़ और हिक्मत व फ़लसफ़ा बयान करता हूँ।

हदीस पर तीन सवाल

इस हदीसे पाक पर तीन सवाल होते हैं:

(1) पहला सवाल : क़ियामत के दिन हज़रते आदम अलैहिस्सलाम से लेकर क़ियामत तक पैदा होने वाले तमाम मर्द व औरत, मुस्लिमीन व काफ़िरीन सब जमा होंगे हर तरफ़ भीड़ ही भीड़ होगी, दहशत का माहौल होगा, गर्मी की शिद्दत होगी, सूरज सवा मील पर आकर आग बरसा रहा होगा, गर्मी की वजह से लोगों के दिमाग़ खोल रहे होंगे, हर कोई नफ़्सी नफ़्सी पुकार रहा होगा, ऐसे होश रुबा यानी होश उड़ा देने वाले माहौल में हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कैसे और कहाँ तलाश करेंगे ? जबकि वहाँ एक क़दम चलना मुश्किल होगा।

(2) दूसरा सवाल : चलो अगर मान लें कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तलाश करने में कामयाब हो गए, लेकिन इतनी भीड़ भाड़ में पूरा मुसाफ़हा कैसे हो पाएगा ? वहाँ तो करोड़ों आशिक़ जमा होंगे, हर एक की ख्वाहिश होगी कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझसे मुसाफ़हा करें।

(3) तीसरा सवाल : अगर हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तलाश करने में कामयाब हो गए, और मुसाफ़हा करने का नंबर

भी आ गया, लेकिन क्या अजब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुसाफ़हा करने से मना फ़रमा दें, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कैसे पता चलेगा कि मैं दुनिया में 50 बार दरूदे पाक पढ़ने वाला हूँ ?

पहले सवाल का जवाब

ऐ आशिक़ाने रसूल! आपको जान कर बहुत ख़ुशी होगी कि हमारे नबी, अल्लाह पाक के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन सवालों के जवाबात चौदह सौ साल पहले सिर्फ एक लफ़्ज़ में दे दिये और वो लफ़्ज़ 'صَافَحْتُهُ' है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : **{मैं मुसाफ़हा करूँगा}** लिहाज़ा क़ियामत की भीड़ में हमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तलाश करने की ज़रूरत ही नहीं है क्योंकि मुसाफ़हा करने वाला जिस से मुसाफ़हा करना चाहता है उसे ख़ुद तलाश कर लेता है, लिहाज़ा क़ियामत में हम कहीं भी हों हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमें ख़ुद तलाश कर लेंगे कि फ़रमाया 'صَافَحْتُهُ' 'मैं ख़ुद मुसाफ़हा करूँगा'।

दूसरे सवाल का जवाब

दूसरे सवाल का जवाब येह है कि हमें इस बात की टेंशन लेने की ज़रूरत ही नहीं है कि पूरा मुसाफ़हा और अच्छे से मुसाफ़हा कैसे हो पाएगा? क्यों ? क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुद फ़रमाया 'صَافَحْتُهُ' (मै ख़ुद उस से मुसाफ़हा करूँगा), और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मुसाफ़हा करते हैं तो पूरा मुसाफ़हा करते हैं और जब तक सामने वाला अपना हाथ नहीं खींचता हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपना हाथ मुबारक नहीं खींचते जैसा की तिर्मिज़ी शरीफ़ की हदीस में है :

हज़रत अनस रज़ी अल्लाहु अनहु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब किसी शख़्स से मुसाफ़हा करते थे तो अपना हाथ ना खेंचते यहां तक कि वो ही अपना हाथ खींचता था, और आप अपना मुँह उस के मुँह से नहीं फेरते थे ह़त्ता कि वो ही मुँह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चेहरे से फेरता ।(مراۃ المناجیح شرح مشکوۃ المصابیح،ج۸،ص۸۳)

लिहाज़ा क़ियामत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूरा मुसाफ़हा होगा। इंशा अल्लाह

तीसरे सवाल का जवाब

और तीसरा सवाल था कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कैसे पता चलेगा कि मैं दुनिया में 50 बार दुरूदे पाक पढ़ने वाला हूँ ? तो इस का जवाब येह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुद फ़रमाया 'صَافَحْتُہٗ' (मैं उस से मुसाफ़हा करूँगा) यानी मुझे इल्म है कि कौन मुझ पर दुरूद पढ़ने वाला है, अल्लाह पाक की अता से हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सब कुछ जानते हैं, इमामे इश्क़ो मुहब्बत आ'ला हज़रत अलैहि रहमा ने इसी लिए तो फ़रमाया :

और कोई ग़ैब क्या तुमसे निहां हो भला
जब ना ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोड़ों दुरूद

एक और सवाल

ऐ आशिक़ाने रसूल! तीनों सवालात के जवाबात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सिर्फ एक लफ़्ज़ में मिल गए, लेकिन यहां पर एक और सवाल हो सकता है और वो येह कि

क़ियामत की गर्मी और दहशत में मुसाफ़हा कौन करेगा ? क्योंकि जब कोई बड़ी मुसीबत आती है तो लोग उस से बचने की तदबीर करते हैं

और इस मुसीबत वाले माहौल में कोई मुसाफ़ह़ा करना भी चाहे तो लोग मुसाफ़ह़ा नहीं करते बल्कि कहते हैं ज़िंदगी रही तो मुसाफ़ह़ा बाद में करेंगे अभी तो इस मुसीबत से बचने का कोई सामान कीजिए।

ऐसे ही क़ियामत के दिन हर कोई परेशान होगा, मुसीबत में गिरफ़्तार होगा, नजात के रास्ते तलाश करता होगा, ऐसे होशरुबा माहौल में कौन किस से मुसाफ़ह़ा करेगा और मुसाफ़ह़ा करने से क्या मिलेगा ? जो मुसाफ़ह़ा किया जाये।

इसी तरह एक सवाल येह भी होता है कि अल्लाह पाक के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुरूदे पाक पढ़ने वाले से क़ियामत के दिन मुसाफ़ह़ा करेंगे, दुनिया में क्यों नहीं ? क़ियामत में मुसाफ़ह़ा करने से क्या मिलेगा ? अगर दुनिया में मुसाफ़ह़ा करते तो हमारे लिए शर्फ़ का बाइस होता, नबी की बरकतें मिलतीं, हम लोगों को कहते फिरते कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुसाफ़ह़ा किया है, लेकिन क़ियामत में किस को बताएँगे ? वहां तो हर तरफ़ दहशत ही दहशत होगी।

इस सवाल का जवाब

ऐ आशिक़ाने रसूल ! मुआमला तो ऐसा ही है कि मुसीबत के वक़्त कोई मुसाफ़ह़ा नहीं करता बल्कि मुसीबत से बचने का सामान करता है मगर क़ियामत के दिन मुसाफ़ह़ा करने को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है और येह मुसाफ़ह़ा करना दुरूदे पाक के बदले बतौरे इनआ़म के है और इनआ़म, इनआ़म होता है, इस मुसाफ़ह़ा करने की हिक्मत अगरचे हमारे समझ में नहीं आती लेकिन इस मुसाफ़ह़ा करने में ही क़ियामत की मुसीबतों से नजात पाने का राज़ छुपा हुआ है, और वो राज़ येह है कि :

एक दफ़ा हज़रते अनस बिन मालिक रज़ी अल्लाहु अनहु के घर एक शख़्स मेहमान बन कर आया, उस शख़्स का बयान है कि हज़रते अनस रज़ी अल्लाहु अनहु का दस्तरख़्वान चिकनाई वग़ैरा की वजह से मैला हो गया, आप रज़ी अल्लाहु अनहु अपनी लौंडी को हुक्म दिया कि इस दस्तरख़्वान को तन्दूर की आग में डाल दो, मै हैरान हुआ और दस्तरख़्वान के जलने का इंतिज़ार करने लगा, कुछ देर बाद उस दस्तरख़्वान को तन्दूर से निकाला गया तो उस का मैल कुचैल सब ख़त्म हो चुका था, और वो निखर कर साफ़ सुथरा हो चुका था, हज़रते अनस रज़ी अल्लाहु अनहु से जब इस बारे में पूछा गया कि येह दस्तरख़्वान तन्दूर की आग में जला क्यों नहीं ? तो आप रज़ी अल्लाहु अनहु ने फ़रमाया एक मर्तबा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस दस्तरख़्वान से अपना हाथ और मुँह पोंछा था जिसकी वजह से इस पर आग असर नहीं करती ।(مثنوی مولانا روم، مترجم، دفتر، سوم، ص۵۸)(خصائص الکبریٰ، ج، ۲، ص۱۳۴)

अल्लाहु अकबर! ऐ आशिक़ाने रसूल! शायद अब आपको क़ियामत में मुसाफ़हा करने की हिक्मत समझ में आ गई होगी, अगर नहीं आई तो सुनिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़ियामत के दिन मुसाफ़हा करके अपने उस आशिक़ को जहन्नम की आग से बचाना चाहते हैं कि जब वो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुसाफ़हा करेगा तो उस का हाथ, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथ मुबारक से मस यानी टच होगा और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथ या जिस्म मुबारक से जो चीज़ छू जाती है उस को ना दुनिया की आग जला सकती है और ना जहन्नम की आग, लिहाज़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूदे पाक पढ़ने वाला दुरूदे पाक की बरकत से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से क़ियामत में मुसाफ़हा करेगा और मुसाफ़हा करने की बरकत से जहन्नम की आग से बच जाएगा।

डर था कि इस्याँ की सज़ा, अब होगी या रोज़े जज़ा
दी उनकी रहमत ने सदा, येह भी नहीं वो भी नहीं

और रही येह बात कि क़ियामत में ही क्यों मुसाफ़ह़ा फ़रमाएँगे ? तो इस का जवाब येह है कि क़ियामत आख़िरत है और आख़िरत दुनिया से अफ़ज़ल और बेहतर है इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बेहतर जगह में अपने आशिक़ से मुसाफ़ह़ा करेंगे, लिहाज़ा नीयत कीजिए कि इंशा अल्लाह रोज़ाना पचास बार दरूदे पाक ज़रूर पढ़ेंगे।

दुरुदे पाक पढ़ लीजिए

सल्लल्लाहु अला मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

पढ़ कर के देखें दीं की हकीकत किताब में

पढ़ कर के देखें दीं की हकीकत किताब में
लिखी है कैसी कैसी हिदायत किताब में

अख्लाक में भी आएगी उल्फत की बू तुझे
पढ़ ले अगर नज़र से मोहब्बत किताब में

चुन चुन के फूल लाए हैं उम्मत के वास्ते
कुरआं हदीस की है इबारत किताब में

जो ढूँढता है राहते क़ल्बो जिगर सुनो
मिल जाएगी उसे भी सुकूनत किताब में

तालीम का वो नूर ज़हानत की रौशनी
मौजूद है वो सारी ही हिकमत किताब में

तुमको तो सिर्फ पढ़ने की फुर्सत भी है कहां
लगती है कितनी खून की मेहनत किताब में

बेखुद हर एक नुकते को आसान कर दिया
हज़रत शफीक की है येह खिदमत किताब में

शायर : वसीम बेखुद माण्डलवी राजस्थान

मुहम्मद ﷺ मज़हरे कामिल हैं

ऐ आशिक़ाने रसूल ! हमारे नबी, अल्लाह पाक के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान बहुत बुलंद व बाला है, हमारे आला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, हज़रते अल्लामा मौलाना अल्हाज अल हाफ़िज़ अलक़ारी अश्शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान علیہ الرحمہ अपने नाअतिया दीवान बनाम 'हदाइक़े बख़शिश' मे लिखते हैं:

मुहम्मद मज़हरे कामिल है हक़ की शाने इज़्ज़त का
नज़र आता है इस कसरत में कुछ अंदाज़ वहदत का

मा'ना : "मज़हर' का मा'ना 'ज़ाहिर होने की जगह' है, "हक़' से मुराद" अल्लाह पाक है, 'इज़्ज़त' का मा'ना 'मक़ाम व मर्तबा' है।

शेअर की तशरीह : हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह पाक की अज़मतो शान और मक़ामो मर्तबे के मज़हरे कामिल (यानी मुकम्मल ज़ाहिर होने की जगह) हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ात में अल्लाह पाक के जल्वे नज़र आते हैं जिसका बयान क़ुरआने पाक में मौजूद है।

मज़हरे हक़ हो तुम्हीं, मुज़हिरे हक़ हो तुम्हीं
तुम में है ज़ाहिर ख़ुदा तुम पे करोड़ों दुरूद

तशरीह : आला हज़रत अलैहि रहमा इस शेअर में अर्ज़ करते हैं ऐ मेरे नूर वाले आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अल्लाह पाक की शानें ज़ाहिर होती हैं और आप अल्लाह पाक की अज़्मतों को ज़ाहिर फ़रमा कर हक़ और बातिल में फ़र्क़ करने वाले हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चेहरए अनवर से अल्लाह पाक का जलाल व जमाल ज़ाहिर होता है, अल्लाह पाक आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मज़ीद

बुलंदियां अता फ़रमाए और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अपनी करोड़ों रहमतें नाज़िल फ़रमाए। आमीन

ऐ आशिक़ाने रसूल! इन दो शेअरों से आपको अंदाज़ा हो गया होगा कि अल्लाह पाक ने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कितना बड़ा मक़ाम व मर्तबा अता फ़रमाया, इसी तरह अल्लाह पाक ने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नामे मुबारक को भी उलुव्वे शान यानी बड़ी शान से नवाज़ा है, सगे अत्तार की किताब **"मुह़म्मद और अह़मद के राज़"** का मुतालआ कीजिए इंशाअल्लाह इस किताब को पढ़ कर आपको यक़ीन हो जाएगा कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नामे मुबारक आम नाम नहीं है, बल्कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नामे मुबारक **'मुह़म्मद'** अल्लाह पाक के नाम **'अल्लाह'** का मज़हर है। पस जिस तरह अल्लाह पाक का नाम बरकत वाला रहमत वाला इसी तरह हमारे नबी का नाम भी बरकत वाला रहमत और आशिकाने रसूल की आँखों का तारा है इसी लिये तो हम गुनगुनाते हैं :

आँखों का तारा नामे मुहम्मद
दिल का उजाला नामे मुहम्मद

अल्लाह पाक के तीन हज़ार नाम

ऐ आशिक़ाने रसूल ! यूं तो अल्लाह पाक के तीन हज़ार नाम हैं, एक हज़ार नाम फ़रिश्तों को बताए गए, एक हज़ार नाम अंबियाए किराम अलैहिस्सलाम को बताए गए, और तीन सौ नाम तौरात में हैं, तीन सौ नाम ज़बूर में हैं, और तीन सौ नाम इंजील में, येह कुल दो हज़ार नौ सौ नाम हुए, और 99 नाम क़ुरआने मजीद फुरकाने हमीद में बयान हुए हैं, अब कुल नाम 2999 हुए, और एक नाम वो है जिसको सिर्फ़ अल्लाह पाक ही जानता है।

(تفسیر نعیمی جلد اول ص ۴۱)

अल्लाह पाक के मशहूर व मा’रूफ़ नाम

लेकिन अल्लाह पाक के तीन हज़ार नामों में से मशहूर व मा’रूफ़ नाम 99 हैं, जो कि क़ुरआने अज़ीम के दामन में मौजूद हैं, और उन तमाम नामों में लफ़्ज़े "अल्लाह" हक़ तआला का ज़ाती नाम है, और बाक़ी नाम सिफ़ाती हैं।

ज़ाती नाम उसे कहते हैं जो कि सिर्फ ज़ात को बताए, और सिफ़ाती नाम वो कहलाते हैं जो कि ज़ात के साथ साथ सिफ़त (ख़ूबी) की तरफ़ भी इशारा करें।

हुज़ूर ﷺ के चौदह सौ नाम

इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अस्माए सिफ़ात(यानी सिफ़ाती नाम) बे गिनत हैं, अल्लामा अहमद ख़तीब क़स्तलानी अलैहि रहमा ने पाँच सौ जमा फ़रमाए।

(المواہب اللدنیہ، الفصل الاول فی ذکر اسمائہ الشریفۃ ...الخ، ۱ | ۳۶۶ملخصًا)

सीरते शामी में तीन सौ और इज़ाफ़ा किए और आला हज़रत अलैहि रहमा का क़ौल मलफ़ूज़ाते आला हज़रत में लिखा है, आला हज़रत अलैहि रहमा फ़रमाते हैं : 'मैंने छः सौ और मिलाए, कुल चौदह सौ हुए और हुज़ूर के अस्मा (नाम) हर तबक़े में मुख़्तलिफ़ हैं और हर हर जिन्स में जुदागाना हैं, दरिया में और नाम हैं, पहाड़ों में और'। (ملفوظاتِ اعلیٰ حضرت، ص۹۲)

लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मशहूर व मारूफ़ नाम 99 हैं, और उनमें से ज़ाती नाम सिर्फ दो हैं, आसमानों में "अहमद और ज़मीन में 'मुहम्मद' सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

मुहब्बत और इश्क़ में फ़र्क़

ऐ आशिक़ाने रसूल! दिल अगर किसी की जानिब माइल हो जाए तो उसे मुहब्बत कहा जाता है और यही मुहब्बत अगर शिद्दत इख़्तियार कर ले तो इश्क़ कहलाती है, इश्क़ दो तरह का होता है :

(1) मजाज़ी इश्क़ : यानी इन्सानों का इन्सानों से इश्क़।

(2) हक़ीक़ी इश्क़ यानी अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत।

मजाज़ी इश्क़ और हक़ीक़ी इश्क़ में फ़र्क़

(1) मजाज़ी इश्क़ बंदे को अक्सर दोज़ख़ के रास्ते पर ले जाता है, जबकि हक़ीक़ी इश्क़ बंदे को जन्नत के रास्ते पर चलाता है।

(2) मजाज़ी इश्क़ बंदे को तबाह व बर्बाद करता है और हक़ीक़ी इश्क़ बंदे को शादो आबाद करता है।

(3) हक़ीक़ी इश्क़ में बड़ी क़ुव्वत होती है, कि हक़ीक़ी इश्क़ रखने वाला कभी सख़्त तूफ़ान का सामना करता, कभी फ़िरऔन का मुक़ाबला करता, कभी अल्लाह पाक के हुक्म पर क़ुर्बानी के लिए सर रख देता और कभी बे ख़तर हो कर आग में कूद पड़ता है जबकि मजाज़ी इश्क़ वाला अपना फ़ायदा हासिल करने और अपना उल्लू सीधा करने की ताक में रहता है।

(4) हक़ीक़ी इश्क़ से दोनों जहान में सुर्ख़ुरूई हासिल होती है जबकि मजाज़ी इश्क़ से दोनों जहान में रुस्वाई मिलती है।

(5) हक़ीक़ी इश्क़ वाला हमेशा कामयाब होता है जबकि मजाज़ी इश्क़ वाला हमेशा परेशान और नाकाम होता है।

(6) हक़ीक़ी इश्क़ वाला इज़्ज़त पाता है जबकि मजाज़ी इश्क़ वाला बदनामी का हक़दार होता है।

(7) हक़ीक़ी इश्क़ वाला मर कर भी ज़िंदा रहता है जबकि मजाज़ी इश्क़ वाला ज़िंदा रह कर जीते जी मर जाता है।

(8) मजाज़ी इश्क़ करने वाला अपने महबूब के दूसरे आशिक़ों से नफ़रत करता है और वो चाहता है कि मेरा महबूब मेरे इलावा किसी से मुहब्बत ना करे और मेरे इलावा उस का कोई आशिक़ ना हो जबकि हक़ीक़ी इश्क़ वाला अपने महबूब के दूसरे आशिक़ों से मुहब्बत करता है और वो चाहता है कि मेरा महबूब सबसे मुहब्बत करे और सारी दुनिया मेरे महबूब की आशिक़ हो जाये।

बे ख़तर कूद पड़ा आतिशे नमरूद में इश्क़
अक़्ल है महवे तमाशाए लबे बाम अभी

हक़ीक़ी इश्क़ के समरात

ऐ आशिक़ाने रसूल! हक़ीक़ी इश्क़ से मुराद अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कामिल मुहब्बत है, और अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत की दौलत जिसके दिल के खज़ाने में जमा हो जाती है उसे ख़त्म होने वाली दुनिया से बेगाना कर देती है, वो हर वक़्त अपने हक़ीक़ी महबूब के तसव्वुर और जलवो में गुम रहता है और मुहब्बत और मारिफ़त की लज़्ज़त में खो कर दुनिया से किनारा कश हो जाता है, फिर वो अपने महबूब की सुनता, अपने महबूब की मानता और उसी की चाहत पर चलता है, अपने महबूब की अदाओं को अपना कर अपनी ज़िंदगी गुज़ारता यहां तक कि अपने महबूब के नाम पर जान तक क़ुर्बान कर देता है।

हक़ीक़ी इश्क़ वाला अपने महबूब के बारे में कुछ यूँ कहता है :

तेरे नाम पर सर को क़ुर्बान कर के
तेरे सर से सदक़ा उतारा करूँ मैं
येह इक जान क्या है अगर हों करोड़ों
तेरे नाम पर सबको वारा करूँ मैं

ईमाने कामिल की बुनियाद

ऐ आशिक़ाने रसूल! हर मुसलमान पर लाज़िम व ज़रूरी है कि वो अपने अल्लाह पाक से मुहब्बत करे, उस के बताए हुए अहकामात पर चले, क्योंकि वही हम सब का ख़ालिक़ और मालिक है यानी हमें पैदा करने वाला और हमारी हर चीज़ का मालिक है, फिर अल्लाह पाक की मुहब्बत के बाद सबसे बड़ी नेअमत अल्लाह पाक के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत है, और हक़ीक़त येह है कि अल्लाह पाक के रसूल ﷺ की मुहब्बत के बिग़ैर बंदए मोमिन का गुज़ारा हो ही नहीं सकता, मोमिन तभी कामिल मोमिन होता है जब वो अपने माँ बाप, आल, औलाद, अपनी जान और सारी कायनात से बढ़कर अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुहब्बत करे, और इस का हुक्म ख़ुद हमारे अल्लाह पाक ने हमें क़ुरआने पाक में दिया है।

चुनांचे पारा 10 सूरए तौबा की आयत नंबर 24 में अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَ اَبْنَآؤُكُمْ وَ اِخْوَانُكُمْ وَ اَزْوَاجُكُمْ وَ عَشِیْرَتُكُمْ وَ اَمْوَالُ ﰳ

اقْتَرَفْتُمُوْهَا وَ تِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَ مَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَاۤ اَحَبَّ اِلَیْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ

وَرَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ فِیْ سَبِیْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰی یَاْتِیَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ

الْفٰسِقِیْنَ ﴿۲۴﴾ (پ۱۰، التوبۃ:۲۴)

तर्जमए कंज़ुल ईमान: तुम फ़रमाओ अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी औरतें और तुम्हारा कुम्बा और तुम्हारी कमाई के माल और वो सौदा जिसके नुक़्सान का तुम्हें डर है, और तुम्हारे पसंद के मकान येह चीज़ें अल्लाह और उस के रसूल और उस की राह में लड़ने से ज़्यादा प्यारी हों तो रास्ता देखो यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्म लाए और अल्लाह फ़ासिक़ों को राह नहीं देता।

ऐ आशिक़ाने रसूल! इन्सान के अंदर वालिदैन, औलाद, भाई, बीवी, ख़ानदान और माल, तिजारत और मकान इन सब चीज़ों से मुहब्बत फ़ित्री चीज़ है, लेकिन अल्लाह पाक अपने बंदों को आगाह फ़रमाता है कि अगर तुम्हारे अन्दर इन सब चीज़ों की मुहब्बत मेरी और मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत से बढ़ जाये तो तुम गोया ख़तरे की हद में दाख़िल हो चुके हो और बहुत जल्द तुमको मेरा ग़ज़ब व अज़ाब अपनी लपेट में ले लेगा, इस से पता चलता है कि एक मोमिन के लिए अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुहब्बत ना सिर्फ येह कि फ़र्ज़ है बल्कि सबसे क़रीबी रिश्तेदारों और सबसे क़ीमती सामान पर मुक़द्दम यानी पहले है।

और हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी इस बारे में फ़रमाया चुनांचे बुख़ारी शरीफ़ की हदीस है :

لَا یُؤْمِنُ اَحَدُکُمْ حَتّٰی اَکُوْنَ اَحَبَّ اِلَیْهِ مِنْ وَّالِدِهٖ وَوَلَدِهٖ وَالنَّاسِ اَجْمَعِیْنَ ۔

तर्जमा : तुम में का कोई उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उस के नज़दीक उस के वालिद, औलाद और तमाम लोगों से महबूब ना हो जाऊं ।(صحیح البخاری،کتاب الایمان،باب حب الرسول.....الخ،الحدیث:۱۵،ج۱،ص۱۷)

नबी ﷺ से मुहब्बत करने की मिसाल

ऐ आशिक़ाने रसूल! क़ुरआन की आयत और बुख़ारी शरीफ़ की हदीस को पढ़ कर शायद आपके दिल में येह बात आ रही हो कि हमें अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कैसी मुहब्बत होनी चाहिए ? लिहाज़ा इस बारे में आपके सामने एक मिसाल पेश करता हूँ जिसको पढ़ कर इस बात का अंदाज़ा बहुत अच्छे तरीक़े से लगाया जा सकता है कि नबी ﷺ से मुहब्बत कैसी होनी चाहिए चुनांचे बुख़ारी शरीफ़ की हदीस है :

एक रोज़ हज़रत उमर फ़ारुके आज़म रज़ी अल्लाहु अनहु ने अल्लाह पाक के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप मेरी जान के इलावा हर चीज़ से ज़्यादा महबूब हैं, तो अल्लाह पाक के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: 'उस की क़सम जिसके क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है तुम में से कोई (कामिल) मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उस के नज़्दीक उस की जान से भी ज़्यादा महबूब ना हो जाऊं", येह सुनकर हज़रत उमर फ़ारुके आज़म रज़ी अल्लाहु अनहु ने अर्ज़ किया: "उस ज़ात की क़सम जिसने आप पर किताब नाज़िल फ़रमाई आप मेरी जान से भी ज़्यादा महबूब हैं", इस पर अल्लाह पाक के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : हाँ ! अब ! ऐ उमर ! (यानी ऐ उमर अब तुम कामिल मोमिन हो)

(صحیح البخاری،کتاب الایمان والنذور،باب کیف کانت.....الخ،الحدیث:۶۶۳۲،ج۴،ص۲۸۳)

ऐ आशिक़ाने रसूल! जिस भी दौर में मुसलमानों ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हद दर्जा की मुहब्बत की वो उस दौर में कामयाब रहे और जिस दौर में मुसलमानों ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुहब्बत करने में कमी की उस दौर में वो नाकाम रहे, येह बात किसी से ढकी छुपी नहीं है बल्कि हर अक़्ल रखने वाला और थोड़ी बहुत दीन की समझ बूझ रखने वाला इस बात को जानता है। आईए आपके सामने कुछ इश्क़े रसूल ﷺ के फ़ायदे बयान करता हूँ चुनांचे :

इश्क़े रसूल के फ़वाइद

ऐ आशिक़ाने रसूल! अल्लाह पाक के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुहब्बत करने को इश्क़े रसूल कहते हैं और इश्क़े रसूल जब कामिल हो जाता है तो इश्क़े रसूल क्या करता है ? हज़रत मौलाना सूफ़ी मुहम्मद अकरम रज़वी अलैहि रहमा की ज़बानी सुनिए : इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अगर पूरे तौर पर दिल में जागुज़ीं हो यानी पैवस्त हो जाये तो इत्तिबाए रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यानी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी का ज़ुहूर होता, अल्लाह पाक के अहकामात पर अमल करने और सीरते नबवी की पैरवी आशिक़ के रग रग में समा जाती है, दिल व दिमाग़ और जिस्म व रूह पर किताब व सुन्नत की हुकूमत क़ाइम हो जाती है, मुसलमान की मुआशरत सँवर जाती है, आख़िरत निखर जाती है, तहज़ीब व सक़ाफ़त के जल्वे बिखर जाते हैं और कमज़ोर इन्सान में वो क़ुव्वत ज़ाहिर होती है जिससे जहां बीनी व जहां बानी के जौहर खुलते हैं।

की मुहम्मद से वफ़ा तूने तो हम तेरे हैं
येह जहां चीज़ है क्या लौहो क़लम तेरे हैं

(صحابہ کرام کا عشق رسول، ص۱۷)

सच्चे आशिक़ाने रसूल

ऐ आशिक़ाने रसूल! सच्ची बात है कि इश्क़े रसूल की तासीर बड़ी हैरत अंगेज़ है, येह मुश्किलात में बंदए मोमिन की भरपूर रहनुमाई करता, रुहानी बीमारियों का शाफ़ी ईलाज करता, अंधेरों में रौशनी बिखेरता, भटके हुए लोगों को हरम की जानिब ले जाता और मख्लूक़ को ख़ालिक़ से मिलाता है, येह इश्क़े रसूल ही तो है जिसने हज़राते सहाबए किराम रज़ी अल्लाहु अनहुम को महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की गुलामी में ऐसा गुम कर दिया कि उन्हें दुनिया की किसी चीज़ और निस्बत से कोई गर्ज़ ना रही, वो सब कुछ बर्दाश्त कर सकते थे मगर उन्हें अपने जाने जानां और दिलों के चैन यानी अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शाने अक़्दस में ज़र्रा भर भी बे अदबी गवारा नहीं थी, वो अपने आक़ा व मौला सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से निस्बत रखने वाली हर चीज़ से बे पनाह मुहब्बत करते थे, बात अगर मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दीन की तब्लीग़ की होती तो वो नुफ़ूसे क़ुदसिया अपने आप को दीन की ख़िदमत के लिए पेश कर देते, अपने घर बार, आल औलाद को छोड़ देते, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हर हुक्म के सामने सरे तस्लीम ख़म करते, सहाबा का अंदाज़े इश्क़ येह इश्क़े रसूल ही था कि रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वुज़ू का पानी या जिस्म शरीफ से जुदा होने वाले बाल हासिल करने में बेहद कोशिश करते, आप का लुआबे दहन यानी थूक मुबारक हाथों में लेकर अपने चेहरों और जिस्मों पर मलते थे, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पूछते مَا يَحْمِلُكُمْ عَلٰى هٰذَا यानी क्या चीज़ तुम्हें ऐसा करने पर उभारती है ? तो 'जान है इश्क़े मुस्तफ़ा' के सच्चे मिसदाक़ अर्ज़ करते : حُبُّ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ यानी अल्लाह व रसूल ﷺ की मुहब्बत हम से ऐसा करवाती है। (مشکوٰۃ،ج۲،ص۲۱۶،حدیث:۴۹۹۰)

इसी लिए तो कोई सिद्दीक़े अकबर, कोई फ़ारुके आज़म, कोई उस्माने ग़नी और बा हया और कोई शेरे ख़ुदा व मुश्किल कुशा बन गए, अलग़र्ज़ इस ने'मते उज़मा की बदौलत हर सहाबी आसमाने हिदायत का चमकता दमकता सितारा बन गया।

और सहाबए किराम ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ऐसी मुहब्बत की जिसकी मिसाल अब दुनिया में नहीं मिलती चुनांचे :

जब आप याद आ जाते हैं

हज़रते आईशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहु अन्हा बयान फ़रमाती हैं कि एक शख़्स ने अल्लाह पाक के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप यक़ीनन मेरे नज़्दीक मेरी जान और मेरी औलाद से भी ज़्यादा महबूब हैं, लेकिन जिस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम याद आ जाते हैं तो जब तक आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर आपको देख ना लूं क़रार नहीं आता, लेकिन इस दुनिया से रुख़्सत होने के बाद जन्नत में दाख़िल हो कर आप अंबियाए किराम अलैहिस्सलाम के साथ बुलंद मक़ाम में होंगे और मैं नीचे दर्जे में होने के सबब अंदेशा करता हूँ कि कहीं आपको ना देख सकूं, येह सुन कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ामोश रहे इतने में हज़रते जिब्राईल अलैहिस्सलाम येह आयत लेकर हाज़िर हुए :

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ
وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ﴿٦٩﴾ (پ۵، النساء:۶۹)

तर्जमए कंज़ुल ईमान: और जो अल्लाह और उस के रसूल का हुक्म माने तो उसे उनका साथ मिलेगा जिन पर अल्लाह ने फ़ज़्ल किया यानी अंबिया और सिद्दीक़ और शहीद और नेक लोग येह क्या ही अच्छे साथी हैं।

(حلیۃ الاولیاء، الحدیث:۵۵۱۶، ج۴، ص۲٦۷)

नबी ﷺ की तकलीफ़ गवारा नहीं

अल्लाहु अकबर! इसीलिए सहाबए किराम रज़ी अल्लाहु अनहुम एक लम्हे के लिए भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बेचैन देखना गवारा ना करते, मक्का शरीफ के फ़तह होने से पहले मशहूर सहाबी हज़रत ज़ैद रज़ी अल्लाहु अनहु दुश्मनाने इस्लाम के नर्ग़े में आ गए, सफ़वान बिन उमय्या ने उनको क़त्ल करने के लिए अपने ग़ुलाम निस्तास के साथ तनईम भेजा, हज़रत ज़ैद रज़ी अल्लाहु अनहु को हुदूदे हरम से बाहर ले जाया गया, तो अबू सुफ़ियान ने (जो अभी इस्लाम ना लाए थे) उनसे पूछा : ज़ैद मैं तुमको ख़ुदा की क़सम देकर पूछता हूँ क्या तुम पसंद कर सकते हो कि इस वक़्त हमारे पास तुम्हारी जगह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हों और हम उनको क़त्ल करें और तुम आराम व सुकून से अपने अहल यानी बाल बच्चों के साथ अपने घर में रहो, हज़रत ज़ैद ने जवाब दिया अल्लाह पाक की क़सम मैं तो येह भी पसंद नहीं करता कि इस वक़्त मेरे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जहां कहीं भी हों उनको एक कांटा भी चुभे और मैं आराम व सुकून से अपने घर वालों के साथ रहूं, येह सुनकर अबू सुफ़ियान ने कहा मैंने ऐसा कहीं नहीं देखा कि किसी से ऐसी मुहब्बत की जाती हो, जैसी मुहब्बत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उनके सहाबा करते हैं, , इस के बाद हज़रत ज़ैद रज़ी अल्लाहु अनहु को शहीद कर दिया गया।

(شرح الشفاء للقاضی عیاض، باب الثانی، فصل فیما روی عن السلف، ج۲، ص۴۴)

ऐ आशिक़ाने रसूल! येह किसी एक सहाबी की हालत नहीं थी बल्कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हर सहाबी की यही हालत थी कि वो अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को किसी तकलीफ़ में देखना पसंद ही नहीं करते थे और अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ऐसी मुहब्बत करते थे जिसकी तारीफ़ उस वक़्त उन लोगों ने की जो अभी मुसलमान नहीं हुए थे चुनांचे :

सहाबा का अंदाज़े इश्क़

उर्वा बिन मसऊद रज़ी अल्लाहु अनहु कहते हैं कि जब क़ुरैश ने उन्हें (ईमान लाने से पहले) सुलह हुदैबिया के साल, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में भेजा, उन्होंने सहाबए किराम रज़ी अल्लाहु अनहु से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बे पनाह ताज़ीम देखी, उन्होंने देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब भी वुज़ू फ़रमाते तो सहाबए किराम रज़ी अल्लाहु अनहु वुज़ू का पानी हासिल करने के लिए बेहद कोशिश करते यहां तक कि क़रीब था कि वुज़ू का पानी ना मिलने के सबब लड़ पड़ें, उन्होंने देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दहन (मुँह) मुबारक या बीनी (नाक मुबारक) का पानी डालते तो सहाबए किराम रज़ी अल्लाहु अनहु उसे हाथों में लेते, अपने चेहरे और जिस्म पर मलते और आबरू पाते, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कोई बाल जिस्मे अतहर से जुदा नहीं होता था मगर उस को हासिल करने के लिए सहाबा जल्दी करते, जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन्हें कोई हुक्म देते तो फ़ौरन उस पर अमल करते और जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गुफ़्तगु फ़रमाते तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने ख़ामोश रहते और ताज़ीम की वजह से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ आँख उठा कर ना देखते। (الشفاء،الباب الثالث،ج۲،ص۲۹)

जब उर्वा बिन मसऊद मुशरिकों के गिरोह में वापस गए तो उन्हें बताया कि ऐ क़ुरैश के गिरोह मैं बड़े बड़े मग़रूर (घमंडी) सलातीन व बादशाहों की मजलिसों में रहा हूँ और उनकी सोहबतें उठाई हैं, मैं क़ैसर व किसरा और नज्जाशी बादशाह के दरबारों में गया हूँ और रहा हूँ लेकिन मैंने उनमें से किसी भी बादशाह के किसी भी ख़िदमत गारो को ऐसा अदब व एहतिराम करते नहीं देखा जैसा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अदब व एहतिराम करते हैं, जब वो अपने दहन (मुँह मुबारक) से लुआब (थूक शरीफ़) निकालते हैं तो सहाबा उसे अपने हाथों में लेकर अपने रुख़्सारों यानी गालों पर मलते हैं, जब किसी अदना और मामूली काम का हुक्म देते हैं तो उस पर अमल करने के लिए बुज़ुर्ग तरीन सहाबा भी सबक़त करते आगे बढ़ते हैं, जब मुहम्मद के सामने उनके सहाबा में से कोई बात करता है तो वो आवाज़ को पस्त (आहिस्ता) करके बात करता है और जब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गुफ़्तगु फ़रमाते हैं तो तमाम लोग इंतिहाई अदब व एहतिराम के साथ सुनते हैं और निगाह मिला कर बात नहीं करते, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रूए मुबारक यानी चेहरे पर कोई निगाह नहीं जमा सकता, जब वुज़ू करते हैं तो वुज़ू का पानी ज़मीन पर नहीं गिरता बल्कि सहाबा लपक लपक कर उसे भी अपने हाथों पर ले लेते हैं, जब दाढ़ी शरीफ़ में और सरे अक़दस में कंघी फ़रमाते हैं और कोई मूए मुबारक यानी बाल मुबारक जिस्म शरीफ़ से अलग होता है तो उस बाल शरीफ़ को इज़्ज़त व एहतराम के साथ तबर्रुक जान कर ले लेते हैं और उस तबर्रुक की हिफ़ाज़त करते हैं, येह वो हालात हैं जिनका मैंने मुशाहदा किया है।

उर्वा बिन मसऊद ने येह तमाम बातें कहने के बाद क़ुरैश की क़ौम के सामने सहाबए किराम की शुजाअत, मर्दानगी, यकजेहती, जज़्बए

जिहाद, शौक़े शहादत, आपस में एक दूसरे के साथ ईसार व मुहब्बत का जज़्बा वग़ैरा का ज़िक्र करते हुए अपनी क़ौम से कहा कि ख़ुदा की क़सम मैंने ऐसा लश्कर देखा है जो तुमसे कभी मुँह ना मोड़ेगा मैदाने जंग में येह तुम सब को मार डालेंगे और तुम पर ग़ालिब आ जाऐंगे।

(مدارج النبوت، قسم سوم، باب ششم، ج۲، ص۲۰۷، ملخصًا)

सहाबा हमारे लिए मशअले राह हैं

ऐ आशिक़ाने रसूल! इन वाक़िआत से सहाबए किराम के इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सच्चा जज़्बा ज़ाहिर हो जाता है, सहाबा किराम ने अपने महबूब आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ अपने दिली लगाव और वालिहाना इश्क़ के आदाब की तकमील में ईसार व क़ुर्बानी की जो मिसालें पेश कीं वो हमारे लिए मशअले राह हैं, आज भी अगर हम उनकी पैरवी करें तो सीनों में इश्क़े रसूल की शमअ फ़रोज़ाँ हो सकती है, अल्लाह पाक से दुआ है कि वो हमें हक़ीक़ी मा'नों में सहाबए किराम की पैरवी करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की लाज़वाल दौलत से मालामाल फ़रमाए। आमीन

हम में और उनमें फ़र्क़

ऐ आशिक़ाने रसूल! देखा आपने, हमारे सहाबए किराम हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कैसी मुहब्बत किया करते थे ? वो भी मुसलमान थे और हम भी मुसलमान हैं, वो भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कलिमा पढ़ने वाले थे और हम भी नबी ﷺ का कलिमा पढ़ने वाले हैं, वो भी अल्लाह पाक को मानने वाले थे और हम भी अल्लाह पाक को मानने वाले हैं, वो भी क़ुरआन को मानने और पढ़ने वाले थे और हम भी

क़ुरआन को मानने और पढ़ने वाले हैं, लेकिन उनमें और हम में ज़मीन व आसमान का फ़र्क़ है।

थे तो आबा वो तुम्हारे ही मगर तुम क्या हो
हाथ पर हाथ धरे मुंतज़िरे फ़र्दा हो

ऐ आशिक़ाने रसूल! ज़रा सोचो तो सही कि आखिर सहाबए किराम रज़ी अल्लाहु अनहु के अंदर कौन सा जज़्बा था जिसने हर मर्द व औरत बल्कि बच्चे बच्चे को इस्लाम का शैदाई बना दिया था ? अगर आपने गहराई से सोचा तो ज़रूर यही जवाब मिलेगा कि वो कामिल मोमिन थे, वो जोशे ईमानी के जज़्बे से सरशार थे और आह! आज का मुसलमान अक्सर ईमान की कमज़ोरी का शिकार है, उन के पेशे नज़र हर दम अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिज़ा हुआ करती थी मगर हाय अफ़सोस! आज के मुसलमानों की अक्सरीयत की अब इस तरफ़ कोई तवज्जोह नहीं, वो अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत से सरशार थे और वाय बदनसीबी! आज के मुसलमानों की भारी अक्सरीयत दुनिया की मुहब्बत में डूबी है, वो आला किरदार के मालिक हुआ करते थे मगर आज के अक्सर मुसलमान सिर्फ गुफ़्तार (यानी बातों) के ग़ाज़ी बन कर रह गए हैं, आह सद हज़ार आह! हमने दुनिया की मुहब्बत में डूब कर, रिज़ाए इलाही के कामों से दूर हो कर, अपनी ज़िंदगियों को गुनाहों से आलूद कर के, अपने प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्यारी प्यारी सुन्नतो के साँचे मे ख़ुद को ढालने के बजाये अग़यार यानी गैर मुस्लिमों के फ़ैशन को अपना कर अपनी हालत ख़ुद आप बिगाड़ डाली है, पारा 13,सूरए रा’द की ग्यारहवीं आयत में अल्लाह पाक इरशाद फरमाता है :

اِنَّ اللّٰهَ لَا یُغَیِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى یُغَیِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْؕ

तर्जमए कंज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह किसी क़ौम से अपनी नेअमत नहीं बदलता जब तक वो ख़ुद अपनी हालत ना बदल दें। (پ۱۳،الرعد۱۱)

हमारा बदला हुआ हाल

अफ़सोस ! सद हज़ार अफ़सोस! बे अमली के सबब हम ज़िल्लत व रुसवाई के गहरे गढ़े में निहायत ही तेज़ी के साथ गिरते चले जा रहे हैं, एक वक़्त वो था जब मुसलमान के नाम से लोग थरथराते थे और आज मुआमला उल्टा नज़र आ रहा है, पहले के मुसलमानों को देखकर लोगों को अल्लाह की पहचान नसीब हो जाती थी और अब के मुसलमानों को देखकर लोग दीने इस्लाम से नफ़रत करने लग जाते हैं, उम्मत का हाल इस वक़्त बेहाल है।

जिसकी ज़बान से अल्लाह और उस के रसूल का ज़िक्र होना चाहिए, आज उस की ज़बान फ़िल्मी गाने गा रही है, जिसको मक्के और मदीने के नूरानी मनाज़िर देखने चाहिए, आज वो गंदी फिल्में देख रहा है, जिसको नमाज़ पढ़ कर अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आँखों को ठंडक पहुंचाना चाहिए, वो नमाज़ों को छोड़कर अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तकलीफ़ पहुंचा रहा है, मुसलमानों के जिस इलाक़े, जिस बस्ती और जिस घर में नज़र डालिए बे अमली और बद अमली ही दिखाई देती है, जिसको समझाओ, वो कहता सुनाई देता है : "या शैख़ अपनी अपनी देख" कोई कहता है 'खाओ पिओ जान बनाओ', किसी को नमाज़ पढ़ने की दा'वत दो तो वो कहता है :भाई! अभी बूढ़े थोड़ी हो गए हैं जो नमाज़ पढ़ें, अभी तो हम जवान हैं, जब बूढ़े हो जाऐंगे तब अल्लाह अल्लाह कर लेंगे।

मुआमला बड़ा नाज़ुक है, समझ में नहीं आता कि मुसलमानों के इस बिगड़े हुए हाल को कैसे दुरुस्त किया जाये, ना अस्बाब, ना किसी का

साथ, बस अब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बारगाह में यही अर्ज़ करने को रह गया है :

ऐ खासए ख़ासाने रुसुल वक़्ते दुआ है
उम्मत पे तेरी आ के अजब वक़्त पड़ा है
जो दीन बड़ी शान से निकला था वतन से
परदेस में वो आज ग़रीबुल ग़ु-रबा है
जिस दीन के मदऊ थे कभी क़ैसरो किसरा
ख़ुद आज वो मेहमाने सराए फ़ु-क़रा है
वो दीन हुई बज़्मे जहां जिस से फ़रोज़ां
अब उस की मजालिस में ना बत्ती ना दिया है
जिस दीन की हुज्जत से सब अदयान थे मग़लूब
अब मोतरिज़ इस दीन पे हर हरज़ा सरा है
छोटों में इताअत है ना शफ़क़त है बड़ों में
प्यारों में मुहब्बत है ना यारों में वफ़ा है

गो क़ौम में तेरी नहीं अब कोई बड़ाई
पर नाम तेरी क़ौम का याँ अब भी बड़ा है
डर है कहीं येह नाम भी मिट ना आखिर
मुद्दत से इसे दौरे ज़माँ मेट रहा है
वो क़ौम कि आफ़ाक़ में जो सर ब फ़लक थी
वो याद में अस्लाफ़ के अब रू ब-क़ज़ा है
जो क़ौम कि मालिक थी उलूम और हिकम की
अब इल्म का वां नाम ना हिक्मत का पता है

खोज उनके कमालात का लगता है अब इतना
गुम दश्त में इक क़ाफ़िला बे तब्लो दरा है
जो कुछ हैं वो सब अपने ही हाथों के हैं करतूत
शिकवा है ज़माने का ना क़िस्मत का गिला है
देखे हैं येह दिन अपनी ही ग़फ़लत की बदौलत
सच है कि बुरे काम का अंजाम बुरा है
फ़र्याद है ऐ कश्तीए उम्मत के निगेहबां
बेड़ा येह तबाही के क़रीब आन लगा है
ऐ चश्मए रहमत बिअबी अंता व उम्मी
दुनिया पे तेरा लुत्फ़ सदा आम रहा है
जिस क़ौम ने घर और वतन तुझ से छुड़ाया
जब तू ने किया नेक सुलूक उनसे किया है
सौ बार तेरा देख के अफ़्व और तरह्हुम
हर बाग़ी व सरकश का सर आख़िर को झुका है
बरताव तेरे जब कि येह आ'दा से हैं अपने
आ'दा से ग़ुलामों को कुछ उम्मीद सिवा है
कर हक़ से दुआ उम्मते मरहूम के हक़ में
ख़तरों में बहुत उस का जहाज़ आ के घिरा है
उम्मत में तेरी नेक भी हैं बद भी हैं लेकिन
दिलदादा तेरा एक से एक उनमें सिवा है
कल देखिए पेश आए ग़ुलामों को तेरे क्या
अब तक तो तेरे नाम पे एक एक फ़िदा है
हम नेक हैं या बद हैं बिल आखिर हैं तुम्हारे
निस्बत बहुत अच्छी है अगर हाल बुरा है

तदबीर सँभलने की हमारे नहीं कोई
हाँ एक दुआ तेरी कि मक़बूले ख़ुदा है
ख़ुद जाह के तालिब हैं ना इज़्ज़त के हैं ख्वाहां
पर फ़िक्र तेरे दीन की इज़्ज़त की सदा है

एहसासे ज़िम्मेदारी पैदा कीजिए

ऐ आशिक़ाने रसूल! निहायत ही संजीदगी के साथ अपने किरदार का जायज़ा लीजिए, अपने गुनाहों से सच्ची तौबा कीजिए और अपने अंदर अज सरे नौ यानी नए तरीक़े से जोशे ईमानी पैदा कीजिए और अपनी येह दीनी सोच बनाइऐ कि मुझे अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है, इंशा अल्लाह, अगर आप ने अपनी ज़िम्मेदारी को समझ कर अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत में डूब कर इस दीनी काम का बेड़ा उठा लिया तो अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्यार की बरकत से इंशाअल्लाह आपका दोनों जहां में बेड़ा होगा।

हमको अल्लाह और नबी से प्यार है
इंशा अल्लाह अपना पार है

मुस्तफ़ा ﷺ ईमान की जान हैं

ऐ आशिक़ाने रसूल! इन तमाम बातों से ज़ाहिर हुआ कि हमारी कामयाबी सिर्फ और सिर्फ अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फ़रमान के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने में है और अल्लाह पाक ने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तमाम नबियों से अफ़ज़ल व आ'ला किया और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सदक़े आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत को तमाम उम्मत से अफ़ज़ल व आ'ला किया, आ'ला हज़रत अपने आक़ा

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान का कुछ यूं तज़्किरा करते हैं और दुनिया को येह पैग़ाम देते हैं, कि ऐ लोगों! यक़ीनन हमारे मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान येह है :

अल्लाह की सर ता ब-क़दम शान हैं येह
इन सा नहीं इन्सान वो इन्सान हैं येह
क़ुरआन तो ईमान बताता है उन्हें
ईमान येह कहता है मेरी जान हैं येह

ऐ आशिक़ाने रसूल! ज़रा ग़ौर से सोचो, कि क़ुरआन नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ईमान बताए, और ईमान नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जान बताए, तो उस नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क्या शान होगी ? तभी तो मुजद्दिदे दीन व मिल्लत रज़ी अल्लाहु अनहु फ़रमाते है :

सबसे औला व आ'ला हमारा नबी
सबसे बाला व वाला हमारा नबी
अपने मौला का प्यारा हमारा नबी
दोनों आलम का दूल्हा हमारा नबी

हम अपने आक़ा ﷺ को तकलीफ़ पहुंचा रहे हैं

पस क़ुरआन ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ईमान बताया, और ईमान ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जान बताया, तो अब आप बताएं कि कोई शख़्स ऐसा दुनिया में है, जो अपनी जान को तकलीफ़ पहुंचाए, जो अपनी जान को मुसीबत में डाले, अपने आपको सर्दियों की रातों में घर के बाहर बरहना रखकर अपनी जान को तकलीफ़ पहुँचाये ?

आप यही जवाब देंगे कि, नहीं नहीं, दुनिया में ऐसा कोई शख़्स नहीं है, बल्कि लोग तो अपनी जान को आराइश व ज़ेबाइश के महल्लात में

आराम से रखने की तमन्ना करते है, हाँ ! वो शख़्स जो पागल हो जिसे दुनिया की कुछ ख़बर ना हो, वो ऐसा करे तो हो सकता है, वर्ना अक़्लमंद हो वो ऐसा नहीं कर सकता।

ऐ आशिक़ाने रसूल! अब मैं आपसे येह पूछना चाहता हूँ, क्योंकि अल्हम्दु लिल्लाह आप अक़्लमंद हैं, अल्लाह पाक ने आपको अक़्ल से नवाज़ा है, शुऊर से सरफ़राज़ फ़रमाया है, आप शुऊर मंद हैं, लिहाज़ा आपसे सवाल है, कि जब आपका ईमान नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जान बता रहा है, तो नबी ﷺ आपकी जान हुए और जान क्या चीज़ है ? अगर जान से भी कोई आ'ला चीज़ होती, और उस चीज़ से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तशबीह दी जाती तब भी कम था, कि आ'ला हज़रत फ़रमाते हैं

होते कहाँ ख़लील व बिना का'बा व मिना
लौलाक वाले साहिबी सब तेरे घर की है

कि हमारा जो दुनिया में वजूद है, वो मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सदक़े में है, तो जब कोई अपनी जान को तकलीफ़ नहीं पहुँचाता, तो हम और आप अपने आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नतो को तर्क करके अपने आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तकलीफ़ क्यों पहुंचा रहे हैं? आज हम आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फ़रमान को तर्क करके क्यों उन्हें तकलीफ़ पहुंचा रहे हैं ?

हाँ ! हाँ ! आज हम लोग आक़ा ﷺ की सुन्नतो को छोड़ कर फ़ैशन अपना कर, आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ना फ़रमानी कर रहे हैं, ज़रा कान लगा कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस फरमान सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सुनिए :

मेरे गिरोह में से नहीं

हज़रते अबू अय्यूब अंसारी रज़ी अल्लाहु अनहु से रिवायत है अल्लाह पाक के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं:

مَنْ رَغِبَ عَنْ سُنَّتِیْ فَلَیْسَ مِنِّیْ۔

तर्जमा : जो मेरी सुन्नत से मुँह फेरे वो मेरे गिरोह से नहीं।

(کنزالعمال بحوالہ ابن عساکرابی ایوب حدیث ۱۸۱۴۶ مؤسسۃالرسالہ بیروت ۷| ۹۸)

मरने के बाद की होश रुबा मंज़र कशी

ऐ ग़ाफ़िल इस्लामी भाईयो! ज़रा होश कीजिए ! मरने के बाद हमारी एक ना चलेगी, हमारे नाज़ उठाने वाले हमारे कपड़े भी उतार लेंगे, हम कितने ही बड़े सरमाया दार सही, हमें वही कोरे लट्ठे का कफ़न पहनाएंगे जो फुटपाथ पर दम तोड़ने वाले लावारिस को पहनाया जाता है, हमारी कार है तो वो भी गैरज में खड़ी रह जाएगी, क़ीमती लिबास संदूक़ में धरे रह जाऐंगे, माल व मताअ और ख़ून पसीने की कमाई पर वु-रसा क़ाबिज़ हो जाएंगे, 'अपने' अश्क़ बहा रहे होंगे, 'बेगाने' ख़ुशियाँ मना रहे होंगे, हमारे नाज़ उठाने वाले हमें अपने कंधों पर लाद कर चल देंगे और एक ऐसे वीराने में ले आएँगे कि हमने कभी इस हौलनाक सन्नाटे में ख़ुसूसन रात के वक़्त एक घड़ी भी तन्हा ना आये था, ना आ सकते थे बल्कि उस के तसव्वुर से ही काँप जाया करते थे, अब गढ़ा खोद कर हमें मनों मिट्टी तले दफ़न करके हमारे सारे अज़ीज़ चले जाऐंगे, हमारे पास एक रात तो बहुत दूर की बात एक घंटा भी ठहरने के लिए कोई राज़ी ना होगा, ख्वाह हमारा चहीता बेटा ही क्यों ना हो, वो भी भाग खड़ा होगा, अब इस तंग व तारीक क़ब्र में ना जाने कितने हज़ार साल हमारा क़ियाम होगा, हम हैरानो परेशान होगें, अफ़्सुर्दगी छाई होगी, कब भींच रही होगी, हम चिल्ला रहे होगें, हसरत भरी

निगाहों से अज़ीज़ों को निगाहों से ओझल होता हुआ देख रहे होगें, दिल डूबता जा रहा होगा।

क़ब्र के सवालात

इतने में क़ब्र की दीवारें हिलना शुरू होंगी और देखते ही देखते दो ख़ौफ़नाक शक्लों वाले फ़रिश्ते (मुन्कर नकीर) अपने लंबे लंबे दाँतों से कब्र की दीवार को चीरते हुए हमारे सामने आ मौजूद होंगे, उनकी आँखों से आग के शोले निकल रहे होंगे, काले काले मुहीब (यानी हैबतनाक) डरावने बाल सर से पांव तक लटक रहे होंगे, हमें झिड़क कर बिठाएँगे, करख़्त (यानी निहायत ही सख़्त) लहजे में इस तरह सवालात करेंगे 'मन रब्बुक ?' (यानी तेरा रब कौन है ?) 'मा दीनुक ?' (यानी तेरा दीन क्या है ?) इतने में हमारे और मदीने के दर्मियान जितने पर्दे हाइल होंगे, सब उठा दिए जाऐंगे किसी की मोहिनी, दिलरुबा और प्यारी प्यारी सूरत सामने आ जाएगी, या वो अज़ीम और प्यारी हस्ती ख़ुद तशरीफ़ ले आएगी, क्या अजब हमारी आँखें शर्म से झुक जाएं, हो सकता है कि हम सोच में पड़ जायें कि निगाहें उठाऊँ तो कैसे उठाऊँ, अपनी बिगड़ी हुई सूरत दिखाऊँ तो कैसे दिखाऊँ ? येह वही तो मेरे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं जिनका मैं कलिमा पढ़ा करता था, अपने आपको उन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ग़ुलाम भी कहता था। लेकिन मैंने येह क्या किया ?

मुस्तफ़ा ﷺ ने तो येह फ़रमाया

प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तो येह फ़रमाया 'दाढ़ी बढ़ाओ, मूँछें ख़ूब पस्त करो और दाढ़ियों को मुआफ़ी दो, यहूदियों जैसी सूरत मत बनाओ, लेकिन हाय! मेरी बदबख्ती मैं चंद रोज़ा दुनिया की ज़ीनत में खो गया, फ़ैशन ने मेरा सत्यानास कर दिया, आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम के सख़्ती से मना करने के बावुजूद मैंने चेहरा यहूदियों यानी मदनी आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुश्मनों जैसा ही बनाया, हाय! अब क्या होगा ? कहीं ऐसा ना हो कि मेरी बिगड़ी हुई शक्ल देखकर सरकारे आली वक़ार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुँह फेर लें और येह फ़रमा दें कि ' येह तो मेरे दुश्मनों वाला चेहरा है, मेरे ग़ुलामों वाला नहीं!' अगर ख़ुदा ना ख्वासता ऐसा हुआ तो सोचिए उस वक़्त हम पर क्या गुज़रेगी ?

ना उठ सकेगा क़ियामत तलक ख़ुदा की क़सम
अगर नबी ने नज़र से गिरा के छोड़ दिया

तौबा कर लीजिए अभी मौक़ा है

ऐ आशिक़ाने रसूल! ऐसा नहीं होगा, इंशा अल्लाह हरगिज़ नहीं होगा, अभी हम ज़िंदा हैं, मान जाईए अपने कमज़ोर बदन पर तरस खाईए झट हिम्मत कीजिए अंग्रेज़ी फ़ैशन, फ़िरंगी तहज़ीब को तीन तलाकें दे डालिए और अपना चेहरा अपने आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा ﷺ की पाकीज़ा सुन्नत से आरास्ता कर लीजिए और एक मुट्ठी दाढ़ी सजा लीजिए, हरगिज़ हरगिज़ शैतान के इस फ़रेब में ना आईए, और उन वस्वसों की तरफ़ तवज्जोह मत दीजिए, कि अभी तो मैं इस क़ाबिल नहीं हुआ, मेरी तो उमर ही क्या है ? मेरा इल्म भी उतना कहाँ है ? अगर किसी ने दीन के बारे में सवाल कर दिया तो मुझे जवाब नहीं आएगा, मैं तो जब काबिल हो जाऊंगा उस वक़्त दाढ़ी रखूँगा याद रखिए येह शैतान का कामयाब तरीन वार है कि इन्सान अपने बारे में येह समझ बैठे कि "हाँ, अब मैं काबिल हो गया हूँ "याद रखिए अपने आपको क़ाबिल समझना ही, ना क़ाबिलियत की सबसे बड़ी दलील है।

बड़े बड़े उलमाए किराम भी जवाब नहीं देते

आजिज़ी इख्तियार कीजिए! बड़े बड़े उलमाए किराम भी हर सवाल का जवाब नहीं देते तो क्या हर सवाल का जवाब देने की आपने ज़िम्मेदारी ली हुई है ? नफ्स की हीला बाज़ियों में मत आईए और मान जाईए, ख्वाह माँ रोके, बाप मना करे, मुआशरा आड़े आए, शादी में रुकावट खड़ी हो, कुछ भी हो जाए अल्लाह पाक और उस के प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हुक्म मानना ही पड़ेगा क्योंकि इसी में हमारी भलाई है, इसी में हमारी नजात है, इसी के सदक़े हमें जन्नत मिलेगी।

और वो नौजवान इस्लामी भाई, जिनकी शादी अभी तक नहीं हुई, वो येह ना सोचें कि अगर दाढ़ी रख लिया तो मेरी शादी रुक जाएगी, मेरा रिश्ता टूट जाएगा, ऐ नौजवान इस्लामी भाई! तसल्ली रखिए अगर आप का जोड़ा लौहे महफ़ूज़ पर लिखा हुआ है तो आपकी शादी ज़रूर हो जाएगी और अगर नहीं लिखा तो दुनिया की कोई ताक़त आपकी शादी नहीं करवा सकती। ज़िंदगी का क्या भरोसा ?(रिसाला काले बिच्छू स 4-9)

इश्क़े रसूल ﷺ से अपने आपको मालामाल करें

ऐ आशिक़ाने रसूल! लिहाज़ा इश्क़े मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दौलत से अपने आपको माला माल करें, क्योंकि इश्क़े रसूल ही हमें हर जगह, हर वक़्त काम आएगा चाहे वो दुनिया हो, चाहे वो क़ब्र हो, और चाहे वो कियामत हो, आला हज़रत लिखते हैं :

लहद में इश्क़े रुखे शह का दाग़ ले के चले
अंधेरी क़ब्र सुनी थी चराग़ ले के चले
तेरे ग़ुलामों का नक़्शे क़दम है राहे ख़ुदा
वो क्या बहक सके जो येह सुराग़ ले के चले

और जो शख़्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इश्क़ करे, उनके फ़रमान को सामने रखकर अपनी ज़िंदगी का एक एक लम्हा सुन्नतें नबवी के मुताबिक़ गुज़ारे तो वो क़ियामत में, जन्नत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ होगा, मगर इश्क़ भी हो तो नुमाया अंदाज़ का, इश्क़ हो तो मिसाली इश्क़ हो, अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर हर चीज़ क़ुर्बान करने का जज़्बा रखने वाला, आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक एक सुन्नतो पर अमल करने वाला इश्क़ हो, आईए अब आपको सबसे बड़े आशिक़ की कहानी सुनाता हूँ, और सबसे बड़े आशिक़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबी, हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ी अल्लाहु अनहु हैं जिनका लक़ब आशिक़े अकबर है, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उनको कैसा इश्क़ था ? सुनिए :

करूँ तेरे नाम पे जां फ़िदा

ऐ आशिक़ाने रसूल ! हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ी अल्लाहु अनहु के दो वाक़िया बहुत मशहूर हैं (1) हिजरत का वाक़िआ (2) अल्लाह पाक की राह में अपने घर का सारा माल सदक़ा व ख़ैरात करने का वाक़िआ और येह दोनों वाक़िआत तक़रीबन हर मुसलमान जानता है, लेकिन हिजरत के वाक़िए से पहले क्या हुआ ? और घर का सारा माल व सामान सदक़ा व ख़ैरात करने के बाद क्या हुआ ? इस को कुछ ही लोग जानते हैं, आईए आज जानते हैं कि हिजरत से पहले क्या हुआ ?

मदीना शरीफ़ की जानिब हिजरत करने का मौक़ा था, अल्लाह पाक के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ी अल्लाहु अनहु के घर तशरीफ़ लाए, और फ़रमाया: ऐ अबू बक्र! हिजरत करने के बाद जैसे ग़ैर मुस्लिम मुझे तलाश करेंगे, ऐसे ही तुझे तलाश करेंगे, इस सफ़र की

वजह से तुम्हें बहुत सारी तकलीफों का भी सामना हो सकता है, येह सब सूरते हाल तुम्हारे सामने है, क्या इस के बावजूद भी तुम मेरे साथ हिजरत करने के लिए तैयार हो ?

हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ी अल्लाहु अनहु ने इस का जो जवाब दिया, सोने के पानी के साथ लिखने के लाइक़ जुमले हैं, अर्ज़ किया:या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! दो सूरतें हैं:

(1) फ़र्ज़ कीजिए (यानी मान लीजिए) ! कि मुझे क़ियामत तक की ज़िंदगी मिल जाये, फिर उस लंबी ज़िंदगी में मुझे सारी दुनिया का बादशाह बना दिया जाये, सब बादशाह, नवाब मेरे मा तहत हों (यानी मेरे हुक्म के मुताबिक़ काम करने वाले हों) मगर उस ज़िंदगी में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत शामिल ना हो।

(2) दूसरी तरफ़ येह सूरत है कि बिलफ़र्ज़ (यानी मान लीजिए) कि मुझे क़ियामत तक की ज़िंदगी मिल जाये, इस पूरी ज़िंदगी में मुझे सख्त तरीन तकलीफ़ें दी जाती रहें, मैं दर्द और तकलीफ़ से निढाल हो जाऊं, मांगे से भी मौत ना आए, इन सब तकलीफों में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दामने मुहब्बत मेरे हाथों में हो तो या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! मैं उस शाहाना ज़िंदगी की बजाये इस तकलीफों वाली ज़िंदगी को पसंद करता हूँ।

وَهَلْ اَنَا وَ مَالِیْ وَ وَلَدِیْ فِدَاكَ يَا رَسُولَ الله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهٖ وَ سَلَّم!

तर्जमा: या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मैं भी, मेरा सारा माल भी और मेरी औलाद भी सब कुछ आप पर क़ुर्बान है।

(خلافتِ بلا فصل، صفحہ:۲۳۳-۲۳۴ ملخصًا)

करूँ तेरे नाम पे जां फ़िदा
ना बस एक जां दो जहाँ फ़िदा

दो जहाँ से भी नहीं जी भरा
करूँ क्या करोड़ों जहां नहीं

सुब्हानल्लाह ! क्या शान है हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ी अल्लाहु अनहु की...! मुहब्बत का अंदाज़ देखिए, जांनिसारी वाले जज़्बात देखिए, फ़रमा रहे हैं, या रसूलल्लाह! सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़िंदगी हो तो आपकी मुहब्बत वाली हो, फिर चाहे हज़ारों नहीं, लाखों करोड़ों तकलीफों से भरी हुई हो, अगर ऐसी ज़िंदगी मिले तो क़ियामत तक की बादशाहत भी मंज़ूर नहीं है।

दिल है वो दिल जो तरी याद से मअमूर रहा
सर है वो सर जो तेरे क़दमों पे क़ुर्बान गया

वज़ाहत : या रसूलल्लाह! सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हक़ीक़ी दिल तो वो है जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यादें बसी हो, और हम तो सर भी उसी को मानते हैं जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़दमों पर निसार हो जाये।

हम क्या चाहते हैं...!

ऐ आशिक़ाने रसूल! हम भी ज़रा ग़ौर करें, हम भी आशिक़ाने रसूल हैं, ग़ुलामिये रसूल का दावा तो हम भी रखते हैं, हमें क्या दरकार है? हमारे दिल में तमन्ना क्या है? कैसी ज़िंदगी चाहिए? अफ़सोस ! हम कारों कोठियों के तलबगार हैं हमारे पास पैसा होना चाहिए, * बैंक बैलेंस होना चाहिए, * शाहाना ज़िंदगी होनी चाहिए, * आगे पीछे नौकरों चाकरों की लाइन होनी चाहिए, फिर उस के लिए हमें चाहे कुछ भी खोना पड़े, गवारा कर जाते हैं, * चार पैसों के लालच में नमाज़ें क़ज़ा कर दी जाती हैं, * लोग कहते हैं क्या करूँ, ज़ोहर, अस्र नहीं पढ़ी जाती, नौकरी का मसला है,*

चूंकि अमीर कबीर बनने की ख्वाहिश है, दिन रात काम, काम और काम जारी है, लिहाज़ा तिलावत का वक़्त नहीं मिलता, * चूंकि चार पैसे कमाने होते हैं, इस लिए रोज़े नहीं रखे जाते, * पैसा चाहिए, दूसरे मुल्क का वीज़ा चाहिए मआज़ल्लाह इस लालच में लोग अपना ईमान तक बेच डालते हैं, खुद को ग़ैर मुस्लिम और ना जाने क्या क्या लिख कर दे देते हैं, अल्लाह पाक की पनाह अल्लाह पाक की पनाह...!

मुस्तफ़ा ﷺ की गुलामी एक अज़ीम चीज़ है

ऐ आशिक़ाने रसूल! हम कुछ भी करें, ग़ुलामिये रसूल का पट्टा गले में रहना चाहिए, ईमान की दौलत और इश्क़े रसूल के चराग़ जो दिल में जल रहे हैं, येह नहीं बुझने चाहिऐं। हम सब कुछ बाद में हैं पहले मुसलमान हैं, पहले आशिक़े रसूल हैं, फिर उस के बाद डाक्टर हैं, इंजीनियर हैं, प्रोफेसर हैं, बड़ी बड़ी डिग्रियों वाले हैं, वज़ारत, सदारत, हुकूमत वाले बाद में हैं सबसे पहले और पैदाइशी मुसलमान हैं, आशिक़े रसूल हैं अपने आक़ा के उम्मती हैं।

ऐ आशिक़ाने रसूल! ग़ुलामिये मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अज़ीम तरीन और सबसे आ'ला दौलत है, येह नहीं ख़त्म होनी चाहिए, अगर इस ग़ुलामी पर हमें मौत आ गई तो हम कामयाब हो जाऐंगे, हमारे सहाबए किराम रज़ी अल्लाहु अनहुम और बुज़ुर्गाने दीन मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की गुलामी वाली मौत की तमन्ना किया करते थे, दुआएं मांगा करते थे और जब उस का मौक़ा आता फ़ौरन लब्बैक कहते हुए अपनी जान क़ुर्बान कर दिया करते थे, आईए आपकी तरग़ीब के लिए ईमान को ताज़ा करने वाला एक वाक़िआ सुनाता हूँ चुनांचे:

हज़रत सा'द पर करम हो गया

सा'द नामी एक सहाबिये रसूल थे, उनका निकाह नहीं हो रहा था, प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनका निकाह करवा दिया, अब उनके पास रुपये भी नहीं थे, अल्लाह पाक के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रुपये का भी एहतिमाम फ़रमा दिया, अब येह अपनी नई नवेली दुल्हन के लिए चीज़ें ख़रीदने के लिए बाज़ार गए।

अब जज़्बात देखिए ! ना जाने कब से दिल में हसरत होगी, आज हसरत पूरी हुई, अभी अभी निकाह हुआ है, अभी दुल्हन को देखा भी नहीं है, बाज़ार से ख़रीदारी कर रहे थे, इस दौरान ऐलान हुआ अल्लाह पाक के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जंग के लिए रवाना हो रहे हैं, सब जल्दी हाज़िर हो जाएं, हज़रत साद रज़ी अल्लाहु अनहु ने ऐलान सुना, शादी की ख़रीदारी छोड़ी, एक घोड़ा और ज़रूरी सामान ख़रीदा, इमामा बाँधा और दीन की ख़िदमत के लिए रवाना हो गए, जंग में शरीक हुए, बड़ी बहादुरी के साथ लड़े, कई दुश्मनों को जहन्नम पहुंचाया, आख़िरे कार जंग के मैदान में एक आवाज़ गूँजी सा'द को नेज़ा लगा और वो शहीद हो गए।

येह हज़रत सा'द रज़ी अल्लाहु अनहु की क़ुर्बानी थी, इस जंग में शहीद तो और सहाबा भी हुए होंगे मगर हज़रत सा'द रज़ी अल्लाहु अनहु की तरह नई नवेली दुल्हन को इंतिज़ार करते छोड़कर, दिल की हसरतें दिल ही में दबा कर शायद कोई नहीं आया होगा, चुनांचे उन्हें इस का ख़ुसूसी इन्आम भी मिला, वो इनआम क्या था ? रिवायत में है अल्लाह पाक के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रते साद के पास तशरीफ़ लाए, उनका सर अपनी गोद में रखा, अपने मुबारक कपड़ों से उनके चेहरे की मिट्टी साफ़ की

और फ़रमाया: ऐ सा'द! तुम्हारी ख़ुश्बू कितनी प्यारी है, तुम अल्लाह व रसूल के कितने प्यारे हो।

अल्लाह अल्लाह! हज़रत सा'द रज़ी अल्लाहु अनहु के नसीब पर हज़ार जान फ़िदा...! कैसी निराली क़िस्मत है, ज़माना जिनकी एक झलक देखने को तरसता है, फ़रिश्ते जिनके दर पर हाज़िरी की ख्वाहिश करते हैं, वो बुलंद रुतबा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमअपने सहाबी पर कैसी शफ़क़त फ़रमा रहे हैं।

सुब्हानल्लाह!अब येह इनआमात यहीं ख़त्म नहीं हुए, रिवायत में है अल्लाह पाक के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रोए, फिर मुस्कुराए, फिर अपना चेहरा मुबारक एक तरफ़ को फेर लिया, सहाबए किराम रज़ी अल्लाहु अनहुम ने जब इस का सबब पूछा तो फ़रमाया रोया मैं साद की मुहब्बत में था और अल्लाह पाक ने सा'द को जो मक़ाम अता फ़रमाया है, उसे देखकर मुस्कुरा दिया और मैंने देखा जन्नती हूरें जो सा'द के निकाह में दी गई हैं, वो सा'द की तरफ़ दौड़ती हुई आ रही थीं, उनसे हया के सबब मैंने अपना चेहरा फेर लिया। (تنبیہ الغافلین، باب الحکایات، صفحہ ۵۵۳-۵۵۴)

जब तेरी याद में दुनिया से गया है कोई
जान लेने को दुल्हन बन के क़ज़ा आई है

सुब्हानल्लाह ! ऐ आशिक़ाने रसूल! येह है क़ुर्बानी...! अब बताईए अगर हम नमाज़े फ़ज्र के लिए बिस्तर छोड़ें * तिलावत की ख़ातिर मोबाइल थोड़ी देर के लिए छोड़ दें * अल्लाह व रसूल की रिज़ा की ख़ातिर गुनाह छोड़ दें * जहन्नम के अज़ाब से बचने की ख़ातिर हराम कमाई से बच कर हलाल पर गुज़ारा करना पड़े * मशक़्क़त उठानी पड़ जाये * चंद दिन के लिए घर बार छोड़कर राहे ख़ुदा में सफ़र कर लें * इल्मे दीन सीखने के लिए अपनी मसरुफ़ियात कम कर के अमीरे अहले सुन्नत के मदनी मुज़ाकरे

में शिरकत कर लें और हमारी येह क़ुर्बानी क़बूल हो जाये तो बताईए येह कितने फ़ायदे का सौदा है, मगर अफ़सोस हम क़ुर्बानी देने को तैयार नहीं होते हैं।

हज़रते सिद्दीक़े अकबर रज़ी अल्लाहु अनहु का सदक़ा अल्लाह पाक हमें राहे ख़ुदा में क़ुर्बानियां देने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए और अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुहब्बत करने और हर वक़्त उनके तराने गाते रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।और हर वक़्त यूं गुनगुनाते रहें :

लब पर नाते पाक का नग़मा कल भी था और आज भी है
मेरे नबी से मेरा रिश्ता कल भी था और आज भी है
और किसी जानिब क्यों जाएं और किसी को क्यों देखें
अपना सब कुछ गुम्बदे ख़ज़रा कल भी था और आज भी है
पस्त वो कैसे हो सकता है जिसको हक़ ने बुलंद किया
दोनों जहां में उनका चर्चा कल भी था और आज भी है
फ़िक्र नहीं है हमको कुछ भी दुख की धूप कड़ी तो क्या
हम पर उन के फ़ज़्ल का साया कल भी था और आज भी है
बतला दो गुस्ताखे नबी को ग़ैरते मुस्लिम ज़िंदा है
उन पर मर मिटने का जज़्बा कल भी था और आज भी है
सब हो आए उनके दर से जा ना सका तो एक सबीह
येह कि इक तस्वीरे तमन्ना कल भी था और आज भी है

और अपने आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम को अपनी आँखों का तारा बना कर, दिल का उजाला बना कर, मुसीबतों का सहारा बना कर, आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तसव्वुर बांध कर, मदीने की यादों में गुम हो कर, दुनिया वालों को मुख़ातब कर के, लंदन व पैरिस की ख़ूबसूरतियों, दुनिया के रंगींन नज़ारों, रौनक़ों सबसे से यूं कह दें :

अब मेरी निगाहों में जचता नहीं कोई
जैसे मेरे सरकार हैं ऐसा नहीं कोई
तुम सा तो हसीं आँख ने देखा नहीं कोई
येह शाने लताफ़त है कि साया नहीं कोई
ऐ ज़र्फे नज़र देख मगर देख अदब से
सरकार का जलवा है तमाशा नहीं कोई
येह तूर से कहती है अभी तक शबे मेराज
दीदार की ताक़त हो तो पर्दा नहीं कोई
होता है जहां ज़िक्र मुहम्मद के करम का
उस बज़्म में महरूमे तमन्ना नहीं कोई
ऐजाज़ येह हासिल है तो हासिल है ज़मीं को
अफ़्लाक पे तो गुम्बदे ख़ज़रा नहीं कोई
सरकार की रहमत ने मगर ख़ूब नवाज़ा
येह सच है कि ख़ालिद सा निकम्मा नहीं कोई

आओ इताअत गुज़ार आशिक़ बनें

ऐ आशिक़ाने रसूल ! लिहाज़ा इताअत गुज़ार आशिक़ों में अपना नाम लिखवाईए, जन्नत में अपने आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पड़ोस हासिल कीजिए, अपनी ज़िंदगी को सुन्नतो के साँचे में ढाल लीजिए, अपना हर काम सुन्नतो के मुताबिक़ कीजिए, खाना, पीना, सोना, जागना, चलना, उठना, बातचीत करना, नीज़ अपनी सूरत, अपनी सीरत, अपना लिबास, अपना किरदार, यहां तक कि छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा हर काम आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नतो वाला हो, जो भी देखे उस को सोचना

ना पड़े कि येह कौन जा रहा है बल्कि दूर से देखकर लोग कहें कि देखो मुहम्मदे अरबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ग़ुलाम जा रहा है।

शहा ऐसा जज़्बा पाऊं कि मैं ख़ूब सीख जाऊं
तेरी सुन्नतें सिखाना मदनी मदीने वाले
तेरी सुन्नतो पर चल कर मेरी रूह जब निकल कर
चले तुम गले लगाना मदनी मदीने वाले

ऐ आशिक़ाने रसूल! अब आख़िर में एक ऐसी सच्ची दास्तान सुनिए जिसके दामन में येह सीखने को मिलेगा कि एक आशिक़े रसूल को कैसा होना चाहिए, चुनांचे अबू दाऊद शरीफ़ की हदीसे पाक है:

मुस्तफ़ा ﷺ की रिज़ा के ख़ातिर अपना मकान ढा दिया

हज़रते सय्यिदुना अनस रज़ी अल्लाहु अनहु से रिवायत है कि एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहीं तशरीफ़ ले गए हम भी साथ ही थे कि अल्लाह पाक के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बुलंद इमारत मुलाहिज़ा की तो फ़रमाया येह क्या है ? अर्ज़ की गई येह फ़ुलां अंसारी की है (येह सुन कर अल्लाह पाक के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ामोश हो गए और येह बात क़ल्बे अतहर में रख ली, यहां तक कि उस इमारत का मालिक हाज़िर हुआ और उस ने आप ﷺ को (लोगों की मौजूदगी में) सलाम अर्ज़ किया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस से ऐअराज़ किया (यानी मुंह फेर लिया), उस अंसारी सहाबी ने येह अमल कई मर्तबा किया यहां तक कि उस (अंसारी शख़्स) ने अपने बारे में नाराज़ी का इज़हार और ऐअराज़ जान लिया तो उस ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अस्हाब से येह कैफ़ियत बयान करते हुए कहा वल्लाह मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नाराज़ पाता हूँ, सहाबए किराम रज़ी अल्लाहु

अनहुम ने फ़रमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ ले गए थे तो तुम्हारी इमारत देखी (यानी हमारा अंदाज़ा यही है कि तुमसे नाराज़ी का सबब तुम्हारी तामीर कर्दा बुलंद इमारत है), येह सुनकर वो अंसारी सहाबी अपनी इमारत की तरफ़ लौटे और उसे ढा कर ज़मीन बोस कर दिया।

(ابوداؤد ج۴ص۴۶۰حدیث ۵۲۳۷ مُلَخَّصاً)

यक़ीनन सौदा निहायत ही सस्ता है

ऐ आशिक़ाने रसूल! येह हैं हज़राते सहाबए किराम रज़ी अल्लाहु अनहु का इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम। मुफ़स्सिरे शहीर हज़रत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान अलैहि रहमा इस हदीस पाक के तहत फ़रमाते हैं: मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें ना तो इमारत गिराने का हुक्म दिया और ना ही येह फ़रमाया कि इस तरह की इमारत बनाना जाइज़ नहीं, इन सहाबी को सिर्फ अंदाज़ा ही हुआ कि शायद अल्लाह पाक के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस इमारत के सबब मुझ से नाराज़ हो गए हैं, तो उनका येह ज़हन बना कि येह इमारत मेरे और महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दर्मियान रुकावट बन गई लिहाज़ा उसे ढा दिया, इस ढाने में माल को बर्बाद करना नहीं और ना ही येह फुज़ूल खर्ची है बल्कि अस्ल मक़्सूद महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मनाना है, अगर इमारत ढाने से अल्लाह पाक के प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम राज़ी हो जाएं तो यक़ीनन यक़ीनन यक़ीनन सौदा निहायत ही सस्ता है, हज़रते इबराहीम अलैहिस्सलाम तो अल्लाह पाक की रिज़ा के लिए अपने बेटे हज़रते इस्माईल अलैहिस्सलाम को ज़िबह करने के लिए तैयार हो गए थे, **अल्लाहु अकबर !**(مراٰۃ ج۷ص۲۱ مُلَخَّصاً)

नहीं चाहता हुकूमत नहीं सलतनत है पाना
मेरी ज़िंदगी का मक़सद है हुज़ूर को मनाना

क्या क्या पसंद है और क्या क्या पसंद नहीं है ?

ऐ आशिक़ाने रसूल! येह तो सहाबा थे, आज मैं और आप देखें कि हमारा क्या क्या हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पसंद है ? और क्या क्या पसंद नहीं है ? सुब्ह से लेकर शाम तक, शाम से लेकर सुब्ह तक, अक़ीक़े, वलीमे से लेकर बड़ी बड़ी दावतों तक, अपनी ज़िंदगी की पहली सांस से आख़री हिचकी तक, अपने कारोबार से लेकर अपने घर के अंदाज़ तक, सोने से लेकर उठने तक, खाने से लेकर फ़ारिग़ होने तक, सुब्ह के पहले ग्राहक से लेकर आख़िरी ग्राहक तक, सफ़र में जाने से लेकर वापस आने तक, लड़के या लड़की की मंगनी से ले कर शादी के आख़िरी मराहिल तक, अपनी ज़िंदगी के एक एक लम्हे को देखें, हमारा कौन कौन सा अमल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पसंद है और कौन सा अमल पसंद नहीं है, इस पर बार बार सोचें।

आज हम भी आशिक़े रसूल हैं

उस सहाबी का मकान हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पसंद ना था तो उन्होंने उस मकान को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़ुशी हासिल करने के लिए ज़मीन बोस कर दिया, गिरा दिया, क्यों गिरा दिया ? क्योंकि वो आशिक़े रसूल थे, अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़ुशनूदी उनको मतलूब थी, आज हम भी आशिक़े रसूल हैं और नारा भी लगाते हैं:

ग़ुलाम हैं ग़ुलाम हैं रसूल के ग़ुलाम हैं
गुलामिये रसूल में मौत भी हयात है
गुलामिये रसूल में मौत भी क़बूल है
जो हो ना इश्क़े मुस्तफ़ा तो ज़िंदगी फ़ुज़ूल है

और जब इश्क़ ज़्यादा बढ़ता है तो सारी हदों को पार कर के कुछ यूं कहते दिखाई देते हैं :

ग़ुलामे मुस्तफ़ा बन कर मैं बिक जाऊँ मदीने में
उन्ही के नाम पर सौदा सरे बाज़ार हो जाए

दूर दूर तक नज़र नहीं आते

तो कभी गुलामिये रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर मौत क़बूल करने की आरज़ू है, तो कभी इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बिग़ैर ज़िंदगी के फ़ुज़ूल होने का दावा है, तो कभी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम पर बिक जाने की बातें हैं, येह सब कुछ होने के बावजूद, जब बात आती है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नतो पर अमल करने की, जब बात आती है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दीन के लिए क़ुर्बानी देने की, जब बात आती है अपने मुआमलात की, तो दूर दूर तक नज़र नहीं आते, फिर बहाने करते हुए नज़र आते हैं और बा'ज़ तो यूं कहते हैं: भाई लोगों में रहना है तो उनके तौर तरीक़े अपनाना ही पड़ेगा।

अब कहाँ गयें हमारे दावे

अब कहाँ गयें हमारे दावे ? अब कहाँ हैं वो तराने ? क्या हुआ जनाब? अभी तो आप मर मिटने की बातें कर रहे थे, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्यारी सुन्नत दाढ़ी रखने की बात आई तो बग़लें झाँकने लगे, दीन के लिए क़ुर्बानी देने की बात आई तो पीछे खिसकने लगे, शादी की नाजाइज़ रस्मों को ख़त्म करने की बात आई तो 'पहली शादी है, ख़ुशी में तो सब चलता है' कह कर बातें बनाने लगे, येह भूल गए कि मुसलमान के यहां सिर्फ अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चलती है। क्यों ? क्योंकि क़ब्र व हश्र में अल्लाह और रसूल की चलती है, अगर हमने

दुनिया में अपनी चलाई तो एक बात याद रखें क़ब्र व हश्र में सिर्फ और सिर्फ अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ही चलेगी, वो जैसा हमारे बारे में हुक्म देंगे वही होगा।

आज हम पीछे खिसक रहे हैं, आज हम बग़लें झांक रहे हैं, अगर कल वो महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हम से रूठ गए, और हमारे क़ब्र व आख़िरत का मुआमला आगे पीछे हो गया, तब तो सारा मुआमला ही मलिया मेट हो जाएगा, **अल्लाहु अकबर !**

आईए आज अहद करते हैं

ऐ आशिक़ाने रसूल! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सहाबा की मुहब्बत के अंदाज़ से रौशनियां हासिल करते हुए आईए आज मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुज़ूर येह अहद करते हैं।

छोड़ के तेरा दामने रहमत आक़ा हमसे भूल हुई
खो दी अपनी क़द्रो क़ीमत आक़ा हमसे भूल हुई
हद से गुज़री है नादानी आपकी कोई बात ना मानी
घेरे हुए है नफ़रतो ज़िल्लत आक़ा हमसे भूल हुई
बन गये सीमो ज़र के बंदे तन के उजले मन के गंदे
छिन गई हमसे फ़क्र की दौलत आक़ा हमसे भूल हुई
देखें हमारी आँख मिचौली अपना सीना अपनी गोली
भूल गए हम दर्से अखुव्वत आक़ा हमसे भूल हुई
इल्मो अमल का रिश्ता टूटा आक़ा जब से आपका दामन छूटा
फ़िर्क़ा फ़िर्क़ा हो गई उम्मत आक़ा हमसे भूल हुई
सारी दुनिया से ठुकराए हुए तुम्हारे दर पे हैं आए हुए
आक़ा खोल दो हम पे बाबे रहमत आक़ा हमसे भूल हुई

दर्से क़ुरआन भूल गए हम आक़ा तेरा फ़रमान भूल गए हम
ले डूबी हमें माल की कसरत आक़ा हमसे भूल हुई
कौन करे इन सब का मदावा आक़ा है हमें तेरा सहारा
कर दो अपनी ख़ास इनायत आक़ा हमसे भूल हुई

उनको मनाने का, आज मौक़ा है

ऐ आशिक़ाने रसूल! सोचें आज वक़्त है उनको मनाने का, आज मौक़ा है उनसे रिश्ता जोड़ने का, अगर आज हम उन्हें ना मना सकें, अगर आज उनसे रिश्ता ना जोड़ सकें, तो कहीं ऐसा ना हो कि कल पछताना पड़े आला हज़रत अलैहि रहमा का वो शेअर याद आ गया कि:

आज ले उन की पनाह आज मदद मांग उन से
फिर ना मानेंगे क़ियामत में अगर मान गया

तो बात कहाँ से कहाँ निकल गई, ख़ैर येह भी ज़रूरी था, ताकि हम हुज़ूर ﷺ के सच्चे आशिक़ बन सकें, और हमें तो अपने आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर फख्र करना चाहिए, कि हमारे आक़ा, वो आक़ा हैं जो बाइसे तख्लीक़े कायनात हैं, हर चीज़ फख्र कर रही है, जिस शहर में मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पैदा हुए, उस शहर की ख़ुद रब्बे कायनात क़सम याद फ़रमा रहा है :

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝۱ وَ اَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝۲ (پ۳۰، البلد،۱،۲)

तर्जमए कंज़ुल ईमान : मुझे इस शहर (मक्का) की क़सम कि ऐ महबूब ! तुम इस शहर में तशरीफ़ फ़रमा हो।

ज़मीन भी फख्र करते हुए आसमान को ताना दे रही है :

ख़म हो गई पुश्ते फ़लक इस ताने ज़मीं से
सुन हम पे मदीना है वो रुत्बा है हमारा

लिहाज़ा अपने आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर हमें भी फख्र व नाज़ करना चाहिए, शायर कहता है:

दिल में फख्र का दरीचा बाज़ करना चाहिए
जिनका तू आक़ा है उनको नाज़ करना चाहिए

और अपने हर अंदाज़ को ज़माने से जुदा रखकर दुनिया वालों को यूं बताना चाहिए कि:

हम अपना अंदाज़ ज़माने से जुदा रखते हैं
क्यों ?
क्योंकि हम महबूब भी महबूबे ख़ुदा रखते हैं

जितनी भी उम्मतें गुज़रीं उनमें से किसी के नबी आदम सफीयुल्लाह अलैहिस्सलाम हुए, किसी के नबी इबराहीम खलीलुल्लाह अलैहिस्सलाम हुए, किसी के नबी मूसा कलीमुल्लाह अलैहिस्सलाम हुए, किसी के नबी ईसा रूहुल्लाह अलैहिस्सलाम हुए, दुनिया में किसी के नबी हबीबुल्लाह नहीं हुए, अल्लाह के महबूब नहीं हुए, मगर हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह पाक के महबूब हैं, इस लिए हमारे उठने बैठने का तरीक़ा ज़माने से जुदा हो, खाने पीने का अंदाज़ ज़माने से जुदा हो, रहन सहन का तरीक़ा ज़माने से अलग हो, कलाम व सलाम का अंदाज़ ज़माने से निराला हो, हर काम का अंदाज़ ज़माने से जुदा हो, और येह सब ज़माने से जुदा कब होगा? जब हमारा अंदाज़ सुन्नतें महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुताबिक़ होगा। और आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नतो से मुहब्बत, आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुहब्बत की निशानी है, और आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत, जन्नत में जाने का सबब है, चुनांचे:

जिसने मेरी सुन्नत से मुहब्बत की

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमाने जन्नत निशान है : जिसने मेरी सुन्नत से मुहब्बत की उस ने मुझसे मुहब्बत की और जिसने मुझसे मुहब्बत की वो जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مِشْكاةُ المَصابِيح ج١ ص٥٥ حديث ١٧٥ دار الكتب العلمية بيروت)

सुन्नतें आम करें दीन का हम काम करें
नेक हो जाएं मुसलमान मदीने वाले
तब्लीग़ सुन्नतो की करता रहूं हमेशा
मरना भी सुन्नतो में हो सुन्नतो में जीना

हुज़ूर ﷺ के आशिक़ तमाम मख़लूक़ है

ऐ आशिक़ाने रसूल ! अब तक जो इश्क़ की बातें हुईं वो इन्सानों की हुईं। और क्या आप को पता है कि इश्क़े रसूल इन्सानों तक महदूद नहीं इश्क़े रसूल से ना सिर्फ इन्सान सजा सवरा बल्कि दीगर मख्लूक़ात भी रौशन व मुनव्वर हुईं, अहादीस और सीरत की किताबों को पढ़ने से येह बात ज़ाहिर होती है कि जिन्नों इन्स हो या हूरो मलक, शजर व हजर या चरिंद व परिंद, चौपाए हो या हशरातुल अलग़र्ज़ अल्लाह पाक की तमाम मख्लूक़ में आशिक़ाने रसूल की लंबी फेहरिस्तें हैं, मुहब्बते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ईमान अफ़रोज़ वाक़िआत हैं, उलफ़ते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की लाज़वाल दास्तानें हैं और चाहते रसूल की ख़ूबसूरत यादें हैं।

हुज़ूरे अकरम ﷺ से क्यों मुहब्बत की जाये

ऐ आशिक़ाने रसूल ! हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से क्यों मुहब्बत की जाये? आख़िर क्या वजह है कि सारे आलम में हुज़ूर जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुहब्बत व इश्क़ का शोहरा है ? बात दर

असल येह है कि किसी से मुहब्बत व इश्क़ की जितनी भी वुजूहात हो सकती हैं और जितने भी अस्बाब मुम्किन हैं वो तमाम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ात अक़्दस में मौजूद हैं, हुस्न व जमाल हो या ज़ुहदो तक़वा, इल्मो हिकमत हो या जूदो सखा, शफ़क़त व रहमत हो या हुस्ने अख्लाक़, क़ुव्वतो ताकत हो या इल्मो अदब की तालीम, तर्बियत हो या तंज़ीम की रहनुमाई, दुनिया व आख़िरत के मसाइब को दूर करना हो या फिर इनायात व एहसानात, येह सब खूबियां और कमालात ज़ाते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में अपनी इंतिहा पर हैं तो फिर क्यों ना हर मख़लूक़ आपसे मुहब्बत करे और ख़ुद को आशिक़ाने रसूल में शामिल करे।

इश्क़े रसूल की निशानियां

ऐ आशिक़ाने रसूल! आशिक़े रसूल की कुछ अलामात व निशानियां होती हैं, हमें अपने अंदर उन निशानियों को तलाश करना चाहिए, अगर वो निशानियां हमारे अंदर मौजूद हों तो अल्लाह पाक का शुक्र अदा करना चाहिए और अगर ना हो तो उनको अपनाना चाहिए और वह निशानियां येह हैं :

(1) आशिक़े रसूल अपने महबूबे सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बे इंतिहा ताज़ीम व तकरीम करता है।

(2) वो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़िक्र कसरत से करता है।

(3) वो उन पर बकसरत दुरूदो सलाम पढ़ता है।

(4) वो अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान व अज़मत सुनकर ख़ुश होता है और चाहता है कि मज़ीद उस के सामने नबी ﷺ की शान बयान की जाये।

(5) वो अपने मुक़द्दस नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ऐब सुनना हरगिज़ गवारा नहीं करता है क्योंकि जब ऐब दार महबूब का ऐब लोग नहीं सुनते तो फिर जो हस्ती हर तरह के ज़ाहिरी व बातिनी ऐब से मुनज़्ज़ा व पाक हो तो उस का ऐब कैसे सुना जा सकता है।

(6) वो अपने महबूबे करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुलाक़ात का शौक़ रखता है।

(7) अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्यारों यानी सहाबा व अहले बैत से मुहब्बत करता है।

(8) महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की निस्बतों से प्यार करता है।

(9) प्यारे हबीब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुश्मनों से नफ़रत व अदावत रखता है।

(10) आशिक़े रसूल अपने महबूब रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत व पैरवी करता है।

जान है इश्क़े मुस्तफ़ा ﷺ

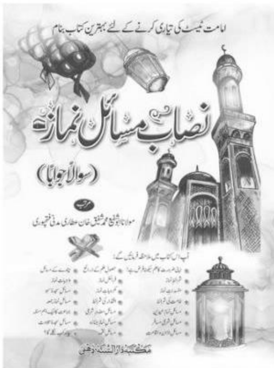
आख़िरी बात येह है कि जिस मुसलमान के दिल में इश्क़े रसूल की शमआ रौशन हो जाती है, वो मुहब्बते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जाम पी लेता है, दिन रात उसी मुहब्बत में गुज़ारता है और इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की लाज़वाल लज़्ज़त से आशना हो जाता है तो फिर बकौले आ’ला हज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान अलैहि रहमा वो अपनी ज़बाने हाले व काल से यही कहता नज़र आता है :

जान है इश्क़े मुस्तफ़ा रोज़ फ़ुज़ू करे ख़ुदा
जिसको हो दर्द का मज़ा नाज़े दवा उठाए क्यों

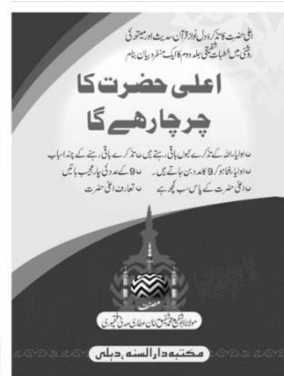
ऐ आशिक़ाने रसूल! अल्लाह पाक ने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी मख्लूक़ में सबसे बड़ा मर्तबा अता फ़रमाया है, यहां तक कि अल्लाह पाक ने अपने नाम के बाद हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम पाक **''मुह़म्मद''** और **'अह़मद'** मे वो हिकमतें, बरकतें रखी हैं कि वो हिकमतें बरकतें दुनिया के किसी नाम में नहीं पाई जाती हैं, अगर आप चाहते हैं कि वो हिकमतें और बरकतें क्या क्या हैं ? तो सगे अत्तार की किताब **'मुह़म्मद और अह़मद के राज़'** का मुतालआ कीजिए जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के 1500 वां जशने मीलाद के मौक़े पर लिखी गई है।

ऐ आशिक़ाने रसूल! अब आख़िर में अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नतो का पैकर बनने के लिए प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्यारी प्यारी सुन्नतें पेश की जाती हैं, ताकि उनको पढ़ कर हम अपने हर काम को सुन्नत के मुताबिक़ कर सकें और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नतो की बरकत हासिल कर सकें।

अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ है कि हमें अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्यारी प्यारी सुन्नतो पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और हमारे घर को सुन्नतो का गहवारा बनाए, आमीन।







प्यारे नबी ﷺ की प्यारी सुन्नतें

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ، اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

اَلصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَ عَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحَابِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَ عَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحَابِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

मेरे शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादरी रज़वी ज़ियाई दामत बरकातुहुमुल आलिया अपने रिसाले 'ज़ियाए दरूदो सलाम' मे मुसनदुल फिरदौस के हवाले से फरमाने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नक़्ल फ़रमाते हैं: मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूदे पाक पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिए नूर होगा।

(مسند الفردوس، باب الزای ا | ۴۲۲، حدیث:۳۱۴۹)

सुन्नतों पर अमल करने का सवाब

ऐ आशिक़ाने रसूल! अल्लाह पाक के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नतो पर अमल करना दुनिया व आख़िरत की ढेरों भलाइयों के हुसूल का ज़रिया है, हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक रज़ी अल्लाहु अनहु से मर्वी है कि अल्लाह पाक के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

مَنْ اَحَبَّ سُنَّتِیْ فَقَدْ اَحَبَّنِیْ وَمَنْ اَحَبَّنِیْ كَانَ مَعِیَ فِی الْجَنَّةِ

यानी जिसने मेरी सुन्नत से मुहब्बत की उसने मुझ से मुहब्बत की और जिसने मुझ से मुहब्बत की वो जन्नत में मेरे साथ होगा।

(جامع الترمذی، کتاب العلم، الحدیث۲۶۸۷، ج۴، ص۳۰۹، مطبوعہ دار الفکر بیروت)

ऐसे नाज़ुक हालात में कि जब दुनिया भर में गुनाहों की यलग़ार, ज़राए इबलाग़ में फ़ह्हाशी की भर मार और फ़ैशन परस्ती की फटकार मुसलमानों की अक्सरियत को बेअमल बना चुकी है, नीज़ इल्मे दीन से बे रग़बती और हर ख़ास व आम का रुजहान सिर्फ़ दुन्यवी तालीम की तरफ़ होने की वजह से और दीनी मसाइल से ना जानने की बिना पर हर तरफ़ जहालत के बादल मंडला रहे हैं, ला दीनियत व बद मज़हबियत का सैलाब तबाहियां मचा रहा है, गुलशने इस्लाम पर ख़िज़ां के बादल मंडला रहे हैं, हमें अपनी ज़िंदगी सुन्नतो के साँचे में ढालने की कोशिश करनी चाहिए।

हज़रत सय्यिदुना इबने अब्बास रज़ी अल्लाहु अनहुमा से मर्वी है कि अल्लाह पाक के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

مَنْ تَمَسَّكَ بِسُنَّتِيْ عِنْدَ فَسَادِ اُمَّتِيْ فَلَهٗ اَجْرُمِأَةِ شَهِيْدٍ

यानी फ़सादे उम्मत के वक़्त जो शख़्स मेरी सुन्नत पर अमल करेगा उसे सौ शहीदों का सवाब अता होगा।

(کتاب الزھد الکبیر للامام البیہقی، الحدیث۲۰۷، ج۱، ص۱۱۸، مؤسسۃ الکتب الثقافیۃ بیروت)

शहीद का मक़ाम व मर्तबा

ऐ आशिक़ाने रसूल ! हमारा जो दौर चल रहा है वो फ़सादे उम्मत का दौर है, इस दौर में जो अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक सुन्नत पर अमल करेगा यक़ीनन उसे सौ शहीदों का सवाब मिलेगा और एक शहीद का क्या मक़ाम व मर्तबा है इस के बारे में क़ुरआने पाक में अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ ﴿۱۵۴﴾

तर्जमए कंज़ुल ईमान : और जो ख़ुदा की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा ना कहो बल्कि वो ज़िंदा हैं हाँ तुम्हें ख़बर नहीं। (پ۲،البقرۃ:۱۵۴)

और पारा 4, सूरए आले इमरान में अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया:

فَالَّذِیْنَ هَاجَرُوْا وَاُخْرِجُوْا مِنْ دِیَارِهِمْ وَاُوْذُوْا فِیْ سَبِیْلِیْ وَقٰتَلُوْا وَقُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَیِّاٰتِهِمْ وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُۚ-ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِؕ-وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ(۱۹۵)

तर्जमए कंज़ुल ईमान: तो वो जिन्हों ने हिजरत की और अपने घरों से निकाले गए और मेरी राह में सताए गए और लड़े और मारे गए मैं ज़रूर उनके सब गुनाह उतार दूंगा और ज़रूर उन्हें बाग़ों में ले जाऊंगा जिन के नीचे नहरें रवां, अल्लाह के पास का सवाब और अल्लाह ही के पास अच्छा सवाब है। (پ۴،آل عمران:۱۹۵)

शहीद का सवाब

और हदीस में शहीद के सवाब के बारे में हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान मौजूद है चुनांचे :

हज़रते सय्यिदुना समुरा बिन जुन्दुब रज़ी अल्लाहु अनहु से रिवायत है कि अल्लाह पाक के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि गुज़श्ता रात मैंने देखा कि दो शख़्स मेरे पास आए और मुझे साथ लेकर एक दरख़्त के ऊपर चढ़ गए और मुझे एक बहुत ख़ूबसूरत और फ़ज़ीलत वाले घर में दाख़िल कर दिया, मैंने उस जैसा घर कभी नहीं देखा फिर उन्होंने मुझ से कहा कि 'येह शुहदा यानी शहीदों का घर है।

(بخاری،کتاب الجهاد،باب درجات المجاهدین فی سبیل اللہ،رقم ۲۷۹۱،ج۲،ص ۲۵۱)

तमाम गुनाह माफ़

हज़रते सय्यिदुना अबदुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ी अल्लाहु अनहुमा से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, सुल्ताने बहरो बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, 'क़र्ज़ के इलावा शहीद के तमाम गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं।' (مسلم، کتاب الامارۃ، باب من قتل فی سبیل اللہ الخ، رقم۱۸۸۶، ص۱۰۴۶)

अल्लाह पाक की अता और उस के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इनायत के क्या कहने, जिसको जैसे चाहें नवाज़ दें, सुन्नतो पर अमल करने वाले को घर बैठे एक, दो, तीन, दस, बीस, पचास शहीद नहीं बल्कि एक सुन्नत पर अमल करने का बदला सौ शहीदों का सवाब दिया जा रहा है, लिहाज़ा ख़ूब दिल लगा कर सुन्नतो पर अमल कीजिए और घर बैठे हर हर सुन्नत पर सौ सौ शहीदों का सवाब पाईए।

अल्लाह पाक हमें पाबंदी से प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्यारी प्यारी सुन्नतो पर मरते दम तक अमल करते रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

(1) सलाम करने की सुन्नतें और आदाब

ऐ आशिकाने रसूल! सलाम करना हमारे प्यारे आका, ताजदारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बहुत ही प्यारी सुन्नत है, बद क़िस्मती से आज कल येह सुन्नत भी ख़त्म होती नज़र आ रही है, इस्लामी भाई जब आपस में मिलते हैं तो अस्सलामु अलैकुम से इब्तिदा यानी शुरुआत करने के बजाए आदाब अर्ज़, क्या हाल है?, मिज़ाज शरीफ़, सुब्ह बखैर, शाम बखैर वग़ैरा वग़ैरा अजीबो गरीब कलिमात से इब्तिदा करते हैं, येह ख़िलाफ़े सुन्नत है, रुख़्सत होते वक़्त भी खुदा हाफ़िज़, गुडबाय, टाटा वग़ैरा कहने के बजाए सलाम करना चाहिये, हां ! रुख़्सत होते हुए सलाम करने के बाद

अगर खुदा हाफ़िज़ कह दें तो हर्ज नहीं, सलाम की चन्द सुन्नतें और आदाब मुलाहज़ा हों :

ऐ आशिकाने रसूल! पेश करदा हर हर मदनी फूल को सुन्नते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर महमूल ना फ़रमाईए, इन में सुन्नतों के इलावा बुज़ुर्गाने दीन से मन्क़ूल मदनी फूल का भी शुमूल है, जब तक यक़ीनी तौर पर मालूम ना हो किसी अमल को "सुन्नते रसूल' नहीं कह सकते।

(1) सलाम के बेहतरीन अल्फ़ाज़ येह हैं:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ

(अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु)

यानी "तुम पर सलामती और अल्लाह की रहमतें और बरकतें नाज़िल हों।"(ماخوذ از فتاویٰ رضویہ، ج۲۲، ۴۰۹)

(2) सलाम के जवाब के बेहतरीन अल्फ़ाज़ येह हैं :

وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ ـ

व अलैकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

यानी और तुम पर भी सलामती हो और अल्लाह की तरफ़ से रहमतें और बरकतें नाज़िल हो। (ماخوذ از فتاویٰ رضویہ جدید، ج۲۲، ۴۰۹)

(3) सलाम करना हज़रते सय्यिदुना आदम عليہ السلام की भी सुन्नत है। (مراۃ المناجیح، ج٦، ص ۳۱۳)

हज़रते अबू हुरैरा रज़ी अल्लाहु अनहु से मर्वी है कि हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया " जब अल्लाह पाक ने हज़रते सय्यिदुना आदम अलैहिस्सलाम को पैदा फ़रमाया तो उन्हें हुक्म दिया कि जाओ और फरिश्तो की उस बैठी हुई जमाअत को सलाम करो और ग़ौर से सुनो कि वो

तुम्हें क्या जवाब देते हैं ? क्योंकि वही तुम्हारा और तुम्हारी औलाद का सलाम है, हज़रते सय्यिदुना आदम अलैहिस्सलाम ने फ़रिश्तों से कहा: **अस्सलामु अलैकुम** तो उन्होंने जवाब दिया, **अलैकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाह** और उन्होंने व रहमतुल्लाह के अल्फाज़ ज़ाइद कहे।

(صحیح البخاری، کتاب الاستئذان، باب بدء السلام، الحدیث ۶۲۲۷، ج ۴، ص ۱۶۴)

(4) आम तौर पर मा'रूफ़ यही है कि ' अस्सलामु अलैकुम ' ही सलाम है।

मगर सलाम के दूसरे भी बा'ज़ कलिमात हैं, मिसाल के तौर पर कोई आकर सिर्फ़ कहे **'सलाम'** तो भी सलाम हो जाता है और सलाम के जवाब में, **'सलाम'** कह दिया, या, **अस्सलामु अलैकुम** ही कह दिया, या सिर्फ **व अलैकुम** कह दिया तो भी जवाब हो गया। (ماخوذ از بہارِ شریعت، حصہ ۱۶، ص ۹۳)

(5) सलाम करने से आपस में मुहब्बत पैदा होती है।

हज़रते अबू हुरैरा रज़ी अल्लाहु अनहु से मर्वी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: तुम जन्नत में दाख़िल नहीं होगे जब तक तुम ईमान ना लाओ और तुम मोमिन नहीं हो सकते जब तक कि तुम एक दूसरे से मुहब्बत ना करो, क्या मैं तुमको एक ऐसी चीज़ ना बताऊं जिस पर तुम अमल करो तो एक दूसरे से मुहब्बत करने लगो, अपने दर्मियान सलाम को आम करो।

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی افشاء السلام، الحدیث ۵۱۹۳، ج ۴، ص ۴۴۸)

(6) हर मुसलमान को सलाम करना चाहिए ख्वाह हम उसे जानते हों या ना जानते हों।

हज़रते अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस رضی اللہ عنہما से मर्वी है कि एक आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया, इस्लाम की कौन सी चीज़ सबसे बेहतर है ? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया

: येह कि तुम खाना खिलाओ (मिस्कीनों को) और सलाम कहो हर शख़्स को ख्वाह तुम उस को जानते हो या नहीं।

(صحیح البخاری، کتاب الاستئذان، باب السلام للمعرفۃ وغیر المعرفۃ، الحدیث ۶۲۳۶، ج ۴، ص ۱۶۸)

(7) बातचीत शुरू करने से पहले ही सलाम करने की आदत बनानी चाहिए।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया اَلسَّلَامُ قَبْلَ الْكَلَامِ यानी सलाम बातचीत से पहले है।

(جامع الترمذی، کتاب الاستئذان...الخ، باب ماجاء فی السلام...الخ، ج ۴، ص ۳۲۱)

(8) छोटा बड़े को, चलने वाला बैठे हुए को, थोड़े ज़्यादा को और सवार पैदल को सलाम करने में पहल करें।

सरकारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमाने आलीशान है, सवार पैदल को सलाम करे, चलने वाला बैठे हुए को, और थोड़े लोग ज़्यादा को, और छोटा बड़े को सलाम करे।

(صحیح مسلم، کتاب السلام، باب یسلم الراکب علی الماشی والقلیل علی الکثیر، الحدیث ۲۱۶۰، ص ۱۱۹۱)

(9) पीछे से आने वाला आगे वाले को सलाम करे।

(الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، باب السابع فی السلام وتشمیت العاطس، ج ۵، ص ۳۲۵)

(10) सलाम में पहल करने वाला अल्लाह पाक का मुक़र्रब है।

हज़रते अबू उमामा रज़ी अल्लाहु अनहु से मर्वी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: लोगों में अल्लाह के ज़्यादा क़रीब वही शख़्स है जो उन्हें पहले सलाम करे।

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی فضل من بدء بالسلام، الحدیث ۵۱۹۷، ج ۴، ص ۴۴۹)

(11) सलाम में पहल करने वाला तकब्बुर से बरी है।

हज़रते अब्दुल्लाह रज़ी अल्लाहु अनहु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं, फ़रमाया: पहले सलाम कहने वाला तकब्बुर से बरी है।

(شعب الایمان، باب فی مقاربۃ و موادۃ اہل الدین، الحدیث ۸۷۸۶، ج ۶، ص ۴۳۳)

(12) जब घर में दाख़िल हों तो घर वालों को सलाम किया करें, इस से घर में बरकत होती है और अगर ख़ाली घर में दाख़िल हों तो **अस्सलामु अलैका अय्युहन्नबिय्यु कहें** , यानी ऐ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आप पर सलाम हो।

हज़रत मुल्ला अली क़ारी अलैहि रहमा फ़रमाते हैं: हर मोमिन के घर में सरकारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रूह मुबारक तशरीफ़ फ़रमा होती है।(شرح شفاء، الباب الرابع، ج ۲، ص ۱۱۸)

(13) जब रूख़्सत होने लगें, उस वक़्त भी सलाम करें।

हज़रते क़तादा रज़ी अल्लाहु अनहु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जिस वक़्त तुम घर में दाख़िल हो अपने घर के लोगों को सलाम कहो, जब अपने घर वालों से निकलो तो सलाम के साथ रुख़्सत हो।(مشکوۃ المصابیح، کتاب الادب، باب السلام، الفصل الثانی، الحدیث ۴۶۵۱، ج ۲، ص ۱۲۵)

(14) मजलिस या महफ़िल में जाते और वापस आते सलाम करें।

आजकल अगर कोई किसी महफ़िल, इज्तिमा या मजलिस वग़ैरा में आकर सलाम कर भी देता है तो जाते हुए मैं चलता हूँ, ख़ुदा हाफ़िज़, अच्छा बाए बाए वग़ैरा कलिमात कहता है लिहाज़ा मजलिस के खत्म होने पर इन सब अलफ़ाज़ के बजाये सलाम किया करें, चुनांचे हज़रते अबू हुरैरा रज़ी अल्लाहु अनहु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं: जिस वक़्त तुम में से कोई किसी मजलिस की तरफ़ पहुंचे, सलाम कहे, अगर

ज़रूरत महसूस करे, वहां बैठ जाये, फिर जब खड़ा हो सलाम कहे इस लिए कि पहला सलाम दूसरे से ज़्यादा बेहतर नहीं है।

(جامع الترمذی، کتاب الاستئذان، باب ماجآء فی التسلیم عند القیام وعند القعود، الحدیث ۲۷۱۵، ج ۴، ص ۳۲۴)

(15) अगर कुछ लोग जमा हैं एक ने आकर अस्सलामु अलैकुम कहा, तो किसी एक का जवाब दे देना काफ़ी है।

अगर एक ने भी ना दिया तो सब गुनाहगार होंगे, अगर सलाम करने वाले ने किसी एक का नाम लेकर सलाम किया या किसी को मुख़ातब कर के सलाम किया तो अब उसी को जवाब देना होगा, दूसरे का जवाब काफ़ी ना होगा। (ماخوذ از بہار شریعت، سلام کا بیان، حصہ ۱۶، ص ۸۹)

हज़रते मौला अली रज़ी अल्लाहु अनहु से रिवायत है जब कोई शख़्स गुज़रते हुए सलाम कह दे और बैठने वालों में से एक शख़्स जवाब दे तो सब लोगों की तरफ़ से किफ़ायत कर जाता है।

(سنن ابی داوٗد، کتاب الادب، باب ماجآء فی رد واحد عن الجماعۃ، الحدیث ۵۲۱۰، ج ۴، ص ۴۵۲)

(16) अस्सलामु अलैकुम कहने से दस नेकियां, अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह कहने से बीस नेकियां जबकि अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू कहने से तीस नेकियां मिलती हैं।

चुनांचे हज़रते इमरान बिन हुसैन रज़ी अल्लाहु अनहु से रिवायत है कि एक आदमी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, और उसने अर्ज़ किया, अस्सलामु अलैकुम आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, दस नेकियां लिखी गई हैं, फिर दूसरा हाज़िर हुआ उसने अर्ज़ किया, अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस को जवाब दिया, वो भी बैठ गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: बीस नेकियां लिखी गई हैं, फिर एक और आदमी हाज़िरे ख़िदमत

हुआ, उसने अर्ज़ किया अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस को जवाब दिया और फ़रमाया, तीस नेकियां हैं। (جامع الترمذی، کتاب الاستئذان والادب، باب مافی فضل السلام، الحدیث ۲۶۹۸، ج ۴، ص ۳۱۵)

आला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान अलैहि रहमा फ़तावा रज़विया मे फ़रमाते हैं कम अज़ कम अस्सलामु अलैकुम और इस से बेहतर व रहमतुल्लाह मिलाना और सबसे बेहतर व बरकातुहू शामिल करना और इस पर ज़्यादा नहीं, फिर सलाम करने वाले ने जितने अल्फाज़ में सलाम किया है जवाब में उतने का इआदा तो ज़रूरी है और अफ़ज़ल येह है कि जवाब में ज़्यादा कहे, उसने अस्सलामु अलैकुम कहा तो अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह कहे और अगर उसने अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह कहा तो व अलैकुमुस्स्लाम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू कहे और अगर उसने व बरकातुहू, तक कहा तो येह भी इतना ही कहे कि इस से ज़्यादा नहीं। (فتاوی رضویہ جلد ۲۲ صَفْحَہ ۴۰۹)

(17) जो सो रहे हों उनको सलाम ना किया जाये बल्कि सिर्फ़ जागने वालों को सलाम करें।

चुनांचे हज़रते मिक़दाद रज़ी अल्लाहु अनहु से मर्वी है कि अल्लाह पाक के आखिरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात को तशरीफ़ लाते तो सलाम कहते, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सोने वालों को ना जगाते और जो जग रहे होते उनको आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सलाम इरशाद फ़रमाते, पस एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए और इसी तरह सलाम फ़रमाया जिस तरह फ़रमाया करते थे।

(صحیح مسلم، کتاب الاشربۃ، باب اکرام الضیف وفضل ایثارہ، الحدیث ۲۰۵۵، ص ۱۱۳۶)

जल्वए यार इधर भी कोई फेरा तेरा
हसरतें आठ पहर तकती हैं रस्ता तेरा

(18) ज़बान से सलाम करने के बजाये सिर्फ उंगलियों या हथेली के इशारे से सलाम ना किया जाये। (ماخوذاز بہار شریعت، حصہ ۱۶، ص ۹۲)

हज़रत अम्र बिन शुऐब अपने वालिद के वास्ते से अपने दादा रज़ी अल्लाहु अनहु से रिवायत करते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: हमारे ग़ैर से मुशाबहत पैदा करने वाला हम में से नहीं, यहूद व अंसार के मुशाबेह ना बनो, यहूदियों का सलाम उंगलियों के इशारे से है और ईसाईयों का सलाम हथेलियों के इशारे से।

(جامع الترمذی، کتاب الاستئذان، باب ماجآء فی کراہیۃ اشارۃ الید بالسلام، الحدیث ۲۷۰۴، ج ۴، ص ۳۱۹)

अगर किसी ने ज़बान से सलाम के अल्फाज़ कहे और साथ ही हाथ भी उठा दिया तो फिर मुज़ायक़ा नहीं। (احکام شریعت، ص ۱۰)

(19) सलाम इतनी ऊंची आवाज़ से करें कि जिसको किया हो वो सुन ले। (بہار شریعت، سلام کا بیان، حصہ ۱۶، ص ۹۰)

(20) सलाम का फ़ौरन जवाब देना वाजिब है, अगर बिला उज़्र ताख़ीर यानी देर की तो गुनाहगार होगा और सिर्फ जवाब देने से गुनाह माफ़ नहीं होगा, तौबा भी करनी होगी। (ردالمحتار مع در مختار، ج ۹، ص ۶۸۳)

(21) जवाब इतनी आवाज़ से देना वाजिब है कि सलाम करने वाला सुन ले। (بہار شریعت، سلام کا بیان، حصہ ۱۶، ص ۹۲)

(22) ग़ैर मुस्लिम को सलाम ना करें वो अगर सलाम करे तो उस का जवाब वाजिब नहीं, जवाब में फ़क़त 'व अलैकुम' कह दें।

(بہار شریعت، سلام کا بیان، حصہ ۱۶، ص ۹۰)

(23) सलाम करते वक़्त रुकूअ की हद तक (यानी इतना झुकना कि हाथ बढ़ाए तो घुटनों तक पहुंच जाएं) झुक जाना हराम है अगर इस से कम झुके तो मकरूह। (بہار شریعت، سلام کا بیان، حصہ ۱۶، ص ۹۲)

बद क़िस्मती से आजकल आम तौर पर सलाम करते वक़्त लोग झुक जाते हैं, अलबत्ता किसी बुज़ुर्ग के हाथ चूमने में हर्ज नहीं बल्कि सवाब है और हाथ चूमना बिग़ैर झुके मुम्किन नहीं यहां ज़रूरत है, जबकि सलाम के वक़्त झुकने की हाजत नहीं।

(24) बुढ़िया का जवाब आवाज़ से दें और जवान औरत के सलाम का जवाब इतना आहिस्ता दें कि वो ना सुने, अलबत्ता इतनी आवाज़ लाज़िमी है कि जवाब देने वाला ख़ुद सुन ले।

(بہار شریعت، سلام کا بیان، حصہ ١٦، ص٩٠)

(25) जब दो इस्लामी भाई मुलाक़ात करें तो सलाम करें और अगर दोनों के बीच में कोई पिलर, कोई दरख़्त या दीवार वग़ैरा दर्मियान में हाइल हो जाए यानी आड़ भो जाए फिर जैसे ही मिलें दुबारा सलाम करें।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ी अल्लाहु अनहु से मर्वी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जब तुम में से कोई शख़्स अपने इस्लामी भाई को मिले तो उस को सलाम करे और अगर उनके दर्मियान दरख़्त, दीवार या पत्थर वग़ैरा हाइल हो जाए और वह फिर उस से मिले तो दोबारा उस को सलाम करे।(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی الرجل یفارق الرجل....الخ، الحدیث ٥٢٠٠، ج٤، ص٤٥٠)

(26) ख़त में सलाम लिखा होता है उस का भी जवाब देना वाजिब है।

इस की दो सूरतें हैं, एक तो येह कि ज़बान से जवाब दे और दूसरा येह कि सलाम का जवाब लिख कर भेज दे लेकिन चूँकि सलाम का जवाब फ़ौरन देना वाजिब है और ख़त का जवाब देने में कुछ ना कुछ ताख़ीर यानी देर हो ही जाती है लिहाज़ा फ़ौरन ज़बान से सलाम का जवाब दे दे, आ'ला

हज़रत अलैहि रहमा जब ख़त पढ़ा करते तो ख़त में जो 'अस्सलामु अलैकुम' लिखा होता, उस का जवाब ज़बान से देकर बाद का मज़मून पढ़ते।

(ماخوذ از بہار شریعت، حصہ ۱۶، ص ۹۲)

(27) अगर किसी ने आप को कहा, फ़ुलां को मेरा सलाम कहना तो आप ख़ुद उसी वक़्त जवाब ना दे दें।

आपका जवाब देना कोई मा'ना नहीं रखता बल्कि जिसके बारे में कहा है उस से कहें कि फ़ुलां ने आपको सलाम कहा है।

(28) अगर किसी ने आपसे कहा कि फ़ुलां ने आपको सलाम कहा है तो इस सलाम का जवाब देने के चंद तरीक़े हैं :

अगर सलाम लाने वाला और भेजने वाला दोनों मर्द हों तो यूं कहें **अलैका व अलैहिस्सलाम**, अगर दोनों औरतें हो तो कहें **अलैकि व अलैहस्सलाम**, अगर पहुंचाने वाला मर्द और भेजने वाली औरत हो तो यूं जवाब दें **अलैका व अलैहस्सलाम** और अगर पहुंचाने वाली औरत हो और भेजने वाला मर्द हो तो कहीं अलैकि व अलैहस्सलाम। (इन सब का तर्जमा यही है: 'तुझ पर भी सलाम हो और उस पर भी'।

(29) जब आप मस्जिद में दाख़िल हों और इस्लामी भाई तिलावते क़ुरआन, ज़िक्रो दुरूद में मशग़ूल हों या नमाज़ के इन्तिज़ार में बैठे हों तो उनको सलाम ना करें, येह सलाम का मौक़ा नहीं ना उन पर जवाब वाजिब है। (الفتاویٰ الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، باب السابع فی السلام وتشمیت العاطس، ج۵، ص۳۲۵)

इमामे अहले सुन्नत लिखते हैं: ज़ाकिर यानी ज़िक्र करने वाले पर सलाम करना मना है और अगर कोई करे तो ज़ाकिर को इख्तियार है कि जवाब दे या ना दे, हाँ ! अगर किसी के सलाम या जाइज़ कलाम का जवाब ना देना उस की दिल शिकनी का मूजिब (यानी सबब) हो तो जवाब दे कि मुसलमान की दिलदारी वज़ीफ़ा में बात ना करने से अहम व आज़म है।

(فتاویٰ رضویہ جلد ۲۳ صفحہ ۳۹۹)

यूँही कोई इस्लामी भाई दर्स व तदरीस या इल्मी गुफ़्तगु या सबक़ की तकरार में है उनको सलाम ना करें। (بہار شریعت، سلام کا بیان، حصہ ۱۶، ص ۹۱)

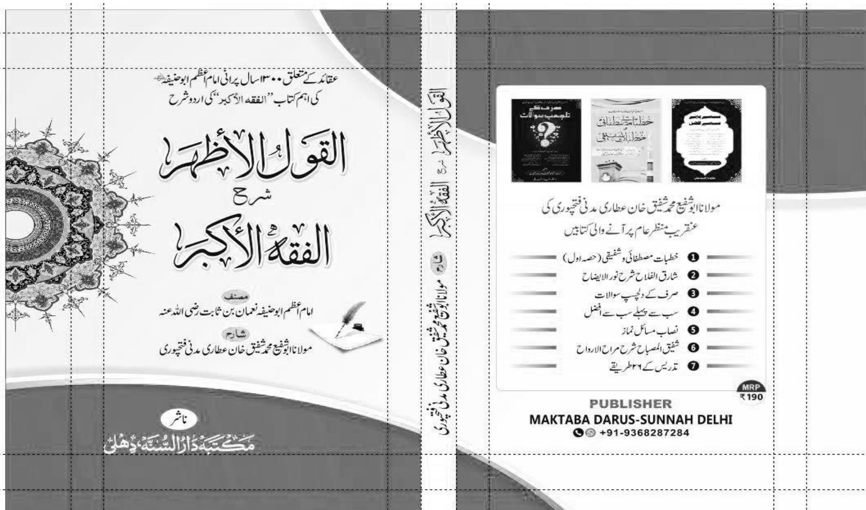
(30) जो पेशाब, पाख़ाना कर रहा है, या पेशाब करने के बाद ढेला ले कर पेशाब सुखाने के लिए टहल रहा है, ग़ुस्ल ख़ाने में बरहना यानी नंगा नहा रहा है, गाना गा रहा है, कबूतर उड़ा रहा है या खाना खा रहा है इन सबको सलाम ना करें। (بہار شریعت، سلام کا بیان، حصہ ۱۶، ص ۹۱)

खाना खाने वाले को सलाम कर दिया तो मुँह में उस वक़्त लुक़्मा नहीं तो जवाब दे दे।

(31) साइल (यानी भिकारी) के सलाम का जवाब देना वाजिब नहीं जबकि भीक मांगने की ग़र्ज़ से आया हो।

(بہار شریعت، سلام کا بیان، حصہ ۱۶، ص ۹۰)

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह हमें सलाम की बरकतो से माला माल फ़रमा कर सलाम को आम करने की तौफीक अता फरमा। आमीन



(2) मुसाफ़ा और मुआनक़ा की सुन्नतें और आदाब

ऐ आशिक़ाने रसूल! पेश करदा हर हर मदनी फूल को सुन्नतें रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर महमूल ना फ़रमाईए, इनमें सुन्नतो के इलावा बुज़ुर्गाने दीन से मनक़ूल मदनी फूल का भी शुमूल है, जब तक यक़ीनी तौर पर मालूम ना हो किसी अमल को 'सुन्नते रसूल' नहीं कह सकते।

(1) जब दो इस्लामी भाई आपस में मिलें तो पहले सलाम करें और फिर दोनों हाथ मिलाएं कि मुलाक़ात के वक़्त मुसाफ़ह़ा करना सुन्नते सहाबा रज़ी अल्लाहु अनहुम **बल्कि सुन्नते रसूल** सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम **है।** (مراٰۃ المناجیح،ج٦،ص٣٥٥)

हज़रते अबुल खत्ताब रज़ी अल्लाहु अनहु ने फ़रमाया कि मैंने हज़रते अनस रज़ी अल्लाहु अनहु से अर्ज़ किया, कि मुसाफ़हा (यानी हाथ मिलाना) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम रज़ी अल्लाहु अनहुम में मुरव्वज (यानी राइज) था ? आप रज़ी अल्लाहु अनहु ने फ़रमाया, 'हाँ।'

(صحیح البخاری،کتاب الاستیذان، باب المصافحہ،الحدیث ٦٢٦٣،ج٤،ص١٧٧)

(2) आपस में हाथ मिलाने से कीना ख़त्म होता है और एक दूसरे को तोहफ़ा देने से मुहब्बत बढ़ती और अदावत यानी दुश्मनी दूर होती है।

जैसा कि हज़रते अता खुरासानी रज़ी अल्लाहु अनहु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया: ' एक दूसरे के साथ मुसाफ़हा करो, इस से कीना जाता रहता है और हदिया यानी तोहफा भेजो आपस में मुहब्बत होगी और दुश्मनी जाती रहेगी।

(مشکوٰۃ المصابیح،کتاب الادب، باب ماجآء فی المصافحہ،الحدیث ٤٦٩٣،ج٢،ص١٧١)

(3) मुलाक़ात के वक़्त मुसाफ़हा करने वालों के लिए दुआ की क़बूलियत और हाथ जुदा होने से पहले ही मग़फ़िरत की बिशारत है।

चुनांचे हज़रते अनस रज़ी अल्लाहु अनहु से रिवायत है कि सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया : 'जब दो मुसलमानों ने मुलाक़ात की और एक दूसरे का हाथ पकड़ लिया (यानी मुसाफ़हा किया) तो अल्लाह के ज़िम्मए करम पर है कि उनकी दुआ को हाज़िर कर दे (यानी क़बूल फ़रमा ले) और हाथ जुदा ना होने पाएंगे कि उनकी मग़फ़िरत हो जाएगी और जो लोग जमा हो कर अल्लाह का ज़िक्र करते हैं और सिवाए रिज़ाए इलाही के उनका कोई मक़सद नहीं तो आसमान से मुनादी निदा देता है कि खड़े हो जाओ तुम्हारी मग़फ़िरत हो गई, तुम्हारे गुनाहों को नेकियों से बदल दिया गया।" (المسند للامام احمد بن حنبل، مسند انس بن مالک، الحدیث ۱۲۴۵۴، ج ۴، ص ۲۸۶)

रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया : "जब दो दोस्त आपस में मिलते हैं और मुसाफ़हा करते हैं और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूदे पाक पढ़ते हैं तो उन दोनों के जुदा होने से पहले पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख्श दिए जाते हैं।'

(شعب الایمان، باب فی مقاربۃ وموادۃ اہل الدین، فصل فی المصافحۃ والمعانقۃ، الحدیث ۸۹۴۴، ج ۶، ص ۴۷۱)

(4) सबसे पहले यमनी इस्लामी भाईयों ने सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम **से मुसाफ़हा करने (यानी हाथ मिलाने) का शर्फ़ हासिल किया।**

चुनांचे हज़रते अनस रज़ी अल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं कि जब अहले यमन मदनी सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत बा बरकत में हाज़िर हुए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "तुम्हारे पास अहले यमन आए हैं और वो पहले आदमी हैं, जिन्हों ने आकर मुसाफ़हा किया।

(سنن ابی داوٗد، کتاب الادب، باب فی المصافحہ، الحدیث ۵۲۱۳، ج۴، ص ۴۵۳)

(5) ख़ुशी में किसी से गले मिलना सुन्नत है। (مراٰۃ المناجیح، ج۶، ص۳۵۹)

हज़रते आईशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहु अनहा फ़रमाती हैं ज़ैद बिन हारिस रज़ी अल्लाहु अनहु मदीना आए और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे घर में थे, ज़ैद रज़ी अल्लाहु अनहु वहां आए और दरवाज़ा खटखटाया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उठकर कपड़ा खींचते हुए उनकी तरफ़ तशरीफ़ ले गए, उनसे मुआनक़ा किया (यानी गले मिले और उनको बोसा दिया।

(جامع الترمذی، کتاب الاستئذان، باب ماجآء فی المعانقۃ والقبلۃ، الحدیث ۲۷۴۱، ج۴، ص ۳۳۵)

(6) दोनों हाथों से मुसाफ़हा करें। (بہارِ شریعت، حصہ ۱۶، ص۹۸)

(7) जितनी बार मुलाक़ात हो हर बार मुसाफ़हा करना मुस्तहब है। (بہارِ شریعت، حصہ ۱۶، ص۹۷)

(8) रुख्सत होते वक़्त भी मुसाफ़हा करें।

(9) फ़क़त उंगलियों के छूने का नाम मुसाफ़हा नहीं है सुन्नत येह है कि दोनों हाथों से मुसाफ़हा किया जाये और दोनों के हाथों के दर्मियान कपड़ा वग़ैरा कोई चीज़ हाइल ना हो। (بہارِ شریعت، حصہ ۱۶، ص۹۸)

(10) मुस्कुरा कर गर्म जोशी से मुसाफ़हा करें, दुरूद शरीफ़ पढ़ें और हो सके तो येह दुआ भी पढ़ें 'يَغْفِرُ اللهُ لَنَا وَلَكُمْ' 'यगफिरूल्लाहु लना वला कुम (यानी अल्लाह हमारी और तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाए)

(11) हर नमाज़ के बाद लोग आपस में मुसाफ़हा करते हैं येह जाइज़ है। (ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ج۹، ص ۶۸۲)

(12) गले मिलने को मुआनक़ा कहते हैं और येह भी सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम **से साबित है।** (بہارِ شریعت، سلام کا بیان، حصہ ۱۶، ص۹۸)

(13) सिर्फ तहबंद बांध कर या पाजामा पहने हो उस वक़्त मुआनक़ा ना करें बल्कि कुर्ता पहना हुआ हो या कम अज़ कम चादर लिपटी हुई होनी चाहिये।(بہار شریعت، سلام کا بیان، حصہ ۱۶، ص۹۸)

(14) दोनों ईदों में मुआनक़ा करना जाइज़ है।

(بہار شریعت، سلام کا بیان، حصہ ۱۶، ص۹۰)

(15) आलिमे दीन के हाथ पांव चूमना जाइज़ है।

(بہار شریعت، حصہ ۱۶، ص۹۹)

(16) मुसाफ़हा करने के बाद अपना ही हाथ चूम लेना मकरूह है। (بہار شریعت، حصہ ۱۶، ص۹۹)

(17) वालिदैन के हाथ पांव भी चूम सकते हैं।

(18) आलिमे बा अमल और नेक इस्लामी भाई की आमद पर ताज़ीम के लिए खड़ा हो जाना जाइज़ बल्कि मुस्तहब है।

मगर वो आलिम या नेक शख़्स बज़ाते ख़ुद अपने आपको ताज़ीम का अहले तसव्वुर ना करे और येह तमन्ना ना करे कि लोग मेरे लिए खड़े हो जाया करें, और अगर कोई ताज़ीमन खड़ा ना हो तो हरगिज़ हरगिज़ दिल में कुदूरत (यानी मैल) ना लाएं। (ماخوذ از فتاویٰ رضویہ، ج۲۳، ص۷۱۹)

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह! हमें इख्लास और खुश दिल्ली के साथ हर मुसलमान को सलाम करने और उनके साथ ख़ंदा पेशानी के साथ मुसाफ़हा करने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ मर्हमत फ़रमा। आमीन।

(3) बातचीत करने की सुन्नतें और आदाब

ऐ आशिक़ाने रसूल ! इस ज़िंदगी में हमें हर वक़्त बातचीत करने की ज़रूरत पड़ती रहती है, बल्कि हम लोग बिला ज़रूरत भी हर वक़्त बोलते रहते हैं हालाँकि येह बिला ज़रूरत बोलना बहुत ही नुक़्सान देह है ग़ैर ज़रूरी गुफ़्तगू करने से ख़ामोश रहना अफ़ज़ल है, लिहाज़ा हमारे प्यारे मदनी आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बातचीत के सिल्सिले में सुन्नतें और आदाब और ख़ामोशी के फ़ज़ाइल वग़ैरा यहां पर बयान किए जाते हैं।

(1) अल्लाह पाक के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम **गुफ़्तगु इस तरह दिल नशीन अंदाज़ में ठहर ठहर कर फ़रमाते कि सुनने वाला आसानी से याद कर लेता।**

चुनांचे उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदा आईशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहु अनहु फ़रमाती हैं कि सरकार दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम साफ़ साफ़ और जुदा जुदा कलाम फ़रमाते थे, हर सुनने वाला उस को याद कर लेता था।(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عائشۃ،الحدیث ۲۶۲۶۹،ج۱۰،ص۱۱۵)

(2) मुस्कुरा कर और ख़ंदा पेशानी से बातचीत कीजिए, छोटों के साथ मुशफ़िक़ाना और बड़ों के साथ मुअद्दबाना लहजा रखिए। इंशाअल्लाह दोनों के नज़दीक आप मुअज़्ज़ज़ रहेंगे।

(3) चिल्ला चिल्ला कर बात करना जैसा कि आज कल बे तकल्लुफ़ी में दोस्त आपस में करते हैं, मायूब ना पसंदीदा है।

(4) दौराने गुफ़्तगू एक दूसरे के हाथ पर ताली देना ठीक नहीं क्योंकि ताली, सीटी बजाना महज़ खेल कूद, तमाशा और कुफ़्फ़ार का तरीक़ा है।

(5) बातचीत करते वक़्त दूसरे के सामने बार बार नाक या कान में उंगली डालना, थूकते रहना अच्छी बात नहीं, इस से दूसरों को घिन आती है।

(6) जब तक दूसरा बात कर रहा हो, इत्मिनान से सुनें, उस की बात काट कर अपनी बात शुरू ना कर दें।

(7) कोई हकला कर बात करता हो तो उस की नक़्ल ना उतारें कि इस से उस की दिल आज़ारी हो सकती है।

(8) बातचीत करते हुए क़हक़हा ना लगाऐं।

कि सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी क़हक़हा नहीं लगाया (क़हक़हा यानी इतनी आवाज़ से हँसना कि दूसरों तक आवाज़ पहुंचे, ज़्यादा बातें करने और बार बार क़हक़हा लगाने से वक़ार भी मजरूह होता है।

(9) कम बोलने वाले की सोहबत में बैठें।

कि सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमाने आलीशान है 'जब तुम किसी दुनिया से बे रग़बत शख़्स को देखो और उसे कम गो यानी कम बोलने वाला पाओ तो उस के पास ज़रूर बैठो क्योंकि उस पर हिक्मत का नुज़ूल होता है।' (سنن ابن ماجہ، کتاب الزہد، باب الزہد فی الدنیا، الحدیث ۴۱۰۱، ج ۴، ص ۴۲۲)

(10) हदीसे पाक में है 'जो चुप रहा उसने नजात पाई।'

(جامع الترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، باب (نمبر ۵) الحدیث ۲۵۰۹، ج ۴، ص ۲۲۵)

(11) किसी से जब बातचीत की जाये तो उस का कोई सही मक़सद भी होना चाहिए और हमेशा मुख़ातब के ज़र्फ़ और उस की नफ़्सियात के मुताबिक़ बात की जाये।

जैसा कि कहा जाता है, "كَلِّمُوا النَّاسَ عَلٰى قَدْرِ عُقُوْلِهِمْ" (यानी लोगों से उनकी अक़्लों के मुताबिक़ कलाम करो) यानी इस तरह की बातें ना की

जाएं कि दूसरों की समझ में ना आएं, अल्फाज़ भी सादा साफ़ साफ़ हों, मुश्किल तरीन अल्फाज़ भी इस्तिमाल ना किए जाएं कि इस तरह अगले पर आपकी इल्मियत की धाक तो बैठ जाएगी मगर लेकिन आप का मक़सद समझ ना आएगा।

(12) अपनी ज़बान को हमेशा बुरी बातों से रोके रखें।

हज़रते उक़बा बिन आमिर रज़ी अल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नजात क्या है ? फ़रमाया: 'अपनी ज़बान को बुरी बातों से रोके रखो।

(جامع الترمذی، کتاب الزہد، باب ماجاء فی حفظ اللسان، الحدیث ۲۴۱۴، ج ۴، ص ۱۸۲)

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह! हमें गुफ़्तगु करने की सुन्नतो और आदाब पर अमल करने की तौफ़ीक़ मर्हमत फ़रमा। आमीन।

(4) घर में आने जाने की सुन्नतें और आदाब

ऐ आशिक़ाने रसूल! हमें हर रोज़ अपने या किसी अज़ीज़ या दोस्त व अहबाब के घर में जाने की हाजत पड़ती रहती है तो हमें येह मालूम होना चाहिए कि घर में दाख़िल होने का सुन्नत तरीक़ा क्या है? किसी के घर में जाएं तो दरवाज़े के सामने खड़े हों या एक तरफ़ हट कर? और किस तरह इजाज़त तलब करें ? अगर इजाज़त ना मिले तो क्या करना चाहिए ? दुआ पढ़ कर घर से निकलने की क्या क्या बरकतें हैं ? अगर घर में कोई मौजूद ना तो क्या पढ़ना चाहिये ? घर में दाख़िल होने और इजाज़त तलब करने वग़ैरा के हवाले से कई सुन्नतें और आदाब हैं :

(1) अपने घर में आते हुए भी सलाम करें और जाते हुए भी सलाम करें।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान है: कि जब तुम घर में आओ तो घर वालों को सलाम करो और जाओ तो सलाम कर के जाओ।

(شعب الایمان، باب فی مقاربۃ و......الخ، فصل فی السلام من خرج من بیتہ، الحدیث ۸۸۴۵، ج۶، ص ۴۴۷)

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी अलैहि रहमा फ़रमाते है: बाज़ बुज़ुर्गों को देखा गया है कि अव्वल दिन में जब पहली बार घर में दाख़िल होते तो बिस्मिल्लाह और क़ुल हुवल्लाहु अहद (पूरी सूरत) पढ़ लेते, कि इस से घर में इत्तिफ़ाक़ भी रहता है और रिज़्क़ में बरकत भी।(مرأۃ المناجیح جلد۶ صفحہ۹)

(2) अल्लाह का नाम लिए बिग़ैर जो घर में दाख़िल होता है, शैतान भी उस के साथ घर में दाख़िल हो जाता है।

जैसा कि हज़रते जाबिररज़ी अल्लाहु अनहुसे रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जब आदमी घर में दाख़िल होते वक़्त और खाना खाते वक़्त अल्लाह पाक का ज़िक्र करता है तो शैतान

कहता है: आज यहां ना तुम्हारी रात गुज़र सकती है और ना तुम्हें खाना मिल सकता है। और जब इन्सान घर में बिग़ैर अल्लाह पाक का ज़िक्र किए दाख़िल होता है तो शैतान कहता है, आज की रात यहीं गुज़रेगी और जब खाने के वक़्त अल्लाह पाक का नाम नहीं लेता तो वो कहता है: तुम्हें ठिकाना भी मिल गया और खाना भी मिल गया।

(صحیح مسلم، کتاب الاشربة۔باب آداب الطعام والشراب واحکامها، الحدیث۲۰۷۸، ج۴، ص۱۱۱٦)

(3) जब कोई ख़ुश नसीब अपने घर से बाहर जाते वक़्त बाहर जाने की दुआ पढ़ लेता है तो वो घर लौटने तक हर बला और आफ़त से महफ़ूज़ हो जाता है।

हज़रते अबू हुरैरा रज़ी अल्लाहु अनहु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया: आदमी अपने घर के दरवाज़े से बाहर निकलता है तो उस के साथ दो फ़रिश्ते मुक़र्रर होते हैं, जब वो आदमी कहता है कि बिस्मिल्लाह तो वो फ़रिश्ते कहते हैं तूने सीधी राह इख़्तियार की और जब इन्सान कहता है, لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ (ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह) तो फ़रिश्ते कहते हैं अब तू हर आफ़त से महफ़ूज़ है, जब बंदा कहता है تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ (तवक्कल्तु अलल्लाह)तो फ़रिश्ते कहते हैं, अब तुझे किसी और की मदद की हाजत नहीं, उस के बाद उस शख़्स के दो शैतान जो उस पर मुसल्लत होते हैं वो उस से मिलते हैं फ़रिश्ते कहते हैं अब तुम उस के साथ क्या करना चाहते हो? उसने तो सीधा रास्ता इख़्तियार किया, तमाम आफ़ात से महफ़ूज़ हो गया और ख़ुदा की इमदाद के इलावा दूसरे की इमदाद से बे नयाज़ हो गया।

(سنن ابن ماجه، کتاب الدعاء، باب مایدعوبه الرجل اذاخرج من بیته، الحدیث۳۸۸٦، ج۴، ص۲۹۲)

(4) जब किसी के घर जाना हो तो उस का तरीक़ा येह है कि पहले अंदर आने की इजाज़त हासिल कीजिए फिर जब अंदर जाएं तो पहले सलाम करें फिर बातचीत शुरू कीजिए।

(ملخصاً بہار شریعت، حصہ ١٦، ص ٨٣)

हज़रते अबू मूसा अशअरी रज़ी अल्लाहु अनहु से मर्वी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: तीन मर्तबा इजाज़त तलब करो अगर इजाज़त मिल जाये तो ठीक वर्ना वापस लौट जाओ।

(صحیح مسلم، کتاب الاستئذان والادب، الحدیث ٢١٥٣، ص ١١٨٦)

(5) जो सलाम किए बिगैर घर में दाख़िले की इजाज़त मांगे उसे दाख़िले की इजाज़त ना दी जाये।

हज़रते जाबिर रज़ी अल्लाहु अनहु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जो शख़्स सलाम के साथ इब्तिदा ना करे उस को इजाज़त ना दो। (شعب الایمان للبیہقی، باب فی مقاربۃ و موادۃ اہل الدین، فصل فی الاستئذان الحدیث ٨٨١٦، ج ٦، ص ٤٤١)

(6) जब किसी के घर जाना हो इजाज़त माँगना सुन्नत है, बेहतर येह है कि इस तरह इजाज़त मांगें "अस्सलामु अलैकुम" क्या मैं अंदर आ सकता हूँ ?

हज़रते रिबई बिन हराश रज़ी अल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं, हमें बनू आमिर के एक शख़्स ने येह बात बताई कि उसने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इजाज़त तलब की, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घर में तशरीफ़ फ़रमा थे, उसने अर्ज़ किया क्या मैं दाख़िल हो जाऊं? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने ख़ादिम से फ़रमाया बाहर उस आदमी के पास जाओ और इस को इजाज़त तलब करने का तरीक़ा सिखाओ, उस से कहो कि इस तरह कहे, अस्सलामु अलैकुम, क्या मैं दाख़िल हो सकता हूँ ? उस आदमी ने सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद सुन लिया और अर्ज़ किया, अस्सलामु

अलैकुम क्या मैं दाख़िल हो सकता हूँ ? तो सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस को इजाज़त अता फ़रमाई और वो अंदर दाख़िल हुआ।

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب کیف الاستئذان، الحدیث ۵۱۷۷، ج ۴، ص ۴۴۳)

अगर कोई शख़्स आपको बुलाने के लिए भेजे और भेजा हुआ शख़्स आपको साथ लेकर जाये तो अब इजाज़त लेने की ज़रूरत नहीं, साथ वाला शख़्स ही ख़ुद 'इजाज़त' है।

(7) अपनी मौजूदगी का एहसास दिलाने के लिए खंकारना चाहिए।

जैसा कि मौलाए कायनात हज़रते अली रज़ी अल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत बा बरकत में एक मर्तबा रात के वक़्त और एक मर्तबा दिन के वक़्त हाज़िर होता था, जब मैं रात के वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास हाज़िरी देता आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे लिए खंकारते।

(سنن ابن ماجہ، کتاب الادب، باب الاستئذان، الحدیث ۳۷۰۸، ج ۴، ص ۲۰۶)

(8) जब कोई किसी के घर जाये तो अंदर से जब कोई दरवाज़े पर आए तो पूछे कौन है ? बाहर वाला 'मैं' ना कहे जैसा कि आजकल भी यही रिवाज है, बल्कि अपना नाम बताए, जवाब में ' मैं ' कहना सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम **को पसंद नहीं।**

(صحیح البخاری، کتاب الاستئذان، باب اذا قال من ذافقال انا، الحدیث ۶۲۵۰، ج ۴، ص ۱۷۱)

जैसा कि हज़रते जाबिर रज़ी अल्लाहु अनहु से मर्वी है फ़रमाया: मैं आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और दरवाज़ा खटखटाया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कौन है ? मैंने अर्ज़ की "मैं"आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया मैं, मैं क्या ? गोया आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस को नापसंद फ़रमाया।

(صحیح البخاری، کتاب الاستئذان، باب اذا قال من ذا فقال انا، الحدیث ۶۲۵۰، ج۴، ص۱۷۱)

(9) किसी के घर में झांकना नहीं चाहिए।

जैसा कि हज़रते अनस रज़ी अल्लाहु अनहु से रिवायत है, रसूले अकरम, सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ाना ए अक़्दस यानी अपने मुकद्दस घर में तशरीफ़ फ़रमा थे, कि एक शख़्स ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को झाँका तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नेज़े की नोक उस की तरफ़ की चुनांचे वो पीछे हट गया।(جامع الترمذی، کتاب الاستئذان، باب من اطلع فی دار قوم بغیر اذنھم، الحدیث ۲۷۱۷، ج۴، ص۳۲۵)

(10) घर के इंतिज़ामात पर बेजा तन्क़ीद ना करें जिससे मेज़बान की दिल आज़ारी हो यानी उस का दिल दुखे।

हाँ ! अगर नाजाइज़ बात देखें मिसाल के तौर पर: जानदारों की तसावीर वग़ैरा लटकी हों तो अच्छे तरीक़े से समझा दें, हो सके तो कुछ ना कुछ तोहफ़ा पेश करें ख्वाह कितना ही कम क़ीमत हो, मुहब्बत बढ़ेगी।

(11) जो कुछ खाने पीने को पेश किया जाये, कोई सही मजबूरी ना हो तो ज़रूर क़बूल करें, नापसंद हो जब भी मुँह ना बिगाड़ें कि मेज़बान की दिल शिकनी होगी।

(12) वापसी पर अहले ख़ाना के हक़ में दुआ भी करें और शुक्रिया भी अदा करें।

(13) सलाम करने के बाद रुख्सत हों।

(14) जब घर में दाख़िल हों तो येह दुआ पढ़ें।

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ خَیْرَالْمَوْلَجِ وَ خَیْرَالْمَخْرَجِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ وَلَجْنَا وَبِسْمِ اللّٰهِ خَرَجْنَا
وَعَلَی اللّٰهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا

अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका, खैरल मौ,लजि व खैरल मखरजि, बिस्मिल्लाहि व लज्ना व बिस्मिल्लाहि खरजना, व अलल्लाहि रब्बिना तवक्कल्ना।

(15) जब घर से बाहर निकलें तो येह दुआ पढ़ें :

بِسْمِ اللّٰہِ تَوَکَّلْتُ عَلَی اللّٰہِ لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ

बिस्मिल्लाहि तवक्कल्तु अलल्लाह, ला हौला व ला कुव्वता इल्ला बिल्लाह।

तर्जमा : अल्लाह के नाम से, अल्लाह ही की तरफ़ से ताक़त व क़ुव्वत है अल्लाह ही के भरोसे पर। (مشکوۃ المصابیح، الحدیث ۲۴۴۳، ج۱، ۴۵٦)

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह! हमें घर में आने जाने की सुन्नतो पर अमल करने की तौफ़ीक़ मर्हमत फ़रमा, आमीन।

(5) सफ़र की सुन्नतें और आदाब

ऐ आशिक़ाने रसूल! अक्सर व बेशतर हमें सफ़र की ज़रूरत पेश आती रहती है बल्कि बहुत से ख़ुशनसीब इस्लामी भाईयों को तो अल्लाह पाक की राह में आशिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने की भी सआदत मिलती है, लिहाज़ा हम कोशिश कर के सफ़र की भी कुछ ना कुछ सुन्नतें और आदाब सीख लें ताकि उन पर अमल कर के हम अपने सफ़र को भी सवाब हासिल करने का ज़रिया बना सकें।

(1) मुम्किन हो तो जुमेरात को सफ़र की इब्तिदा यानी शुरुआत की जाये कि जुमेरात को सफ़र की इब्तिदा करना सुन्नत है।

(اشعۃاللمعات، ج۵، ص۱۶۱)

चुनांचे हज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मालिक रज़ी अल्लाहु अनहु से मर्वी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ग़ज़वए तबूक के लिए जुमेरात के दिन रवाना हुए और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जुमेरात के दिन रवाना होना पसंद फ़रमाते थे।(صحیح البخاری، کتاب الجهاد، باب من اراد غزوۃفوَرّی....الخ،الحدیث ۲۹۵۰، ج۲، ص۲۹۶)

(2) अगर सहूलत हो तो रात को सफ़र किया जाये कि रात को सफ़र जल्द तै होता है।

हज़रते सय्यिदुना अनस रज़ी अल्लाहु अनहु हैं, सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:रात को सफ़र किया करो, क्योंकि रात को ज़मीन लपेट दी जाती है।(سنن ابی داوٗد، کتاب الجهاد، باب فی الدرجۃ،الحدیث ۲۵۷۱، ج۳، ص۴۰)

(3) अगर चंद इस्लामी भाई मिलकर क़ाफ़िले की सूरत में सफ़र करें तो किसी एक को अमीर बना लें।

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा रज़ी अल्लाहु अनहु रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जब तीन आदमी सफ़र पर रवाना हों तो वो अपने में से एक को अमीर बना लें।

(سنن ابی داوٗد، کتاب الجھاد، باب فی القوم یسافرون۔۔۔۔۔۔الخ، الحدیث۲۶۰۹،ج۳، ص۵۱، ۵۲)

(4) चलते वक़्त अज़ीज़ों, दोस्तों से क़ुसूर माफ़ करवाईये और जिनसे माफ़ी तलब की जाये उन पर लाज़िम है कि दिल से माफ़ कर दें। (بہارِ شریعت، حصہ ۶، ص۱۹)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा रज़ी अल्लाहु अनहु से मर्वी है कि हुज़ूर सरकारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जिसके पास उस का भाई माज़िरत के लिए आए तो वो उस का उज़्र क़बूल करे, ख्वाह हक़ पर हो या बातिल पर, जो ऐसा ना करे वो मेरे हौज़ पर नहीं आएगा।

(المستدرک للحاکم، کتاب البر والصلۃ، باب برّوا اباکم تبرکم....الخ، الحدیث، ۷۳۴۰، ج۵، ص۲۱۳)

(5) सफर का लिबास पहन कर अगर मकरूह वक़्त ना हो तो घर में चार रकअत नफ़ल"अलह़म्दु व क़ुल" से पढ़ कर बाहर निकलें, वो रकअतें वापसी तक अहल व माल की निगेहबानी करेंगी।

फिर अपनी मस्जिद से रुख्सत हों, अगर मकरूह वक़्त ना हो तो इस में भी दो रकअत नफ़ल पढ़ लें।

(6) हम जब भी सफ़र पर रवाना हों तो हमें चाहिए कि हम अपने अहल व माल को अल्लाह पाक के हवाले कर के जाएं।

अल्लाह पाक ही सब से बेहतर हिफ़ाज़त करने वाला है, बल्कि हो सके तो अपने घर वालों को येह कलिमात कह कर सफ़र पर रवाना हों :

اَسْتَوْدِعُكَ اللهَ الَّذِیْ لَایُضِیْعُ وَدَائِعَهٗ

अस्तौ दिउ कल्लाह अल्लज़ी ला यूजीउ वदा ईअहू।

तर्जमा : मैं तुमको अल्लाह के हवाले करता हूँ जो सौंपी हुई अमानतो को ज़ाएअ नहीं करता।'

(سنن ابن ماجہ، کتاب الجھاد، باب تشییع الغزوۃ ووداعھم، الحدیث، ۲۸۲۵، ج۳، ص۳۷۲)

(7) तिजारत का सफर करने वाले इस्लामी भाईयों को चाहिये कि येह पाँच सूरतें पढ़ लिया करें :

(1)قُلْ يٰاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ (2)اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ

(3)قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ (4)قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ

(5)قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन मुतइम रज़ी अल्लाहु अनहु से फ़रमाया: ऐ ज़ुबैर! रज़ी अल्लाहु अनहु क्या तुम चाहते हो कि जब तुम सफ़र में जाओ तो अपने साथियों में बेहतर और तोशए सफ़र में बढ़कर रहो। (यानी सफ़र में ख़ुशहाली और फ़ारिगुल बाली नसीब हो) आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: येह पाँच सूरतें पढ़ लिया करो :

(1)قُلْ يٰاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ (2)اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ

(3)قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ (4)قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ

(5)قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ

हर सूरत को 'बिस्मिल्ल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम' से शुरू करो और उसी पर ख़त्म करो। (इस तरह इन पाँच सूरतों के साथ बिस्मिल्लाह शरीफ़ छ: बार पढ़ी जाएगी)।

हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर रज़ी अल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं कि मैंने उनको पढ़ना शुरू किया तो मैं पूरे सफ़र में वापसी तक अपने साथियों में सबसे ज़्यादा ख़ुशहाल और तोशए सफ़र में फ़ारिगुल बाल रहने लगा।

(کنز العمّال، کتاب السفر، فصل فی آداب الوراع، آداب متفرقۃ، الحدیث ۱۷۴۵۰، ج۶، ص ۳۱۴)

(8) ट्रेन या बस वग़ैरा में बिस्मिल्लाह, अल्लाहु अकबर, और सुब्ह़ानल्लाह तीन तीन बार, ला इलाहा इल्लल्लाह एक बार फिर सफर की दुआ पढ़े:

سُبْحٰنَ الَّذِیْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِیْنَ ﴿۱۳﴾ وَاِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ﴿۱۴﴾

तर्जमए कंज़ुल ईमान: पाकी है उसे जिसने इस सवारी को हमारे बस में कर दिया और येह हमारे बूते (यानी क़ाबू) की ना थी और बे शक हमें अपने रब की तरफ़ पलटना है। (پ۲۵، الزخرف ۱۴،۱۳)

(فتاوی رضویہ تخریج شدہ، ج۱۰، ص۷۲۸)

(9) जब कश्ती में सवार हों तो येह दुआ पढ़ें, इंशा अल्लाह डूबने से महफ़ूज़ रहेंगे :

بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖهَا وَمُرْسٰهَا اِنَّ رَبِّیْ لَغَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۴۱﴾

तर्जमा : अल्लाह के नाम पर इस का चलना और इस का ठहरना बे शक मेरा रब ज़रूर बख्शने वाला मेहरबान है।

(فتاوی رضویہ تخریج شدہ، ج۱۰، ص۷۲۹)

(10) सफ़र के दौरान ज़िक्रुल्लाह करते रहें, ट्रेन या बस वग़ैरा में बिस्मिल्लाह, अल्लाहु अकबर, अल्ह़म्दुलिल्लाह और सुब्ह़ानल्लाह सब तीन तीन बार, ला इलाहा इल्लल्लाह एक बार।

ऐ आशिक़ाने रसूल! जब कभी सफ़र पर जाएं तो ज़िक्र व दुरूद का विर्द रखें या इस अज़ीम मक़सद को पेशे नज़र रखते हुए इन्फ़िरादी कोशिश करते रहें कि मुझे अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है। अगर हम सफर के दौरान ज़िक्रुल्लाह में मसरूफ़ रहेंगे तो फ़रिश्ता रास्ते भर हिफ़ाज़त करेगा और अगर मआज़ल्लाह गाने बाजे सुनते रहे या फ़ुज़ूल ठट्ठा मसखरी करते रहे तो शैतान सफर में शरीक

होगा जैसा कि , हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जो शख़्स सफ़र के दौरान अल्लाह की तरफ़ तवज्जोह रखे और उस के ज़िक्र में मशग़ूल रहे, अल्लाह उस के लिए एक फ़रिश्ता मुहाफ़िज़ मुक़र्रर कर देता है और जो बेहूदा शेअर व शाइरी और फ़ुज़ूल बातों में मसरूफ़ रहे तो अल्लाह उस के पीछे एक शैतान लगा देता है। (الحصن الحصین، کتاب ادعیۃ السفر، ص ۸۳)

(11) जब कभी क़ाफ़िले की सूरत में सफ़र पर जाएं तो मिल जुल कर एक ही जगह उतरें।

क्योंकि हज़रते सय्यिदुना अबू सालिबा रज़ी अल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं कि लोग जब मंज़िल पर उतरते तो मुंतशिर हो कर ठहरते थे, सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: तुम्हारा मुंतशिर हो कर ठहरना शैतान की जानिब से है। इस के बाद सहाबए किराम रज़ी अल्लाहु अनहुम जब कभी किसी मंज़िल पर उतरते तो मिल कर ठहरते।

(سنن ابی داؤد، کتاب الجہاد، باب مایؤمر من انضمام العسکر، الحدیث ۲۶۲۸، ج ۳، ص ۵۸)

(12) सफर के दौरान अगर कोई हाजत मंद मिल जाये तो उस की हाजत रवाई यानी मदद करनी चाहिए।

इंशा अल्लाह इस में सवाब ज़्यादा होगा कि बसा अवक़ात मुसाफ़िर ख़ुद भी तो हाजत मंद हो जाता है फिर भी वो दूसरों की मदद करेगा तो उस के अज्रो सवाब का कौन अंदाज़ा कर सकता है ? हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी रज़ी अल्लाहु अनहु से रिवायत है, हम एक सफ़र में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ थे कि एक आदमी अपनी सवारी पर आया और दाएं बाएं उसे फिराने लगा तो मदनी ताजदार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जिसके पास फ़ालतू सवारी है तो वो उसे दे दे जिसके पास सवारी नहीं है और जिस के पास फ़ालतू ज़ादे राह हो तो वो उस को दे

दे जिसके पास ज़ादे राह नहीं है, यहाँ तक कि हमने येह महसूस किया कि हम में से किसी का फ़ालतू माल पर कोई हक़ नहीं है।

(سنن ابوداؤد، کتاب الزکوة، باب فی حقوق المال، ج۲، الحدیث ۱۶۶۳، ص۱۷۵)

(13) जब सीढ़ियों पर चढ़ें या ऊंची जगह की तरफ़ चलें तो 'अल्लाहु अकबर' और जब सीढ़ियों से उतरें या ढलान की तरफ़ चलें तो 'सुब्ह़ानल्लाह' कहें कि सुन्नत है।

हज़रते सय्यिदुना जाबिर रज़ी अल्लाहु अनहु से मर्वी है, फ़रमाया: जब हम बुलंदी पर चढ़ते तो "अल्लाहु अकबर" कहते और जब पस्त (ढलान वाली) जगह पर उतरते तो "सुब्ह़ानल्लाह" कहते थे।'

(صحیح البخاری، کتاب الجہاد والسیر، باب التکبیر اذاعلا شرفاً، الحدیث ۲۹۹۴، ج۲، ص۳۰۷)

(14) मुसाफ़िर को चाहिए कि वो दुआ से ग़फ़लत ना करे कि येह जब तक सफ़र में है इस की दुआ क़बूल होती है बल्कि जब तक घर नहीं पहुंचता उस वक़्त तक दुआ मक़बूल है।

इसी तरह मज़लूम की दुआ और माँ बाप की अपनी औलाद के हक़ में दुआ भी क़बूल होती है, हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा रज़ी अल्लाहु अनहु से रिवायत है कि सरकारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: तीन किस्म की दुआएं मुस्तजाब (यानी मक़बूल) हैं उनकी क़बूलीयत में कोई शक नहीं:

(1) मज़लूम की दुआ (2) मुसाफ़िर की दुआ (3) बाप की अपने बेटे के लिए दुआ।(جامع الترمذی، کتاب الدعوات، باب ماذکر فی دعوۃ المسافر، الحدیث ۳۴۵۹، ج۵، ص۲۸۰)

(15) मंज़िल पर उतरें तो वक़्तन फ़वक़्तन येह दुआ पढ़ें इंशा अल्लाह हर नुक़्सान से बचेंगे :

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

तर्जमा : अल्लाह के कलिमाते ताम्मा की पनाह मांगता हूँ उस के शर से जिसे उसने पैदा किया।

16) जब दुश्मन का ख़ौफ़ हो तो सूरए लिईलाफ़ यानी सूरए क़ुरैश पढ़ लें, इंशा अल्लाह हर बला से अमान मिलेगी।

(17) जब किसी मुश्किल में मदद की ज़रूरत पड़े तो हदीस पाक में है इस तरह तीन बार पुकारें :

اَعِيْنُوْنِيْ يَا عِبَادَ اللهِ۔

तर्जमा : ऐ अल्लाह के बंदो! मेरी मदद करो।

(الحصن الحصین، کتاب ادعیۃ السفر، ص ۸۲)

(18) सफ़र से वापसी पर घर वालों के लिए कोई तोहफ़ा ले आएं कि येह सुन्नते मुबारका है।

सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जब सफ़र से कोई वापस आए तो घर वालों के लिए कुछ ना कुछ हदिया लाए, अगर्चे अपनी झोली में पत्थर ही डाल लाए।

(کنز العمال، کتاب السفر، الفصل الثانی فی آداب السفر، الحدیث ۱۷۵۰۲، ج ۶، ص ۳۰۱)

(19) सफ़र से वापसी पर अपनी मस्जिद में दोगाना (यानी दो रकअत नमाज़) पढ़ना सुन्नत है।

हज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मालिक रज़ी अल्लाहु अनहु से मर्वी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते तो पहले मस्जिद में तशरीफ़ ले जाते और वहां बैठने से पहले दो रकअत (नमाज़ नफ्ल) अदा फ़रमाते।(صحیح البخاری، کتاب الجہاد، باب الصلوٰۃ اذا قدم من سفر، الحدیث ۳۰۸۸، ج ۲، ص ۳۳۶)

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह! हमें सफर में आने जाने की सुन्नतो पर अमल करने की तौफ़ीक़ मर्हमत फ़रमा, आमीन।

(6) सुर्मा लगाने की सुन्नतें और आदाब

ऐ आशिक़ाने रसूल! सुर्मा लगाना हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की निहायत ही प्यारी सुन्नत है, सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब सोने लगते तो अपनी मुबारक आँखों में सुर्मा लगाया करते, लिहाज़ा हमें भी सोने से पहले इत्तिबाए सुन्नत की नीयत से अपनी आँखों में सुर्मा लगाना चाहिये, इस से हमें सुर्मा लगाने की सुन्नत का भी सवाब मिलेगा और साथ ही साथ उस के दुन्यवी फ़वाइद भी हासिल होंगे।

(1) सोते वक़्त सुर्मा डालना सुन्नत है।

सरकारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुर्मा सोते वक़्त इस्तिमाल फ़रमाते थे चुनांचे हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ी अल्लाहु अनहुमा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सोने से पहले हर आँख में सुर्मा इस्मद की तीन सलाईयाँ लगाया करते थे।

(جامع الترمذی، کتاب اللباس، باب ماجاء فی الاکتحال، الحدیث ۱۷۶۳، ج ۳، ص ۲۹۴)

(2) तमाम सुर्मों में इस्मद सुर्मा बेहतर है

इब्ने माजा की रिवायत में है: तमाम सुर्मों में बेहतर सुर्मा 'इस्मद' है कि येह निगाह को रौशन करता और पलकें उगाता है।

कहा जाता है कि इस्मद इस्फ़हान में पाया जाता है, उलमाए किराम फ़रमाते हैं कि इस का रंग स्याह यानी काला होता है और मशरिक़ी मुल्कों में पैदा होता है।

बहरे हाल इस्मद का सुर्मा मिल जाए तो यही अफ़ज़ल है वर्ना किसी किस्म का भी सुर्मा डाला जाये सुन्नत अदा हो जाएगी।

(3) सुर्मा लगाने का तरीक़ा येह है कि कभी दोनों आँखों में तीन तीन सलाईयाँ लगाएं।

(4) कभी दाएं आँख में तीन सलाईयाँ और बाएं में दो सलाईयाँ लगाऐं।

(5) कभी हर आँख में दो दो सलाईयाँ और आख़िर में एक सलाई को सुर्मा वाली कर के दोनों में लगाऐं।

हमारे प्यारे सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दोनों मुक़द्दस आँखों में सुर्मे की तीन तीन सलाईयाँ इस्तिमाल फ़रमाते थे और अक्सर उसी पर अमल था, ताहम बाज़ रिवायात में दाएं आँख मुबारक में तीन सलाईयाँ और बाएं में दो का भी ज़िक्र आया है और 'शमाइले रसूल' मे इसी तरह बयान किया गया है कि सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर आँख मुबारक में दो दो सलाईयाँ सुर्मा की डालते और एक सलाई को दोनों मुबारक आँखों में लगाते।(وسائل الوصول الی شمائل الرسول صلی اللہ علیہ والہ وسلم،الفصل الثانی فی صفۃ بصرہ....الخ،ص۷۷)

लिहाज़ा हमें मुख़्तलिफ़ अवक़ात में मुख़्तलिफ़ तरीक़े पर सुर्मा इस्तिमाल करना चाहिये, यानी कभी दोनों आँखों में तीन तीन सलाईयाँ कभी दाएं आँख में तीन और बाएं में दो, तो कभी दोनों आँखों में दो दो और फिर आख़िर में एक सलाई को सुर्मे वाली कर के बारी बारी दोनों आँखों में लगाऐं, इस तरह करने से तीनों सुन्नतें अदा हो जाएंगी।

(6) दाएं आँख से सुर्मा लगाना शुरू करें।

येह बात याद रखें कि तकरीम के जितने भी काम होते सब हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सीधी जानिब से शुरू किया करते, लिहाज़ा पहले सीधी आँख में सुर्मा लगाऐं फिर बाएं आँख में।

(المرجع السابق،الفصل الثالث،فی صفۃ شعرہ....الخ،ص۸۱)

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह! हमें हर बार सोते वक़्त सुर्मा लगाने की सुन्नत भी अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़र्मा।' आमीन।

(7) छींकने की सुन्नतें और आदाब

ऐ आशिक़ाने रसूल! छींकना भी एक अहम चीज़ है इस की भी सुन्नतें और आदाब हैं, लेकिन अफ़सोस दीनी माहौल से दूर रहने के बाइस मुसलमानों की अक्सरियत को इस सिल्सिले में कोई मालूमात नहीं होती, जहां छींक आई ज़ोर ज़ोर से "आंछी आंछी" कर लिया, नाक भर आई तो सिनक ली और बस। ऐसा नहीं है, इस की भी सुन्नतें और आदाब हमें सीखने चाहिए :शफीक खान अत्तारी

(1) छींक के वक़्त सर झुकाएँ, मुँह छुपाएं और आवाज़ आहिस्ता निकालें छींक की आवाज़ बुलंद करना हमाक़त है।

(بہارِ شریعت، حصہ ۱۶، ص ۱۰۳)

हज़रते उबादा बिन सामित व शद्दाद बिन औस व हज़रते वासिला रज़ी अल्लाहु अनहुम से रिवायत है कि ताजदारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया: 'किसी को डकार या छींक आए तो आवाज़ बुलंद ना करे कि शैतान को येह बात पसंद है कि इनमें आवाज़ बुलंद की जाये।'

(شعب الایمان، باب فی تشمیت العاطس، فصل فی تکریر العاطس، الحدیث ۹۳۵۵، ج۷، ص ۳۲)

(2) जब छींक आए और अल्ह़म्दुलिल्लाह कहेंगे तो फ़रिश्ते 'रब्बिल आलमीन' कहेंगे, अगर आप 'अल्ह़म्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन' कहेंगे तो मासूम फ़रिश्ते येह दुआ करेंगे, यरहमुकल्लाह (यानी अल्लाह पाक तुझ पर रहम फ़रमाए)

हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ी अल्लाहु अनहु से रिवायत है कि सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जब किसी को छींक आए और वो अल्ह़म्दुलिल्लाह कहे तो फ़रिश्ते कहते हैं रब्बिल आलमीन और वो अल्ह़म्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन कहता है, तो फ़रिश्ते यरहमुकल्लाह यानी अल्लाह पाक तुझ पर रहम फ़रमाए कहते हैं।

(طبرانی اوسط، الحدیث ۱۷ ۳۳ ج ۲، ص ۳۰۵)

(3) सुनने वाले पर वाजिब है कि फ़ौरन कहे यरहमुकल्लाह (यानी अल्लाह तुझ पर रहम करे कहे)।

और इतनी आवाज़ से कहे कि छींकने वाला ख़ुद सुन ले, अगर जवाब में ताख़ीर कर दी तो गुनहगार होगा।सिर्फ जवाब देने से गुनाह माफ़ नहीं होगा तौबा भी करनी होगी।

(4) जवाब सुनकर छींकने वाला कहे : 'यग़फिरुल्लाहु लना वला कुम' (अल्लाह हमारी और तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाए) या येह कहे, ' يَهْدِيْكُمُ اللهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ

तर्जमा : अल्लाह तुम्हें हिदायत दे और तुम्हारी इस्लाह फ़रमाए।

(الفتاوی الھندیہ، کتاب ما یحل وما لایحل، الباب السابع فی السلام وتشمیت العاطس، ج ۵، ص ۳۲۶)

(5) छींकने वाला ज़ोर से हम्द कहे ताकि कोई सुने और जवाब दे, दोनों को सवाब मिलेगा।

(6) छींक का जवाब एक मर्तबा वाजिब है, दोबारा छींक आए और वो अल्हम्दुलिल्लाह कहे तो दोबारा जवाब वाजिब नहीं बल्कि मुस्तहब है।

हज़रते ईयास बिन सलमा रज़ी अल्लाहु अनहु अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक आदमी को छींक आई, मैं भी मौजूद था, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया यरहमुकल्लाह, यानी अल्लाह तुझ पर रहम फ़रमाए, उसे दोबारा छींक आई तो हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: 'इसे ज़ुकाम हो गया है।'

(7) जवाब इस सूरत में वाजिब होगा जब छींकने वाला अल्हम्दुलिल्लाह कहे और हम्द ना करे तो जवाब वाजिब नहीं।

हज़रते अबू मूसा रज़ी अल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को येह फ़रमाते हुए सुना, 'जब तुम में से किसी शख़्स को छींक आए और वो अल्हम्दुलिल्लाह कहे तो तुम उस के लिए यरहमुकल्लाह कहो और अगर वो अल्हम्दुलिल्लाह ना कहे तो तुम भी यरहमुकल्लाह ना कहो ।'

(8) बुढ़िया की छींक का जवाब मर्द, ज़ोर से दे और जवान औरत का जवाब दिल में दे ।

अलबत्ता इतनी आवाज़ ज़रूरी है कि जवाब देने वाला ख़ुद सुन ले ।

(9) छींकने वाला दीवार के पीछे हो जब भी जवाब दें ।

(10) कई इस्लामी भाई मौजूद हों तो बाज़ हाज़िरीन ने जवाब दे दिया तो सबकी तरफ़ से जवाब हो गया मगर बेहतर यही है कि सारे जवाब दें ।

(11) नमाज़ के दौरान छींक आए तो अल्हम्दुलिल्लाह ना कहें।

(12) आप नमाज़ पढ़ रहे हैं और किसी को छींक आई और आपने जवाब दे दिया तो आपकी नमाज़ टूट जाएगी ।

(13) काफ़िर को छींक आई और उसने अल्हम्दुलिल्लाह कहा तो जवाब में {यहदीकल्लाह) यानी अल्लाह तुझे हिदायत करे कहा जाये ।

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह! हमें छींक की सुन्नतों और आदाब पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा ।आमीन

(8) नाख़ुन, हजामत, मुए बग़ल की सुन्नतें और आदाब

ऐ आशिक़ाने रसूल! हमारे प्यारे सरकार, मदनी ताजदार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफ़ाई को बेहद पसंद फ़रमाते हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमाने आलीशान है:" सफ़ाई आधा ईमान है।"

(جامع الترمذی،کتاب الدعوات، باب ۹۲،الحدیث ۳۵۳۰،ج۵،ص۳۰۸)

चुनांचे हर मुसलमान को चाहिए कि अपने ज़ाहिर व बातिन दोनों की सफ़ाई का ख़्याल रखे, ज़ाहिर की सफ़ाई का जहां तक तअल्लुक़ है तो वो येह है कि अपना जिस्म और लिबास वग़ैरा नजासत यानी नापकियों से पाक रखने के साथ साथ मैल कुचैल वग़ैरा से भी साफ़ रखना चाहिए , नीज़ अपने सर और दाढ़ी के बालों को भी दुरुस्त रखें, नाख़ुन भी ज़्यादा ना बढ़ने दें कि उनमें मैल कुचैल भर जाता है और वो खाना वग़ैरा खाने में पेट के अंदर पहुंचता है जिसके सबब तरह तरह की बीमारियां पैदा होने का अंदेशा रहता है, नीज़ बग़ल व ज़ेरे नाफ़ के बाल भी साफ़ करते रहना चाहिए, रहा बातिन की सफ़ाई का मुआमला तो अपने बातिन को भी मुसलमानों के कीने, गुरूर व तकब्बुर, बुग्ज़ व हसद वग़ैरा वग़ैरा रज़ाइल से पाक व साफ़ रखना ज़रूरी है, बातिन की सफ़ाई के लिए अच्छी सोहबत बेहद ज़रूरी है, ज़ाहिरी सफ़ाई यानी नाख़ुन, बग़ल के बाल और नाफ़ के नीचे के बाल वग़ैरा की सफ़ाई के मुतअल्लिक़ आदाब मुलाहिज़ा हो।

(1) चालीस दिन के अंदर अंदर इन कामों को ज़रूर कर ले मूँछें और नाख़ुन तराशना, बग़ल के बाल उखाड़ना और नाफ़ के नीचे के बाल मूंडना।

हज़रते सय्यिदुना अनस रज़ी अल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं: मूँछें और नाख़ुन तरशवाने और बग़ल के बाल उखाड़ने और नाफ़ के नीचे के बाल मूंडने में

हमारे लिए येह वक़्त मुक़र्रर किया गया है कि चालीस दिन से ज़्यादा ना छोड़ें। (صحیح مسلم، کتاب الطھارۃ، باب فی خصال الفطرۃ، الحدیث ۲۵۸، ص ۱۵۳)

ऐ आशिक़ाने रसूल! बयान की गई हदीसे पाक से पता चला कि चालीस दिन के अंदर अंदर येह काम ज़रूर कर लेना चाहिए, हफ़्ते में एक बार नहाना और बदन को साफ़ सुथरा रखना और नाफ़ के नीचे के बाल दूर करना मुस्तहब है, पंद्रहवे रोज़ करना भी जाइज़ है और चालीस रोज़ से ज़्यादा गुज़ार देना मकरूह व ममनूअ है। (بہار شریعت، حصہ ۱۶، ص ۱۹۶)

(2) हाथों के नाख़ुन तराशने के दो तरीक़े हैं :

इन दोनों में से आप जिस तरीक़े पर भी अमल करेंगे इंशा अल्लाह सुन्नत का सवाब पाएँगे, येह भी हो सकता है कभी एक पर अमल कर लें, कभी दूसरे पर, इस तरह दोनों हदीसों पर अमल हो जाएगा।

(1) मौलाए कायनात हज़रते सय्यिदुना अली मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा रज़ी अल्लाहु अनहु से नाख़ुन काटने की येह सुन्नत मंक़ूल है कि सबसे पहले सीधे हाथ की छंगुली, फिर बीच वाली, फिर अँगूठा, फिर मंझली (यानी छंगुली के बराबर वाली) फिर शहादत की उंगली, अब बाएं हाथ में पहले अँगूठा, फिर बीच वाली, फिर छंगुली, फिर शहादत की उंगली, फिर मंझली, यानी सीधे हाथ के नाख़ुन छंगुली से काटना शुरू करें और उल्टे हाथ के नाख़ुन अंगूठे से।

(2) दूसरा तरीक़ा आसान है और येह भी हमारे मदनी आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से साबित है और वो येह है कि सीधे हाथ की शहादत की उंगली से शुरू कर के तरतीब वार छंगुली समेत नाख़ुन तराशें मगर अँगूठा छोड़ दें, अब उल्टे हाथ की छंगुली से शुरू करके तरतीब वार अंगूठे समेत नाख़ुन तराश लें, अब आख़िर में सीधे हाथ का अँगूठा जो

बाक़ी था उस का नाख़ुन भी काट लें, इस तरह सीधे ही हाथ से शुरू हुआ और सीधे ही हाथ पर ख़त्म।

(3) पांव के नाख़ुन काटने का तरीक़ा येह है :

बहारे शरीअत में लिखा है कि पांव के नाख़ुन तराशने की कोई तरतीब मनक़ूल नहीं, बेहतर येह है कि वुज़ू में पांव की उंगलियों में ख़िलाल करने की जो तरतीब है उसी तरतीब के मुताबिक़ पांव के नाख़ुन काट लें, यानी सीधे पांव की छंगुली से शुरू कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाख़ुन तराश लें फिर उल्टे पांव के अंगूठे से शुरू कर के छंगुली समेत नाख़ुन काट लें।

(4) दाँत से नाख़ुन नहीं काटना चाहिए कि मकरूह है और इस से बर्स का मर्ज़ पैदा हो जाने का अंदेशा है।

(5) लंबे नाख़ुन शैतान की नशिस्त गाह यानी बैठने की जगह हैं यानी उन पर शैतान बैठता है।

(6) नाख़ुन या बाल वग़ैरा काटने के बाद दफ़न कर देना चाहिए, बैतुल खला या ग़ुस्ल ख़ाने में डाल देना मकरूह है कि इस से बीमारी पैदा होती है।

(7) नाख़ुन तराश लेने के बाद उंगलियों के पोरे धो लेने चाहिए।

(8) बग़ल के बालों को उखाड़ना सुन्नत है और मूंडना गुनाह भी नहीं।

(9) नाक के बाल ना उखाड़ें कि इस से मर्ज़ आकला पैदा हो जाने का ख़ौफ़ है।

(10) गर्दन के बाल मूंडना मकरूह है।

यानी जब कि सर के बाल ना मूंडाएं सिर्फ गर्दन ही के मूंडाएं, हाँ ! अगर पूरे सर के बाल मुंडाएं तो उस के साथ गर्दन के भी मूंडा दें, नबिये पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हजामत के सिवा गर्दन के बाल मुंडाने से मना फ़रमाया। (المعجم الاوسط،الحدیث۲۹۶۹،ج۲،ص۱۸۷)

(11) अबरू के बाल अगर बड़े हो जाएं तो उनको तरशवा सकते हैं।

(12) दाढ़ी का ख़त बनवाना जाइज़ है।

इमामे अहले सुन्नत लिखते हैं: "दाढ़ी कलमों के नीचे से कनपटियों, जबड़ों, ठोढ़ी पर जमती है और चौड़ाई में उस का बालाई हिस्सा कानों और गालों के बीच में होता है, जिस तरह बाज़ लोगों के कानों पर रौंगटे होते हैं वो दाढ़ी से ख़ारिज हैं, यूँही गालों पर जो ख़फ़ीफ़ यानी हल्के बाल किसी के कम किसी के आँखों तक निकलते हैं वो भी दाढ़ी में दाख़िल नहीं, येह बाल क़ुदरती तौर पर दाढ़ी के बाल से जुदा व मुमताज़ होते हैं, इस का मुसलसल रास्ता जो कलमों के नीचे से एक मख़रूती शक्ल पर जानिबे ज़क़न जाता है येह बाल इस राह से जुदा होते हैं, ना उनमें दाढ़ी के बाल की तरह बढ़ने की क़ुव्वत होती है। उनके साफ़ करने में कोई हर्ज नहीं बल्कि बसा अवक़ात उनकी परवरिश बाइसे तशवीशे खल्क़ व तक़बीहे सूरत होती है जो शरअन हरगिज़ पसंदीदा नहीं।(فتاویٰ رضویہ، جلد۲۲،ص۲۹۶)

(13) हाथ, पांव और पेट के बाल दूर करना चाहें तो मना नहीं।

(14) सीना व पीठ के बाल काटना या मूंडना अच्छा नहीं।

(15) दाढ़ी बढ़ाना सुन्नते अंबिया व मुर्सलीन अलैहिमुस्सलाम **से है।**

दाढ़ी मुंडवना या एक मुश्त यानी मुठ्ठी से कम करना हराम है, हाँ! एक मुश्त से ज़ाइद हो जाएगी तो जितनी ज़्यादा है उस को कटवा सकते हैं।

(16) मूंछों के दोनों किनारों के बाल बड़े बड़े हो तो हर्ज नहीं। बाज़ अस्लाफ़ (यानी गुज़श्ता बुज़ुर्गों) की मूँछें इस किस्म की थीं।

(17) मर्द को चाहिए कि नाफ़ के नीचे के बाल उस्तुरे यानी बेलेड वग़ैरा से मूंडे।

(18) नाफ़ के नीचे के बाल के लिए बाल सफ़ा पाउडर वग़ैरा का इस्तिमाल मर्दों औरतों दोनों को जाइज़ है।

(19) नाफ़ के नीचे के बालों को नाफ़ के ऐन नीचे से मूंडना शुरू करें।

(20) जनाबत यानी नापाकी की हालत में (यानी गुस्ल फ़र्ज़ होने की सूरत में) ना कहीं के बाल मूंडें ना ही नाख़ुन तराशें कि ऐसा करना मकरूह है।

(21) इस्लामी बहनें अपने सर वग़ैरा के बाल ऐसी जगह ना डालें जहां ग़ैर महरम की नज़र पड़े।

(22) इन्सान के बाल (ख्वाह वो जिस्म के किसी भी हिस्से के हों) नाख़ुन, हैज़ का लत्ता (यानी वो कपड़ा जिससे हैज़ का ख़ून साफ़ किया गया हो) और इन्सानी ख़ून इन चारों चीज़ों को दफ़न कर देने का हुक्म है। (در مختار مع ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ج۹، ص۲۶۸)

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह! हमें अपने ज़ाहिर व बातिन दोनों को साफ़ रखने और सुन्नतों पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा।

(9) ज़ुल्फ़ें रखने की सुन्नतें और आदाब

ऐ आशिक़ाने रसूल! हमारे प्यारे मदनी आक़ा,मदीने वाले मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नते करीमा है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमेशा अपने सर मुबारक के बाल शरीफ़ पूरे रखे, कभी निस्फ़ यानी आधे कान मुबारक तक तो कभी कान मुबारक की लौ तक और बा'ज़ अवक़ात आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गेसू शरीफ़ बढ़ जाते तो मुबारक शानों को झूम झूम कर चूमने लगते।

गोश तक सुनते थे फ़र्याद अब आए ता दोश
कि बने ख़ाना बदोशों को सहारे गेसू

(1) चाहें तो आधे कानों तक गेसू रखिए।

कि हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक रज़ी अल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं: कि मदीने वाले आक़ा, मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाल मुबारक आधे मुबारक कानों तक थे।

(جامع الترمذی،الشمائل باب ماجاء فی شعر رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم الحدیث ۲۴ص۵۰۷)

(2) चाहें तो पूरे कानों तक गेसू रखिए।

कि हज़रते सय्यिदुना बरा बिन आज़िब रज़ी अल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं: कि सुलताने मदीना सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क़द मुबारक दर्मियाना था, दोनों मुबारक शानों के दर्मियान फ़ासिला था और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गेसू मुबारक मुक़द्दस कानों को चूमते थे।

(شمائل ترمذی، باب ماجاء فی خلق رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ ،الحدیث ۳، ص۱۷)

(3) चाहें तो शानों तक गेसू बढ़ाईए।

कि उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आईशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहु अनहु फ़रमाती हैं कि मेरे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सर

अक़्दस पर जो बाल मुबारक होते वो कान मुबारक की लौ से ज़रा नीचे होते और मुबारक शानों को चूमते।

(شمائل ترمذی، باب ماجاء فی خلق رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ ،الحدیث ۲۵،ص ۳۵)

चूँकि बाल बढ़ने वाली चीज़ है, इस लिए जिस सहाबी रज़ी अल्लाहु अनहु ने जैसा देखा वही रिवायत कर दिया, चुनांचे हज़रते सय्यिदुना अनस रज़ी अल्लाहु अनहु ने निस्फ़ यानी आधे कानों तक देखा तो उसी को रिवायत किया और जिसने इस से ज़्यादा बड़े देखें उसने उसी मिक़दार को रिवायत किया।

(4) सर के बीच में से मांग निकालिए कि सुन्नत है।

जैसा कि सदरूश्शरीआ मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आज़मी अलैहि रहमा बहारे शरिअत में लिखते हैं ' बा'ज़ लोग दाहिने या बाएं जानिब मांग निकालते हैं, येह सुन्नत के ख़िलाफ़ है, सुन्नत येह है कि अगर सर पर बाल हों तो बीच में मांग निकाली जाये और बा'ज़ लोग मांग नहीं निकालते बल्कि बालों को सीधे रखते हैं येह भी सुन्नते मन्सूखा और यहूदो नसारा का तरीक़ा है।(بہارِ شریعت، حصہ ۱۶، ص۱۹۹)

(5) ज़ुल्फ़ों में तेल भी डालें।

इन अहादीसे मुबारका से हमें बख़ूबी मालूम हो गया कि हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमेशा अपने सर अक़्दस पर पूरे ही बाल रखें।आजकल जो छोटे छोटे बाल रखे जाते हैं, इस तरह के बाल रखना सुन्नत नहीं है।

ऐ आशिकाने रसूल! तरह तरह के तराश ख़राश वाले बाल रखने की बजाये हमें चाहिये कि प्यारे मदनी आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत में अपने सर पर आधे कानों तक, कानों की लौ तक या इतनी बड़ी ज़ुल्फ़ें रखें कि शानों को छूलें, उस का आसान तरीक़ा येह है कि एक धागा

ले कर आधे कान से या एक कान की लौ से सर के पिछले हिस्से की तरफ़ से दूसरे कान के निस्फ़ यानी आधे तक या दूसरे कान की लौ तक ले जाएं और उसे मज़बूती से पकड़ लें, अब इस धागे से नीचे जितने बाल आएं वो कटवा दीजिए।

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह! हम सब मुसलमानों को खिलाफे सुन्नत बाल रखने और रखवाने की सोच से नजात देकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्यारी प्यारी सुन्नत, ज़ुल्फ़ें रखने वाली 'सोच' अता फ़रमा, आमीन।

(10) तेल डालने और कंघा करने की सुन्नतें और आदाब

ऐ आशिक़ाने रसूल! हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने सरे अक़दस और दाढ़ी मुबारक में तेल डालते, कंघा करते, बीच सर में मांग निकालते, हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा रज़ी अल्लाहु अनहु से मर्वी है कि हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जिसके बाल हों तो वो उनका इकराम करे, यानी उनको धोए, तेल लगाए, कंघा करे। (سنن ابوداؤد، کتاب الترجل، باب فی اصلاح الشعر، الحدیث ۴۱۶۳، ج ۴، ص ۱۰۳)

(1) मांग सर के बीच में निकाली जाये कि सुन्नत है।

(2) सुर्मा लगाने और तेल डालने से पहले {बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम} पढ़ लेना चाहिए।

(3) सर में तेल लगाने का तरीक़ा येह है कि बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम पढ़ कर उल्टे हाथ की हथेली में थोड़ा सा तेल डालें, फिर पहले सीधी आँख के अबरु पर तेल लगाऐं फिर उल्टी के, इस के बाद सीधी आँख की पलक पर, फिर उल्टी पर, अब (फिर "बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम" पढ़ कर सर में तेल डालें।

(ملخصاً شمائل رسول صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم، للامام النبہانی، الفصل الثالث فی متعلق شعرہ....الخ، ص۸۱)

(4) जब भी तेल लगाऐं तो इमामे के नीचे सरबंद बांधिए।

हमारे सरकार, मदीने के ताजदार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मिज़ाजे मुबारक में चूँकि बेहद नफ़ासत थी इसी लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब सर मुबारक में तेल लगाते तो अपने इमामा मुबारक और उस की टोपी शरीफ़ और दीगर लिबास को तेल के असर से बचाने के लिए सरे अक़दस पर एक कपड़ा लपेट लिया करते और चूँकि तेल मुबारक का इस्तिमाल बहुत ज़्यादा होता इस लिए वो मुबारक कपड़ा तेल शरीफ़ वाला हो जाता।

(شمائل المحمدیۃ، الحدیث ۳۲، ص۴۰)

(5) तेल डालने के बाद टोपी और इमामा के नीचे कोई कपड़ा या रूमाल रखना या बांधना सुन्नत है।

(6) जिस से बन पड़े वो उम्दा खुश्बू दार तेल डाले।

सर में सरसों का तेल डालने वाला सर से टोपी या इमामा उतारता है तो बाज़ अवक़ात बदबू का भपका निकलता है लिहाज़ा जिससे बन पड़े वो उम्दा खुश्बू दार तेल डाले खुश्बू दार तेल बनाने का एक आसान तरीक़ा येह भी है कि खोपरे के तेल की शीशी में अपने पसंदीदा इत्र के चंद क़तरे डाल कर मिला लीजिए, खुश्बू दार तेल तैयार है।

(7) सर और दाढ़ी के बालों को वक़्तन फ़वक़्तन साबुन से धोते रहिये।

दाढ़ी में अक्सर ग़िज़ाई अज्ज़ा अटक जाते हैं, सोने में बाज़ अवक़ात मुँह की बदबूदार राल भी दाखिल हो जाती है और इस तरह बदबू आती है लिहाज़ा मशवरतन अर्ज़ है, कि हो सके तो रोज़ाना एक आध बार साबुन से दाढ़ी धो ली जाये।

(8) इमामा, टोपी, चादर वग़ैरा जल्द जल्द धोने का एहतिमाम करें।

बा'ज़ इस्लामी भाई काफ़ी बड़े साइज़ का इमामा शरीफ़ बाँधने का जज़्बा तो रखते हैं मगर सफ़ाई रखने में कोताही कर जाते हैं और यूं बसा अवक़ात ला शुऊरी में मस्जिद के अंदर 'बदबू' फैलाने के जुर्म में फंस जाते हैं, लिहाज़ा मदनी इल्तिजा है कि इमामा, सरबन्द शरीफ़ और चादर इस्ति'माल करने वाले इस्लामी भाई हत्तल इमकान हर हफ़्ते और मौसम के ऐतिबार से या ज़रूरतन मज़ीद जल्दी जल्दी उन्हें धोने की तरकीब बनाएँ, वर्ना मैल कुचैल, पसीना और तेल वग़ैरा के सबब इन चीज़ों में बदबू हो जाती है, अगर्चे ख़ुद को महसूस नहीं होती मगर दूसरों को बदबू के सबब

काफ़ी घिन आती है, ख़ुद को इस लिए पता नहीं चलता कि जिसके पास हमेशा कोई मख़सूस ख़ुश्बू या बदबू हो उस से उस की नाक अट जाती है।

(9) जिन इस्लामी भाईयों के सर पर बाल हों उनको चाहिए कि उनमें कंघा किया करें।

हज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा रज़ी अल्लाहु अनहु से रिवायत है कि सरकार, सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मैंने अर्ज़ की कि मेरे सर पर पूरे बाल हैं, मैं उन को कंघा किया करूँ ? तो आक़ाए मदीना सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया 'हाँ ! और उन का इकराम करो' लिहाज़ा हज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा रज़ी अल्लाहु अनहु मदनी आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फ़रमाने की वजह से कभी कभी तो दिन में दो दो मर्तबा भी तेल लगाया करते।

(مؤطا امام مالک، کتاب الشعر، باب اصلاح الشعر، الحدیث، ۱۸۱۸، ج ۲، ص ۴۳۵)

(10) बाल बिखरे हुए ना रखें।

हज़रते सय्यिदुना अता बिन यसार रज़ी अल्लाहु अनहु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे, इतने में एक शख़्स आया जिस के सर और दाढ़ी के बाल बिखरे हुए थे, हमारे मदनी आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस की तरफ़ इस अंदाज़ पर इशारा किया जिससे साफ़ ज़ाहिर होता था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस को बाल दुरुस्त करने का हुक्म फ़रमा रहे हैं, वो शख़्स बाल दुरुस्त कर के वापस आया, सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया "क्या यह इस से बेहतर नहीं है कि कोई शख़्स बालों को इस तरह बिखेर कर आता है गोया वो शैतान है।(مؤطا امام مالک، کتاب الشعر، باب اصلاح الشعر، الحدیث، ۱۸۱۹، ج ۲، ص ۴۳۵)

ऐ आशिक़ाने रसूल ! बयान की हुई अहादीसे मुबारका में सर और दाढ़ी के बालों को बिखरा हुआ और बे तरतीब छोड़ना ना पसंदीदा बताया गया है और फ़रमाया गया है कि बालों का इकराम किया करो यानी उनको

तेल और कंघी के ज़रिये दुरुस्त रखा करो, बल्कि बयान की गई आख़िरी हदीसे पाक में तो बिखरे हुए बाल रखने वाले को शैतान से तशबीह दी गई है लिहाज़ा हमें चाहिए कि हम अपने लिबास को पाक व साफ़ रखने के साथ साथ अपने दाढ़ी और सर के बालों को भी दुरुस्त रखा करें, बहरे हाल हमारा हुलिया सुन्नतो के साँचे में ढल कर ऐसा सुथरा और निखरा हुआ होना चाहिए कि लोग हमें देख कर हमसे घिन ना करें बल्कि हमारी तरफ़ माइल हों।

(11) कंघा करते वक़्त सीधी तरफ़ से इब्तिदा यानी शुरुआत कीजिए।

कि हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर तकरीम वाला काम सीधी तरफ़ से शुरू फ़रमाते हैं, जैसा कि 'तिर्मिज़ी शरीफ़' में है कि हज़रते सय्यिदतुना आईशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहु अनहा फ़रमाती हैं कि सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दाएं जानिब से वुज़ू करना पसंद फ़रमाते और इसी तरह कंघा भी सीधी तरफ़ से ही करते, नीज़ नालैन शरीफ़ैन भी जब पहनने का इरादा फ़रमाते तो पहले सीधा क़दम नालैन शरीफ़ में दाख़िल फ़रमाते। (جامع الترمذی، الشمائل باب ماجاء فی ترجل رسول اللہ، الحدیث ۳۴، ج۵، ص۵۰۹)

(12) आईने में चेहरा देखते वक़्त येह दुआ पढ़ें।

اَللّٰھُمَّ حَسَّنْتَ خَلْقِیْ فَحَسِّنْ خُلُقِیْ

अल्लाहुम्मा हस्सन्ता खलकी फ हस्सिन खुलुकी

सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रीशे यानी दाढ़ी मुबारक में कंघा करते वक़्त आईने में अपना रूए अनवर यानी चेहरा मुबारक मुलाहिज़ा फ़रमाते और जब आईना में अपना चेहरा मुबारक देखते तो इस तरह दुआ करते :

اَللّٰھُمَّ حَسَّنْتَ خَلْقِیْ فَحَسِّنْ خُلُقِیْ

ऐ अल्लाह! तूने मेरी सूरत तो अच्छी बनाई है मेरे अख्लाक़ भी अच्छे कर दे।

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند سیدۃ عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا، الحدیث ۲۴۴۴۶، ج۹، ص۳۳۹)

यक़ीनन येह दुआ अपने ग़ुलामों की तालीम के लिए है कि वो अपने अख्लाक़ की इस्लाह के लिए दुआ करते रहा करें, वर्ना हमारे सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अख्लाक़े करीमा के तो क्या कहने, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुस्ने अख्लाक़ के तो क़ुरआन मजीद में चर्चे हैं। चुनांचे पारह 29, सूरए क़लम, आयत नंबर 4 में इरशाद होता है :

وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِیْمٍ ﴿۴﴾

तर्जमए कंज़ुल ईमान : और बेशक तुम्हारी ख़ूबू (यानी खुल्क़) बड़ी शान की है।

तेरे खुल्क़ को हक़ ने अज़ीम कहा
तेरी ख़िल्क़ को हक़ ने जमील किया
कोई तुझ सा हुआ है ना होगा शहा!
तेरे ख़ालिक़े हुस्नो अदा की क़सम

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह! हम सब मुसलमानों को सुन्नत के मुताबिक तेल लगाने, कंघा करने की तौफीक अता फरमा। आमीन।

(11) ज़ीनत की सुन्नतें और आदाब

ऐ आशिक़ाने रसूल! हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तबीयत मुबारका में बेहद नफ़ासत थी और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफ़ाई और पाकीज़गी को बेहद पसंद फ़रमाते थे, इसी ज़िम्न में गुज़श्ता सफ़हात में नाख़ुन व मूँछें तराशने, सर और दाढ़ी में तेल लगाने और कंघा करने की सुन्नतें और आदाब पेश किए गए, अब इसी ज़िम्न में "ज़ीनत की सुन्नतें और आदाब" बयान किए जाते हैं ताकि हमारे इस्लामी भाईयों को मालूम हो कि कौन सी ज़ीनत सुन्नत के मुताबिक़ है और कौन सी ज़ीनत सुन्नत का दायरा तोड़ कर फिरंगी फ़ैशन के अंधेरे गढ़े में जा पड़ती और दुनिया और आख़िरत की तबाही का सबब बनती है?

(1) इन्सान के बालों की चोटी बना कर औरत अपने बालों में गूँधे, येह हराम है।

हदीसे मुबारक में उस पर लानत आई बल्कि उस पर भी लानत आई जिसने किसी दूसरी औरत के सर में इन्सानी बालों की चोटी गूंधी।

(در مختار، کتاب الحظر والاباحۃ، باب فی النظرِ والمس، ج۹، ص ۶۱۴تا۶۱۵)

(2) अगर वो बाल जिसकी चोटी बनाई गई ख़ुद उस औरत के अपने बाल हैं जिसके सर में जोड़ी गई जब भी नाजाइज़ है।

(3) ऊन या स्याह यानी काले धागे की चोटी इस्लामी बहनों को सर में लगाना जाइज़ है।

(4) लड़कियों के कान नाक छेदना जाइज़ है।

(5) बा'ज़ लोग लड़कों के भी कान छिदवाते हैं और बाली वग़ैरा पहनाते हैं येह नाजाइज़ है, यानी कान छिदवाना भी नाजाइज़ और उसे ज़ेवर पहनाना भी नाजाइज़।

(6) औरतों को हाथ पांव में मेहंदी लगाना जाइज़ है, मर्द और छोटे बच्चों के हाथ पांव में मेहंदी लगाना नाजाइज़ है, बच्चियों को मेहंदी लगाने में हर्ज नहीं।

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा रज़ी अल्लाहु अनहु से मर्वी है कि मदीने के ताजदार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक मुख़न्नस (यानी हिजड़ा) हाज़िर किया गया जिसने अपने हाथ और पांव मेहंदी से रंगे हुए थे, इरशाद फ़रमाया: इस का क्या हाल है ? (यानी उसने क्यों मेहंदी लगाई है ?) लोगों ने अर्ज़ की, येह औरतों की नक़्ल करता है , हमारे मदनी आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुक्म फ़रमाया: "कि इसे शहर से निकाल कर दो, लिहाज़ा उस को शहर से बाहर कर दिया गया, मदीना मुनव्वरा से निकाल कर "नक़ीअ "को भेज दिया गया।

ऐ आशिक़ाने रसूल! देखा आपने! मुख़न्नस ने औरतों की नक़्ल की यानी हाथ पांव में मेहंदी लगाई तो हमारे मक्की मदनी सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस से किस क़दर नाराज़ हुए कि उसे शहर बदर यानी शहर से बाहर कर दिया, इस मुबारक हदीस से हमारे वो भाई दर्स हासिल करें जो शादी या ईदैन वग़ैरा के मवाक़ेअ पर अपने हाथों या उंगलियों पर मेहंदी लगा लिया करते हैं।

(7) जिस तरह मर्दों को औरतों की नक़्ल जाइज़ नहीं इसी तरह औरतें भी मर्दों की नक़्ल नहीं कर सकतीं।

जैसा कि हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास रज़ी अल्लाहु अनहु से रिवायत है कि ताजदारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लानत फ़रमाई ज़नाना मर्दों पर जो औरतों की सूरत बनाएँ और मर्दानी औरतों पर जो मर्दों की सूरत बनाएँ।(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد اللہ بن عباس، الحدیث ۲۲۶۳، ج۱ص ۵۴۰)

(8) जानदार की तसावीर वाले लिबास हरगिज़ ना पहना करें ना ही जानवरों या इन्सानों की तसावीर वाले इस्टीकर्ज़ अपने कपड़ों पर लगाऐं, ना ही घरों में लटकाया करें।

(9) अपने बच्चों को ऐसे 'बाबा सूट' ना पहनाएं जिन पर जानवरों और इन्सानों के फ़ोटो बने हुए होते हैं।

(10) ख़वातीन अपने शौहर के लिए जाइज़चीजों के ज़रीये, मगर घर की चार दीवारी में ज़ीनत करें लेकिन मेकअप कर के और बन सँवर के घर से बाहर ना निकला करें।

कि हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: औरत पूरी की पूरी औरत (यानी छुपाने की चीज़) है जब कोई औरत बाहर निकलती है तो शैतान उस को झांक झांक कर देखता है।

(جامع الترمذی، کتاب الرضاع، باب (۱۸)، الحدیث۱۱۷۶، ج۲، ص۳۹۲)

(11) नंगे सर फिरना सुन्नत नहीं है।

लिहाज़ा इस्लामी भाईयों को चाहिए कि अपने सर पर इमामा शरीफ़ का ताज सजाये रखें कि येह हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की निहायत ही प्यारी सुन्नत है।

ऐ आशिक़ाने रसूल! बस ज़ीनत वही कीजिए जिसकी शरिअते मुतह्हरा ने इजाज़त मर्हमत फ़रमाई और हरगिज़ हरगिज़ फिरंगी फ़ैशन ना अपनाईए जिससे अल्लाह पाक का क़हरो ग़ज़ब जोश पर आए।

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह! हमें फिरंगी फ़ैशन की आफ़त से छुड़ा कर अपने प्यारे हबीब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नतो का दीवाना बना दे ।आमीन।

(12) ख़ुश्बू की सुन्नतें और आदाब

ऐ आशिक़ाने रसूल! हमारे सरकार, मदीने के ताजदार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़ुश्बू बेहद पसंद है, लिहाज़ा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर वक़्त मुअत्तर मुअत्तर रहते, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुश्बू का बहुत इस्ति'माल फ़रमाया करते थे ताकि ग़ुलाम भी अदाए सुन्नत की नीयत से खुश्बू लगाया करें वर्ना इस बात में किस को शक व शुबा हो सकता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वुजूदे मसऊद तो क़ुदरती तौर पर खुद ही महकता रहता और ताजदारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुबारक पसीना बज़ाते ख़ुद कायनात की सबसे बेहतरीन खुश्बू है।

मुश्क़ो अंबर क्या करूँ ? ऐ दोस्त खुश्बू के लिए
मुझको सुल्ताने मदीना का पसीना चाहिए

(1) खुश्बू लगाना सुन्नत है :

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन समुरा रज़ी अल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं कि एक बार सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना दस्ते पुर अनवार मेरे चेहरे पर फेरा मैंने उसे ठंडा और ऐसी खुश्बूदार हवा की तरह पाया जो किसी इत्र बेचने वाले के इत्रदान से निकलती है।

(وسائل الوصول الی شمائل الرسول صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم، الفصل الرابع فی صفۃ عرقہ.... الخ، ص ۸۵)

(2) उम्दा किस्म की खुश्बू लगाना सुन्नत है।

ऐ आशिक़ाने रसूल! 'शमाइले रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में है कि हमारे मदीने वाले आक़ा, महकने और महकाने वाले मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उम्दा और बेहतरीन किस्म की खुश्बू बहुत पसंद थी और नाख़ुश गवार बू आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नापसंद फ़रमाते, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमेशा उम्दा खुश्बू इस्तिमाल करते और इसी की दूसरे लोगों को भी तलक़ीन फ़रमाते।

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक रज़ी अल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं कि हमारे मुअत्तर मुअत्तर हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक ख़ास किस्म की खुश्बू थी जिसे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस्तिमाल फ़रमाते हैं।

(وسائل الوصول الی شمائل الرسول صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم ،الفصل الخامس فی صفۃ طیبہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم، ص۸۷)

(3) सर में खुश्बू लगाना सुन्नत है :

सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आदत करीमा थी कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम 'मुश्क़' सरे अक़्दस के मुक़द्दस बालों और दाढ़ी मुबारक में लगाते।

(وسائل الوصول الی شمائل الرسول صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم ،الفصل الخامس فی صفۃ طیبہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم، ص۸۷)

हज़रते सय्यिदतुना आईशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहु अनहा से मर्वी है, फ़रमाती हैं मैंने अपने सरताज सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को निहायत उम्दा से उम्दा खुश्बू लगाई थी यहां तक कि उस की चमक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सर मुबारक और दाढ़ी शरीफ़ में पाती।

(صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب الطیب فی الرأس واللحیۃ، الحدیث ۵۹۲۳، ج ۴، ص۸۱)

(4) कैमीकल्ज़ से बनी हुई खूश्बुएं और एयर फ्रेशनर बदन में ना लगाऐं।

ऐ आशिक़ाने रसूल! मालूम हुआ कि सर और दाढ़ी के बालों में खुश्बू लगाना सुन्नत है, मगर येह ख़्याल रखें कि सर और दाढ़ी में सिर्फ देसी खुश्बू इस्तिमाल करें, बदक़िस्मती से आजकल देसी खुश्बू का मिलना बेहद दुशवार हो गया है, अब उमूमन इत्रियात कैमीकल्ज़ से बनाए जाते हैं, उन का लिबास में इस्तिमाल करना जाइज़ तो है मगर सर और दाढ़ी में लगाना नुक़्सान देह है आजकल 'एयर फ्रेशनर' का इस्तिमाल आम होता जा रहा है उनका छिड़काव ख़ास तौर पर उन कमरों में किया जाता है जो बंद रहते हैं

इस से वक़्ती तौर पर कमरे में खुश्बू तो हो जाती है मगर उस के कीमियावी माद्दे फ़िज़ा में फैल जाते हैं जो सांस के साथ फेफड़ों में दाख़िल हो कर सेहत को नुक़्सान पहुंचाते हैं, एक तिब्बी तहक़ीक़ के मुताबिक़ 'एयर फ्रेशनर' के इस्तिमाल से चमड़ी का कैंसर हो जाता है, चंद लम्हों की खुश्बू के हुसूल की ख़ातिर इतना बड़ा ख़तरा मोल लेना अक्लमंदी नहीं, लिहाज़ा "एयर फ्रेशनर" के इस्तिमाल से बचना चाहिए।

(5) मुसलमानों को खुश्बू का तोहफ़ा दें और कोई आपको दे तो वापस ना करें बल्कि क़बूल कर लें।

'शमाइले तिर्मिज़ी' में है कि हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक रज़ी अल्लाहु अनहु खुश्बू का तोहफ़ा रद्द नहीं फ़रमाते थे आप रज़ी अल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं कि नबियों के सरदार, हमारे मुअत्तर मुअत्तर सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमते बा बरकत में जब ख़ुश्बू तोहफतन पेश की जाती तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रद्द ना फ़रमाते।

"शमाइले तिर्मिज़ी" में हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ी अल्लाहु अनहु से रिवायत है कि सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान आलीशान है कि तीन चीज़ें वापस नहीं लौटानी चाहिये: (1) तकिया (2) ख़ुश्बू व तेल और (3) दूध।

ऐ आशिक़ाने रसूल ! खुश्बू, तकिया और दूध (और उनमें तमाम कम क़ीमत की चीज़ें शामिल हैं) का हदिया क़बूल करने की हिक्मत मुहद्दिसीने किराम येह बयान करते हैं कि उमूमन येह चीज़ें इतनी क़ीमती नहीं होतीं और ज़ाहिर है जो सस्ती चीज़ होती है वो देने वाले के लिए ज़्यादा बोझ साबित नहीं होती और क़बूल ना करने पर देने वाले का दिल टूटने का अंदेशा भी रहता है और चूँकि हमारे मदीने वाले आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी का दिल तोड़ना पसंद नहीं करते थे, इस लिए आप सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम खुश्बू का तोहफ़ा रद्द नहीं फ़रमाते, चुनांचे हमें भी चाहिए कि अगर हमें कोई खुश्बू या सस्ती चीज़ तोहफतन पेश करे तो उसे सुन्नत समझ कर क़बूल कर लेना चाहिए, अगर कोई क़ीमती चीज़ पेश करे तो उसे भी क़बूल करने में कोई हर्ज नहीं मगर गौर कर लेना मुनासिब मालूम होता है कि कहीं मुरव्वत वग़ैरा में तो नहीं दे रहा कि येह देना बाद में ख़ुद उसी पर बोझ पड़ जाये।

(6) मर्दाना खुश्बू वो जिसकी खुश्बू ज़ाहिर हो और ज़नाना खुश्बू वो जिसका रंग ज़ाहिर हो।

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा रज़ी अल्लाहु अनहु से रिवायत कि मक्की मदनी सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मर्दाना खुश्बू वो है कि उस की खुश्बू तो ज़ाहिर हो मगर रंग ज़ाहिर ना हो और ज़नाना यानी औरतों की खुश्बू वो है कि उस का रंग तो ज़ाहिर हो मगर खुश्बू ज़ाहिर ना हो।

मर्दों को अपने लिबास पर ऐसी खुश्बू इस्तिमाल करनी चाहिए जिसकी खुश्बू फैले मगर रंग के धब्बे वग़ैरा नज़र ना आएं, जैसा कि गुलाब, केवड़ा, संदल और इसी किस्म के बेरंग इत्रियात औरतों के लिऐ महक की मुमानअत इस सूरत में है जबकि वो खुश्बू अजनबी मुर्दों तक पहुंचे, अगर वो घर में इत्र लगाऐं जिसकी खुश्बू शौहर या औलाद, माँ बाप तक ही पहुंचे तो हर्ज नहीं।

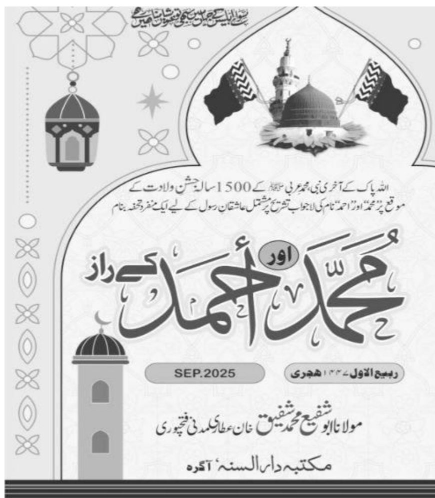
हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अशअरी रज़ी अल्लाहु अनहु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया: औरत जब खुश्बू लगा कर किसी मजलिस के पास से गुज़रती है तो वो ऐसी और ऐसी है यानी ज़ानिया है।

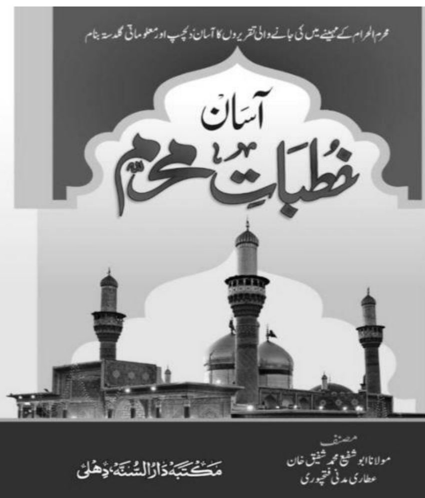
(7) खुश्बू की धूनी लेना जाइज़ है।

हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ रज़ी अल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं कि अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ी अल्लाहु अनहु कभी कभी ख़ालिस ऊद की धूनी लेते, यानी ऊद के साथ किसी दूसरी चीज़ की मिलावट नहीं करते और कभी ऊद के साथ काफ़ूर मिला कर धूनी लेते और फ़रमाया कि मदनी आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी इसी तरह धोनी लिया करते थे।

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह! हमें हमारे प्यारे सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सदक़े में मदीनए मुनव्वरा की मुअत्तर मुअत्तर फ़िज़ाओं और मुअंबर मुअंबर हवाओं में सांस लेने की सआदत नसीब फ़रमा और फिर उन्हें मुअत्तर मुअत्तर फ़िज़ाओं में मुअत्तर मुअत्तर हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जलवो में आफ़ियत के साथ ईमान पर मौत नसीब फ़रमा और जन्नतुल बक़ीअ की महकी महकी सरज़मीन में मदफ़न नसीब फ़रमा ।आमीन।

टूट जाये दम मदीने में मेरा या रब बक़ीअ
काश हो जाये मयस्सर सब्ज़ गुम्बद देखकर





(13) खाने की सुन्नतें और आदाब

ऐ आशिक़ाने रसूल! खाना अल्लाह पाक की बहुत लज़ीज़ नेअमत है, अगर सुन्नते अहमदे मुज्तबा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुताबिक़ खाना खाया जाये तो हमें पेट भरने के साथ साथ सवाब भी हासिल होगा, इस लिए हमें चाहिए कि सुन्नत के मुताबिक़ खाना खाने की आदत डालें, खाना खाने की कुछ सुन्नतें और आदाब मुलाहिज़ा हो।

(1) हर खाने से पहले अपने हाथ पहुँचो तक धो लें।

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक रज़ी अल्लाहु अनहु रिवायत करते हैं कि नूर के पैकर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जो येह पसंद करे कि अल्लाह पाक उस के घर में बरकत ज़्यादा करे तो उसे चाहिए कि जब खाना हाज़िर किया जाये तो वुज़ू करे और जब उठाया जाये तब भी वुज़ू करे।(سنن ابن ماجہ، کتاب الاطعمہ، باب الوضوء عند الطعام، الحدیث ۳۲۶۰، ج ۴، ص ۹)

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी रज़ी अल्लाहु अनहु लिखते हैं इस (यानी खाने के वुज़ू) के मा'ना हैं हाथ व मुंह की सफ़ाई करना कि हाथ धोना कुल्ली कर लेना।

(2) जब भी खाना खाएं तो उल्टा पांव बिछा दें और सीधा खड़ा रखें या सुरीन पर बैठ जाएं और दोनों घुटने खड़े रखें।

(3) खाने से पहले जूते उतार लें।

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक रज़ी अल्लाहु अनहु से रिवायत है कि सरकारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:खाना खाने बैठो तो जूते उतार लो, इस में तुम्हारे लिए राहत है।

(مشکوۃ المصابیح، کتاب الاطعمۃ، الفصل الثالث، الحدیث ۴۲۴۰، ج ۲، ص ۴۵۴)

(4) खाने से पहले बिस्मिल्लाह पढ़ लें।

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा रज़ी अल्लाहु अनहु से मर्वी है कि हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जिस खाने पर बिस्मिल्लाह ना पढ़ी जाये उस खाने को शैतान अपने लिए हलाल समझता है।

(صحیح مسلم، کتاب الاشربہ، باب آداب الطعام... الخ، الحدیث ۲۰۱۷، ص۱۱۱۶)

(5) अगर खाने के शुरू में बिस्मिल्लाह पढ़ना भूल जाएं तो याद आने पर बिस्मिल्लाहि अव्वलहू व आखिरह, पढ़ लें।

हज़रते सय्यिदतुना आईशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहु अनहु से मर्वी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जब तुम में से कोई खाना खाए तो उसे चाहिए कि पहले बिस्मिल्लाह पढ़े, अगर शुरू में बिस्मिल्लाह पढ़ना भूल जाये तो येह कहे: बिस्मिल्लाहि अव्वलहू व आखिरह।(سنن ابوداؤد، کتاب الاطعمہ، باب التسمیة علی الطعام، الحدیث ۳۷۶۷، ج۳، ص۴۸۷)

(6) खाने से पहले येह दुआ पढ़ ली जाये तो अगर खाने में ज़हर भी होगा तो इंशा अल्लाह असर नहीं करेगा।

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَایَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ یَاحَیُّ یَاقَیُّوْمُ

यानी अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जिसके नाम की बरकत से ज़मीन व आसमान की कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती, ऐ हमेशा से ज़िंदा व काइम रहने वाले।(فردوس الاخبار بماثور الخطاب، الحدیث ۱۹۵۵، ج۱، ص۲۷۴)

(7) सीधे हाथ से खाईये।

हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमाने अज़मत निशान है: जब तुम में से कोई खाना खाए तो सीधे हाथ से खाए और जब पिए तो सीधे हाथ से पिए कि शैतान उल्टे हाथ से खाता पीता है।

(صحیح مسلم، کتاب الاشربة، باب آداب الطعام والشرب، الحدیث ۲۰۲۰، ص۱۱۱۷)

(8) अपने सामने से खाएं।

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक रज़ी अल्लाहु अनहु से रिवायत है कि नूर के पैकर, सुल्ताने बहरो बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: हर शख़्स बर्तन की उसी जानिब से खाए जो उस के सामने हो।

(صحیح البخاری، کتاب الاطعمة، باب الاکل مما یلیه، الحدیث ۵۳۷۷، ج ۳، ص ۵۲۱)

हज़रते सय्यिदुना अबू सलमा रज़ी अल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं कि एक रोज़ खाना खाते हुए मेरा हाथ प्याले में इधर उधर हरकत कर रहा था (यानी कभी एक तरफ़ से लुक़्मा उठाया कभी दूसरी तरफ़ से और कभी तीसरी तरफ़ से लुक़्मा उठाया) जब अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे इस तरह करते हुए देखा तो फ़रमाया : ऐ लड़के! बिस्मिल्लाह पढ़ कर दाएं हाथ से खाया कर और अपने सामने से खाया कर, चुनांचे उस के बाद से मेरे खाने का तरीक़ा यही हो गया।

(صحیح البخاری، باب التسمیة علی الطعام، ج ۳، الحدیث ۵۳۷۶)

(9) खाने में किसी किस्म का ऐब ना लगाऐं मिसाल के तौर पर येह ना कहें कि मज़ेदार नहीं, कच्चा रह गया है, फीका रह गया क्योंकि खाने में ऐब निकालना मकरूह व खिलाफे सुन्नत है बल्कि जी चाहे तो खाएं वर्ना हाथ रोक लें।

हज़रते अबू हुरैरा रज़ी अल्लाहु अनहु ने फ़रमाया कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी किसी खाने को ऐब नहीं लगाया (यानी बुरा नहीं कहा) अगर ख्वाहिश होती तो खा लेते और ख्वाहिश ना होती तो छोड़ देते। (صحیح البخاری، باب ماعاب النبی طعاماً، الحدیث ۵۴۰۹)

इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना अहमद रज़ा ख़ान अलैहि रहमा लिखते हैं 'खाने में ऐब निकालना अपने घर पर भी ना चाहिए, मकरूह व खिलाफे सुन्नत है'।(فتاوی رضویہ، ج ۲۱، ص ۱۵۲)

खाने की 40 नीयतें

(अज़ शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रत अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार कादरी रज़वी ज़ीदा मज्दुहू)

फरमाने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम 'मुसलमान की नीयत उस के अमल से बेहतर है ।'(المعجم الکبیر للطبرانی، حدیث ۵۹۴۲، ج۶، ص۱۸۵)

लिहाज़ा खाने से पहले अच्छी अच्छी नीयत कर लें ताकि खाने का सवाब भी मिले वो नीयतें येह हैं :

(1) खाने से पहले और (2) बाद का वुज़ू करूँगा (यानी हाथ, और मुंह का अगला हिस्सा धोऊँगा और कुल्लियां करूँगा (3) इबादत (4) तिलावत (5) वालिदैन की ख़िदमत (6) तहसीले इल्मे दीन (7) सुन्नतो की तर्बियत की ख़ातिर मदनी क़ाफ़िले में सफ़र (8) अलाक़ाई दौरा में शिरकत (9) उमूरे आख़िरत और (10) हसबे ज़रूरत कसबे हलाल के लिए भाग दौड़ पर क़ुव्वत हासिल करूँगा (येह नीयतें उसी सूरत में मुफ़ीद होंगी जबकि भूक से कम खाए, ख़ूब डट कर खाने से उलटा इबादत में सुस्ती पैदा होती गुनाहों की तरफ़ रुजहान बढ़ता और पेट की ख़राबियां जन्म लेती हैं) (11) ज़मीन पर (12) दस्तरख्वान बिछाने की सुन्नत अदा करके (13) सुन्नत के मुताबिक बैठ कर (14) खाने से पहले बिस्मिल्लाह और (15) दीगर दुआएं पढ़ कर (16) तीन उंगलियों से (17) छोटे छोटे निवाले बनाकर (18) अच्छी तरह चबा कर खाऊंगा (19) हर दो एक लुक़मा पर या वाजिदु पढूँगा (20) जो दाना वग़ैरा गिर गया उठा कर खा लूंगा (21) रोटी का हर निवाला सालन के बर्तन के ऊपर करके तोड़ूँगा ताकि रोटी के ज़र्रात बर्तन ही में गिरें (22) हड्डी और गर्म मसालहा अच्छी तरह साफ़ करने और चाटने के बाद फेंकूँगा (23) भूक से कम खाऊंगा (24) आखिर में सुन्नत की अदायगी की

नीयत से बर्तन और (25) तीन बार उंगलियां चाटूँगा (26) खाने के बर्तन धोकर पी कर एक ग़ुलाम आज़ाद करने के सवाब का हक़दार बनूँगा (27) जब तक दस्तरख्वान ना उठा लिया जाये उस वक़्त तक बिला ज़रूरत नहीं उठूंगा (28) खाने के बाद मस्नून दुआएं पढ़ूँगा (29) ख़िलाल करूँगा।

मिलकर खाने की मज़ीद नीयतें

(30) दस्तरख़्वान पर अगर कोई आलिम या बुज़ुर्ग मौजूद हुए तो उन से पहले खाना शुरू नहीं करूँगा (31) मुसलमानों के क़ुर्ब की बरकतें हासिल करूँगा (32) उनको बोटी, कद्दू शरीफ़, खुरचन और पानी वग़ैरा पेश करके उनका दिल ख़ुश करूँगा (33) उन के सामने मुस्कुराकर सदक़े का सवाब कमाऊँगा (34) खाने की नीयतें और (35) सुन्नतें बताऊँगा (36) मौक़ा मिला तो खाने से पहले और (37) बाद की दुआएं पढ़ाऊंगा (38) ग़िज़ा का उम्दा हिस्सा मसलन बोटी वग़ैरा हिर्स से बचते हुए दूसरों की ख़ातिर ईसार करूँगा (39) उनको ख़िलाल का तोहफ़ा पेश करूँगा (40) खाने के हर एक दो लुक़मे पर हो सका तो इस नीयत के साथ बुलंद आवाज़ से या वाजिदु कहूँगा कि दूसरों को भी याद आ जाए।

अल्लाह पाक हमें सुन्नत के मुताबिक़ खाना खाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

(14) पानी पीने की सुन्नतें और आदाब

ऐ आशिक़ाने रसूल! पानी भी अल्लाह पाक की एक ऐसी अज़ीम नेअमत है जिसकी ज़रूरत हर एक को है चाहे वो हैवानात हों या नबातात, लिहाज़ा उस को सुन्नत के मुताबिक़ पी कर अल्लाह पाक का शुक्र अदा करना चाहिए :

(1) पानी बैठ कर पियें।

(2) उजाले में देखकर पियें।

(3) सीधे हाथ से पियें।

(4) बिस्मिल्लाह पढ़ कर पियें।

(5) हर मर्तबा गिलास को मुँह से हटा कर सांस लें।

(6) पहली और दूसरी बार एक एक घूँट पियें और तीसरी सांस में जितना चाहें पियें।

(7) पानी पीने के बाद अल्हम्दुलिल्लाह कहें।

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास रज़ी अल्लाहु अनहु से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: ऊंट की तरह एक ही घूँट में ना पी जाया करो बल्कि दो या तीन बार पिया करो और जब पीने लगो तो बिस्मिल्लाह पढ़ा करो और जब पी चुको तो अल्हम्दुलिल्लाह कहा करो।

(سنن ترمذی، کتاب الاشربۃ، باب ماجاء فی التنفس فی الاناء، الحدیث ۱۸۹۲، ج۳، ص ۳۵۲)

हज़रते सय्यिदुना अनस रज़ी अल्लाहु अनहु से रिवायत है कि सरकारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पीने में तीन बार सांस लेते थे और फ़रमाते थे: इस तरह पीने में ज़्यादा सैराबी होती है और सेहत के लिए मुफ़ीद व खुशगवार है। (صحیح مسلم، کتاب الاشربۃ، باب کراھۃ التنفس فی الاناء...الخ، الحدیث ۲۰۲۸، ج۳، ص۱۱۲۰)

(8) पानी के बर्तन में ना सांस लें और ना फूंक मारें।

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास रज़ी अल्लाहु अनहु से रिवायत है कि अल्लाह के प्यारे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बर्तन में सांस लेने और फूँकने से मना फ़रमाया है।

(9) खड़े हो कर पानी ना पियें।

हज़रते सय्यिदुना अनस रज़ी अल्लाहु अनहु से रिवायत है कि सरकारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खड़े हो कर पानी पीने से मना फ़रमाया है।

पानी पीने की15 नीयतें

(अज़ शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, हज़रत अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार कादरी रज़वी ज़ीदा मज्दुहू)

पानी पीने से पहले येह नीयतें कर लीजिए :

(1) इबादत (2) तिलावत (3) वालिदैन की ख़िदमत (4) तहसीले इल्मे दीन (5) सुन्नतो की तर्बियत की ख़ातिर मदनी क़ाफ़िले में सफ़र (6) अलाक़ाई दौरे में शिरकत (7) उमूरे आख़िरत और (8) हसबे ज़रूरत कसबे हलाल के लिए भाग दौड़ पर कुव्वत हासिल करूँगा, येह नियतें उसी वक़्त मुफ़ीद होंगी जब कि फ्रीज़र या बर्फ़ का ख़ूब ठंडा पानी ना हो कि ऐसा पानी मज़ीद बीमारियां पैदा करता है (9) बैठ कर (10) बिस्मिल्लाह पढ़ कर (11) उजाले में देखकर (12) चूस कर (13) तीन सांस में पियूँगा (14) पी चुकने के बाद अल्हम्दुलिल्लाह कहूँगा (15) बचा हुआ पानी नहीं फेंकूँगा।

चाये पीने की 6 नीयतें

(अज़ शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, हज़रत अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार कादरी रज़वी ज़ीदा मज्दुहू)

चाये पीने से पहले येह नीयतें कर लीजिए :

(1) बिस्मिल्लाह पढ़ कर पियूँगा (2) सुस्ती उड़ा कर इबादत (3) तिलावत 4) दीनी किताबत और (5) इस्लामी मुतालआ पर क़ुव्वत हासिल करूँगा (6) पीने के बाद अल्ह़म्दुलिल्लाह कहूँगा।



(15) चलने की सुन्नतें और आदाब

ऐ आशिक़ाने रसूल! मदनी सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हयाते तय्यिबा ज़िंदगी के हर शोबे में हमारी रहनुमाई करती है, मुसलमान की चाल भी इम्तियाज़ी होनी चाहिए, गिरेबान खोल कर, गले में ज़ंजीर सजाये, सीना तान कर, क़दम पछाड़ते हुए चलना अहमक़ों और मग़रूरों की चाल है, मुसलमानों को दर्मियाना और पुर वक़ार तरीक़े पर चलना चाहिए, चलने की चंद सुन्नतें और आदाब मुलाहिज़ा हो :

(1) अगर कोई रुकावट ना हो तो दर्मियानी रफ़्तार चलें।

(2) रास्ते के किनारे किनारे चलें।

(3) ना इतना तेज़ कि लोगों की निगाहें आप पर जम जाएं और ना इतना आहिस्ता कि आप बीमार महसूस हो।

(4) लफंगों की तरह गिरेबान खोल कर अकड़ते हुए हरगिज़ ना चलें।

कि येह अहमक़ों यानी बेवकूफों और मग़रूरों की चाल है बल्कि नीची नज़रें किए पुर वक़ार तरीक़े पर चलें।

हज़रते सय्यिदुना अनस रज़ी अल्लाहु अनहु से मर्वी है कि जब हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चलते तो झुके हुए मालूम होते थे।

(سنن ابو داؤد، کتاب الادب، باب فی ھدی الرجل، الحدیث ۴۸۶۳، ج۴، ص۳۴۹)

(5) राह चलने में परेशान नज़री से बचें और सड़क पार करते वक़्त गाड़ियों वाली सिम्त देखकर सड़क पार करें।

अगर गाड़ी आ रही हो तो बे तहाशा भाग ना पड़ें बल्कि रुक जाएं कि इस में हिफ़ाज़त का ज़्यादा इमकान है।

(6) राह चलते वक़्त बद निगाही से बचें।

दीवारों पर लगे हुए साइनबोर्ड, इश्तिहारात और पोस्टर्स वग़ैरा में बनी हुई औरतों की तसावीर को ना देखें।

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह! हमें प्यारे हबीब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत के मुताबिक़ दर्मियाना, तकब्बुर से बिल्कुल पाक चाल चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और हमें रास्ते के एक तरफ़, इधर उधर झाँके ताके बिगैर सर झुका कर शरीफ़ाना चाल चलने की तौफ़ीक़ मर्हमत फ़रमा, आमीन।



(16) बैठने की सुन्नतें और आदाब

ऐ आशिक़ाने रसूल! हमारा उठना बैठना भी सुन्नत के मुताबिक़ होना चाहिए, हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अक्सर क़िब्ला शरीफ़ की तरफ़ रूए अनवर यानी चेहरा मुबारक कर के बैठा करते थे, ज़हे नसीब हम भी कभी कभी क़िब्ला रू हो कर बैठें तो कभी मदीनए मुनव्वरा की तरफ़ मुँह कर के बैठें कि येह भी बहुत बड़ी सआदत है काश! मदीने पाक की तरफ़ रुख कर के बैठते वक़्त येह तसव्वुर भी बंध जाये और ज़बाने हाल से येह इज़हार होने लगे :

दीदार के काबिल तो कहाँ मेरी नज़र है
येह तेरी इनायत है जो रुख़ तेरा इधर है

बैठने की चंद सुन्नतें और आदाब मुलाहिज़ा हो :

(1) सुरीन ज़मीन पर रखें और दोनों घुटनों को खड़ा कर के दोनों हाथों से घेर लें और एक हाथ से दूसरे को पकड़ लें, इस तरह बैठना सुन्नत है लेकिन इस दौरान घुटनों पर कोई चादर वग़ैरा ओढ़ लेना बेहतर है।

(2) चार ज़ानू (यानी पालती मार कर) बैठना भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम **से साबित है।**

(3) जहां कुछ धूप और कुछ छाव हो वहां ना बैठें।

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा रज़ी अल्लाहु अनहु से रिवायत है कि अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जब तुम में से कोई साए में हो और उस पर से साया रुख्सत हो जाए और वो कुछ धूप कुछ छाव में रह जाये तो उसे चाहिए कि वहां से उठ जाये।

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی الجلوس بین الظل والشمس، الحدیث۴۸۲۱، ج۴، ص۳۴۴)

(4) क़िब्ला रुख हो कर बैठें।

(5) बुज़ुर्गों की नशिस्त यानी उनके बैठने की जगह पर बैठना अदब के ख़िलाफ़ है।

इमामे अहले सुन्नत, मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान अलैहि रहमा लिखते हैं: पीर व उस्ताज़ की नशिस्त पर उनकी ग़ैर मौजूदगी में भी ना बैठे।

(فتاوٰی رضویہ، ج۲۴، ص۳۶۹ |(۴۲۴

(6) कोशिश करें कि उठते बैठते वक़्त बुज़ुर्गाने दीन की तरफ़ पीठ ना होने पाए और पांव तो उनकी तरफ़ ना ही करें।

(7) जब कभी इज्तिमा या मजलिस में आएं तो लोगो को फलाँग कर आगे ना जाएं जहां जगह मिले वहीं बैठ जाएं।

(8) जब बैठें तो जूते उतार लें आपके क़दम आराम पाएँगे।

(الجامع الصغیر، الحدیث ۵۵۴، ص۴۰)

(9) मजलिस से फ़ारिग़ हो कर येह दुआ तीन बार पढ़ लें तो गुनाह माफ़ हो जाएंगे।

और जो मजलिसे ख़ैर व मजलिसे ज़िक्र में पढ़े तो उसके लिए इस ख़ैर पर मोहर लगा दी जाएगी, वो दुआ येह है :

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ

तर्जमा : तेरी ज़ाते पाक है और ऐ अल्लाह! तेरे ही लिए तमाम ख़ूबियां हैं, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, तुझ से बख़्शिश चाहता हूँ और तेरी तरफ़ तोबा करता हूँ।

(سنن ابی داوٗد، کتاب الادب، باب فی کفارۃ المجلس، الحدیث ۴۸۵۷، ج۴، ص۳۴۷)

(10) जब कोई आलिमे बा अमल या मुत्तक़ी शख़्स या सय्यद साहिब या वालिदैन आएं तो ताज़ीमन खड़े हो जाना सवाब है।

हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी अलैहि रहमा लिखते हैं बुज़ुर्गों की आमद यानी उनके आने पर येह दोनों काम यानी ता'ज़ीमी

क़ियाम और इस्तिक़बाल जाइज़ बल्कि सुन्नते सहाबा है बल्कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत क़ौली है।

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह! हमें उठने बैठने की सुन्नतों और आदाब पर अमल पैरा होने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ मर्हमत फ़रमा। आमीन।



(17) लिबास पहनने की सुन्नतें और आदाब

ऐ आशिक़ाने रसूल! अल्लाह पाक का येह एहसाने अज़ीम है कि उसने हमें लिबास की दौलत अता की, लिबास से हम सर्दी, गर्मी के असरात से अपनी हिफ़ाज़त कर सकते हैं, येह लिबास हमारी ज़ीनत का सबब भी है और वक़ार का सबब भी है, हर क़ौम का जुदा जुदा लिबास होता है, मगर मुसलमान का लिबास सबसे मुम्ताज़ है, लिबास की चंद सुन्नतें और आदाब मुलाहिज़ा हों :

(1) सफ़ैद लिबास हर लिबास से बेहतर है और सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम **ने इस को पसंद फ़रमाया है।**

हज़रते सय्यिदुना समुरा रज़ी अल्लाहु अनहु से मर्वी है कि हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: सफ़ैद लिबास पहनो क्योंकि येह ज़्यादा साफ़ और पाकीज़ा है और अपने मुर्दों को भी इसी में कफ़नाओ।

(سنن ترمذی،کتاب الادب، باب ماجاء فی لبس البیاض،الحدیث ۲۸۱۹،ج ۴، ص ۳۷۰)

(2) जब कपड़ा पहनने लगें तो येह दुआ पढ़ें, अगले पिछले गुनाह माफ़ हो जाएंगे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ کَسَانِیْ ھٰذَا وَرَزَقَنِیْہِ مِنْ غَیْرِ حَوْلٍ مِّنِّیْ وَلَا قُوَّۃٍ

तर्जमा : अल्लाह का शुक्र है जिसने मुझे येह पहनाया और बिगैर मेरी क़ुव्वत व ताकत के मुझे येह अता किया।

(المستدرک، کتاب اللباس، باب الدعاء عند فراغ الطعام، الحدیث ۷۴۸۶، ج۵، ص ۲۷۰)

(3) पहनते वक़्त सीधी तरफ़ से शुरू करें।

मिसाल के तौर पर जब कुरता पहनें तो पहले सीधी आसतीन में सीधा हाथ दाख़िल करें फिर उल्टी में, इसी तरह पाजामा में पहले सीधे पाइंचे में सीधा पांव दाख़िल करें।

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा रज़ी अल्लाहु अनहु से मर्वी है कि सरकारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब कुरता पहनते तो दाहिनी तरफ़ से शुरू फ़रमाते। (سنن ابی داؤد، کتاب اللباس، باب ماجاء فی الاتنعال، الحدیث ۴۱۴۱، ج ۴، ص ۹۶)

(4) जब उतारने लगें तो उल्टी तरफ़ से शुरू करें।

(5) पहले कुर्ता पहनें फिर पाजामा।

(6) पाजामा बैठ कर पहनें और इमामा खड़े हो कर बांधे।

बहारे शरिअत हिस्सा 16 सफा 303 पर है: इमामा खड़े हो कर बाँधे और पाजामा बैठ कर पहने, जिसने इस का उल्टा किया (यानी इमामा बैठ कर बाँधा और पाजामा खड़े हो कर पहना) वो ऐसे मर्ज़ में मुब्तला होगा जिसकी दवा नहीं।

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह! हमें फ़ैशन वाले लिबास से बचा और महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत के मुताबिक़ लिबास पहनने की तौफ़ीक़ मर्हमत फ़रमा, आमीन।

(18) जूता पहनने की सुन्नतें और आदाब

ऐ आशिक़ाने रसूल! नालैन पहनना सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत है, जूते पहनने से कंकर, कांटे वग़ैरा चुभने से पांव की हिफ़ाज़त रहती है, नीज़ मौसमे सरमा में सर्दी से भी पांव महफ़ूज़ रहते हैं और गर्मियों में धूप में चलने के लिए जूते निहायत ही कार आमद हैं, जूता पहनने की चंद सुन्नतें और आदाब मुलाहिज़ा हो :

(1) किसी भी रंग का जूता पहनना अगर्चे जाइज़ है लेकिन पीले रंग के जूते पहनना बेहतर है।

कि मौला मुश्किल कुशा अलीयुल मुर्तज़ा रज़ी अल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं: जो पीले जूते पहनेगा उस की फ़िक्रो में कमी होगी।

(كشف الخفاء، الحديث ٢٥٩٥،ج ٢، ص ٢٤٦)

(2) पहले सीधा जूता पहनें फिर उल्टा और उतारते वक़्त पहले उल्टा जूता उतारें फिर सीधा।

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा रज़ी अल्लाहु अनहु से मर्वी है कि अल्लाह के प्यारे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: (कोई शख़्स) जब जूता पहने तो पहले दाहिने पांव में पहने और जब उतारे तो पहले बाएं पांव का उतारे। (سنن ابن ماجه، کتاب اللباس، باب لبس النعال وخل، الحديث ٣٦١٦، ج ٤، ص ١٦٦)

(3) जब बैठें तो जूते उतार लेना सुन्नत है।

हज़रते इब्ने अब्बास रज़ी अल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं कि जब बंदा बैठे तो सुन्नत है कि अपने जूते उतार ले।

(سنن ابی داؤد، کتاب اللباس، باب فی الانتعال،، الحديث ٤١٣٨، ج ٤، ص ٩٥)

(4) जूता पहनने से पहले झाड़ लें ताकि कीड़ा या कंकर वग़ैरा हो तो निकल जाये।

(5) इस्ति'माली जूता उल्टा पड़ा हो तो सीधा कर दीजिए वर्ना फक्रो तंग दस्ती का अंदेशा है । (سنی بہشتی زیور، حصہ ۵، ص۱۰۲)



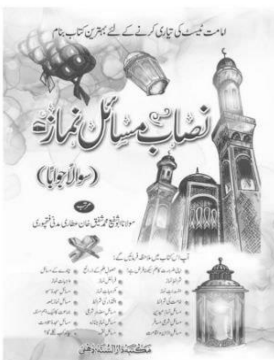




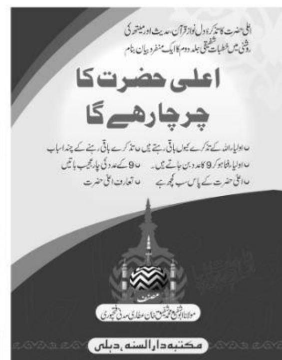












(19) सोने जागने की सुन्नतें और आदाब

ऐ आशिक़ाने रसूल! नींद भी एक तरह की मौत है, जब भी हम सोने लगें तो हमें डर जाना चाहिए कि कहीं ऐसा ना हो कि आँख ही ना खुले और हमेशा हमेशा के लिए ही सोते ना रह जाएं , लिहाज़ा रोज़ाना सोने से पहले भी अपने गुनाहों से तौबा कर लेनी चाहिए, अगर हम सुन्नत के मुताबिक़ दुआएं वग़ैरा पढ़ कर सोएँ तो इंशा अल्लाह हमें सोने का भी कुछ ना कुछ फ़ायदा हासिल हो ही जाएगा, अब सोने और जागने के बारे में सुन्नतें और आदाब वग़ैरा बयान की जाती हैं :

(1) सोने से पहले बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ कर बिस्तर को तीन बार झाड़ लें ताकि कोई मूज़ी यानी तकलीफ देने वाली चीज़ या कीड़ा वग़ैरा हो तो निकल जाये।

(2) सोने से पहले येह दुआ पढ़ लेना सुन्नत है :

اَللّٰھُمَّ بِاِسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيٰ۔

अल्लाहुम्मा बिस्मिका अमूतु व अहया

तर्जमा : ऐ अल्लाह! मैं तेरे नाम के साथ ही मरता हूँ और जीता हूँ (यानी सोता और जागता हूँ)

(3) उल्टा यानी पेट के बल ना सोएँ।

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा रज़ी अल्लाहु अनहु से मर्वी है कि हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक शख़्स को पेट के बल लेटे हुए देखा तो फ़रमाया: इस तरह लेटने को अल्लाह पाक पसंद नहीं फ़रमाता।

(سنن ابن ماجہ، کتاب الادب، باب النھی عن الاضطجاع علی الوجہ، الحدیث ۳۷۲۳، ج۴، ص۲۱۴)

(4) दाएं करवट लेटना सुन्नत है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब अपनी ख्वाबगाह पर तशरीफ़ ले जाते तो अपना सीधा हाथ मुबारक सीधे रुख़्सार शरीफ़ के नीचे रखकर लेटते।(شمائل الترمذی،کتاب الشمائل، باب ماجاء فی صفۃ نوم رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ ،الحدیث ۲۵۳،ج۵،ص۵۴۹)

(5) क़ुरआने मजीद के आदाब में से येह भी है कि उस की तरफ़ पीठ ना की जाये ना पांव फैलाए जाएं, ना पांव को उस से ऊंचा करें, ना येह कि ख़ुद ऊंची जगह पर हो और क़ुरआने मजीद नीचे हो।

हाँ ! अगर क़ुरआने पाक और मुक़द्दस तुग़रे वग़ैरा ऊंची जगह हों तो उस सिम्त पांव करने में मुज़ायक़ा नहीं।

(6) कभी चटाई पर सोएँ तो कभी बिस्तर पर, कभी फर्शे ज़मीन पर ही सो जाएं।

(7) जागने के बाद येह दुआ पढ़ें।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ اَحْیَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَیْہِ النُّشُوْرُ

अल्हम्दु लिल्लाही अहयाना बादा मा अमातना व इलैहिन्नुशूर

तर्जमा : तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिसने हमें मारने के बाद ज़िंदा किया और उसी की तरफ़ लौट कर जाना है।

(صحیح البخاری،کتاب الدعوات، باب مایقول اذانام ،الحدیث ۶۳۱۲،ج۴،ص۱۹۲)

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह ! हमें कम सोने और सुन्नत के मुताबिक़ सोने की तौफ़ीक़ मर्हमत फ़रमा, आमीन।

(20) मेहमान नवाज़ी की सुन्नतें और आदाब

ऐ आशिक़ाने रसूल! मेहमान नवाज़ी करना सुन्नते मुबारका है, अहादीसे मुबारका में इस के बहुत से फ़ज़ाइल बयान किए गए हैं बल्कि यहां तक फ़रमाया कि मेहमान बाइसे खैरो बरकत है, एक दफ़ा सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के यहां मेहमान हाज़िर हुआ तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़र्ज़ लेकर उस की मेहमान नवाज़ी फ़रमाई, चुनांचे :

ताजदारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ग़ुलाम अबू राफ़ेअ रज़ी अल्लाहु अनहु कहते हैं, सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझ से फ़रमाया: 'फ़ुलां यहूदी से कहो कि मुझे आटा क़र्ज़ दे, मैं रजब शरीफ़ के महीने में अदा कर दूंगा, (क्योंकि एक मेहमान मेरे पास आया हुआ है) यहूदी ने कहा, जब तक कुछ गिरवी नहीं रखोगे, ना दूँगा, हज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ रज़ी अल्लाहु अनहु कहते हैं कि मैं वापस आया और ताजदारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में उस का जवाब अर्ज़ किया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, वल्लाह मैं आसमान में भी अमीन हूँ और ज़मीन में भी अमीन हूँ, अगर वो दे देता तो मैं अदा कर देता। अब मेरी वो ज़िरह ले जा और गिरवी रख आ, मैं ले गया और ज़िरह गिरवी रखकर लाया।

(المعجم الکبیر، الحدیث ۹۸۹، ج۱، ص۳۳۱)

(1) मेहमान बाइस ख़ैरो बरकत है।

हज़रते सय्यिदुना अनस रज़ी अल्लाहु अनहु का बयान है कि ताजदारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जिस घर में मेहमान हो उस घर में ख़ैरो बरकत उसी तरह दौड़ती है जैसे ऊंट की कोहान से छड़ी (तेज़ी से) गिरती है, बल्कि इस से भी तेज़।

(سنن ابن ماجہ، کتاب الاطعمۃ، باب الضیافۃ، الحدیث ۳۳۵۶، ج۴، ص۵۱)

ऐ आशिक़ाने रसूल! छड़ी ऊंट के कोहान पर रख दें तो फ़ौरन लुढ़क कर नीचे की तरफ़ आ जाती है, मेहमान की वजह से ख़ैरो बरकत इस से भी ज़्यादा तेज़ी के साथ नाज़िल होती है।

(2) मेहमान अपना रिज़्क़ लेकर आता है।

(3) मेज़बान के गुनाह माफ़ होने का सबब होता है।

सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमाने आलीशान है, 'जब कोई मेहमान किसी के यहां आता है तो अपना रिज़्क़ लेकर आता है और जब उस के यहां से जाता है तो साहिबे ख़ाना के गुनाह बख़्शे जाने का सबब होता है।'(کشف الخفا، حرف الضاد المعجمۃ، الحدیث ۱۶۴۱، ج۲، ص ۳۳)

(4) दस फ़रिश्ते साल भर तक मेज़बान के घर में रहमत लुटाते हैं।

हज़रते सय्यिदुना अनस रज़ी अल्लाहु अनहु ने अपने भाई हज़रत बरा बिन मालिक रज़ी अल्लाहु अनहु से फ़रमाया " ऐ बरा ! आदमी जब अपने भाई की, अल्लाह पाक के लिए मेहमान नवाज़ी करता है और इस की कोई जज़ा यानी बदला और शुक्रिया नहीं चाहता तो अल्लाह पाक उस के घर में दस फ़रिश्तों को भेज देता है जो पूरे एक साल तक अल्लाह पाक की तस्बीह व तहलील और तकबीर पढ़ते और उस के लिए मग़फ़िरत की दुआ करते रहते हैं और जब साल पूरा हो जाता है तो उन फ़रिश्तों की पूरे साल की इबादत के बराबर उस के नामए आमाल में इबादत लिख दी जाती है और अल्लाह पाक के ज़िम्मए करम पर है कि उस को जन्नत की लज़ीज़ ग़िज़ाएँ 'जन्नतुल ख़ुल्द' और ना फ़ना होने वाली बादशाही में खिलाए।

(کنزالعمال، کتاب الضیافۃ، قسم الافعال، الحدیث ۲۵۹۷۲، ج۹، ص۱۱۹)

सुब्ह़ानल्लाह! सुब्ह़ानल्लाह! किसी के घर मेहमान तो क्या आता है गोया अल्लाह पाक की रहमत की छमाछम बरसात शुरू हो जाती है इस क़दर अज्रो सवाब, अल्लाह ! अल्लाह !

(5) मेहमान को दरवाज़े तक रुख़्सत करना सुन्नत है।

ह़ज़रते अबू हुरैरा रज़ी अल्लाहु अनहु का बयान है, ताजदारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया: सुन्नत येह है कि आदमी मेहमान को दरवाज़े तक रुख़्सत करने जाये।

(سنن ابن ماجہ، کتاب الاطعمۃ، باب الضیافۃ، الحدیث ۳۳۵۸، ج ۴، ص ۵۲)

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह! हमें मेहमानों की ख़ुश दिली के साथ मेहमान नवाज़ी करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और बार बार हमें मदीने की महकी महकी फ़ज़ाओं में मदनी आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मेहमान बनने की सआदत नसीब फ़रमा। आमीन।



(21) इमामा के फ़ज़ाइल

ऐ आशिक़ाने रसूल! इमामा शरीफ़ हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बहुत ही प्यारी सुन्नत है, हमारे सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमेशा सरे अक़्दस पर अपनी मुबारक टोपी पर इमामा मुबारक को सजा कर रखा, इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान علیہ الرحمہ फ़रमाते हैं इमामा सुन्नतें मुतवातिरा दाइमा है।(فتاویٰ رضویہ جدید،ج۶،ص۲۰۸،۲۰۹)

रसूलुल्लाह ﷺ के आठ इर्शादात

(1) इमामे के साथ दो रकअतें बिग़ैर इमामे की सत्तर रकअतों से अफ़्ज़ल हैं। (فردوس الاخبار، باب الراء، فصل رکعتان،الحدیث ۳۰۵۴،ج۱،ص۴۱۰)

(2) इमामे के साथ नमाज़ दस हज़ार नेकियों के बराबर है।

(فردوس الاخبار، باب الصاد،الحدیث۳۶۲۱،ج۲،ص۳۱)

(3) बेशक अल्लाह और उस के फ़रिश्ते दुरूद भेजते हैं जुमा के दिन इमामा वालों पर। (الجامع الصغیر، حرف الھمزۃ،الحدیث ۱۸۱۷،ص۱۱۳)

(4) टोपी पर इमामा हमारा और मुशरिकीन का फ़र्क़ है हर पेच पर जो मुसलमान अपने सर पर देगा उस पर रोज़े क़यामत एक नूर अता किया जाएगा।(مرقاۃ المفاتیح شرح مشکوۃ المصابیح،کتاب اللباس،الحدیث ۴۳۴۰،ج۸،ص۱۴۷)

(5) इमामा बाँधो तुम्हारा हिल्म बढ़ेगा।

(المستدرک، کتاب اللباس، باب اعتموا تزدادوا حلماً،الحدیث ۷۴۸۸،ج۵،ص۲۷۲)

(6) इमामा मुसलमानों का वक़ार और अरब की इज़्ज़त है तो जब अरब इमामा उतार देंगे अपनी इज़्ज़त उतार देंगे।

(فردوس الاخبار، باب العین،الحدیث ۴۱۱۱،ج۲،ص۹۱)

(7) ताजदारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम **ने इमामे की तरफ इशारा करके फ़रमाया: 'फ़रिश्तों के ताज ऐसे ही होते हैं।'**

(کنز العمال،کتاب المعیشۃ والعادات، باب آداب التعمم،الحدیث ۴۱۹۰۶ج۱۵،ص۲۰۵)

(8) इमामे के साथ एक जुमा बिगैर इमामे के सत्तर जुमा के बराबर है।(فردوس الاخبار، باب الجیم، الحدیث ۲۳۹۳، ج۱، ص۳۲۸)

हज़रते सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ी अल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं: कि मैं अपने वालिदे माजिद हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ी अल्लाहु अनहु के हुज़ूर हाज़िर हुआ वो इमामा बांध रहे थे जब बांध चुके तो मेरी तरफ़ इल्तिफ़ात करके फ़रमाया तुम इमामे को दोस्त रखते हो ? मैंने अर्ज़ की, क्यों नहीं ! फ़रमाया इसे दोस्त रखो, इज़्ज़त पाओगे और जब शैतान तुम्हें देखेगा तुमसे पीठ फेर लेगा, ऐ बेटे! इमामा बांध कि फ़रिश्ते जुमा के दिन इमामा बाँधे आते हैं और सूरज डूबने तक इमामा बाँधने वालों पर सलाम भेजते रहते हैं। (فتاویٰ رضویہ جدید، ج۶، ص۲۱۵)

(9) इमामा मुबारका के पेच सीधी जानिब होने चाहिए।

चुनांचे इमामे अहले सुन्नत हज़रत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान अलैहि रहमा इमामा शरीफ़ इस तरह बाँधते कि शिमला मुबारका सीधे शाने (कंधे) पर रहता, नीज़ बाँधते वक़्त उस की गर्दिश बाएं (यानी उल्टे) हाथ से फ़रमाते जबकि सीधा हाथ मुबारक पेशानी पर रखते और उसी से हर पेच की गिरिफ्त फ़रमाते। (حیات اعلیٰ حضرت علیہ الرحمۃ، ج۱، ص۱۴۴)

इमामे के आदाब

(1) इमामा सात 7 हाथ (साढ़े तीन गज़) से छोटा ना हो और बारह 12 हाथ (छ: गज़) से बड़ा ना हो।

(2) इमामे के शिमले की मिक़दार कम अज़ कम चार उंगल और ज़्यादा से ज़्यादा इतना हो कि बैठने में ना दबे।

(3) इमामा उतारते वक़्त भी एक एक कर के पेच खोलना चाहिये, इमामा क़िब्ला की तरफ़ रुख कर के खड़े खड़े बाँधे।

(الفتاوی الھندیہ، کتاب الکراھیۃ، باب التاسع فی اللباس...الخ، ج۵، ص۳۳۰)

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह! हमें इमामे की सुन्नत पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा।

तेरी सुन्नतो पे चल कर मेरी रूह जब निकल कर
चले तुम गले लगाना मदनी मदीने वाले
मेरी आने वाली नस्लें तेरे इश्क़ ही में मचलें
उन्हें नेक तू बनाना मदनी मदीने वाले

तम्म्त बिल खैर
11 रबीउल आखिर 1447 हिजरी
बमुताबिक़ 4 अक्तूबर 2025
बरोज़ सनीचर नमाज़े मग़रिब से क़ब्ल
मक़ाम : जामिअतुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर, आगरा

आँखों का तारा नामे मुहम्मद

आँखों का तारा नामे मुहम्मद ﷺ
दिल का उजाला नामे मुहम्मद ﷺ
अल्लाहु अकबर! रब्बुल उला ने
हर शै पे लिखा नामे मुहम्मद ﷺ
हैं यूँ तो कसरत से नाम लेकिन
सब से है प्यारा नामे मुहम्मद ﷺ
दौलत जो चाहो दोनों जहाँ की
कर लो वज़ीफ़ा, नामे मुहम्मद ﷺ
शैदा न क्यूँ हों इस पर मुसलमाँ
रब को है प्यारा नामे मुहम्मद ﷺ
अल्लाह वाला दम में बना दे
अल्लाह वाला नामे मुहम्मद ﷺ
सल्ले अला का सेहरा सजा कर
दूल्हा बनाया नामे मुहम्मद ﷺ
नूहो ख़लीलो मूसा व ईसा
सब का है आक़ा नामे मुहम्मद ﷺ
पाईं मुरादें दोनों जहाँ में
जिस ने पुकारा नामे मुहम्मद ﷺ

रखो लहद में जिस दम अज़ीज़ो!
मुझ को सुनाना नामे मुहम्मद ﷺ

रोज़े क़ियामत मीज़ानो पुल पर
देगा सहारा नामे मुहम्मद ﷺ

पूछेगा मौला लाया है क्या क्या?
मैं येह कहूँगा नामे मुहम्मद ﷺ

बेड़ा तबाही में आ गया है
दे दे सहारा नामे मुहम्मद ﷺ

अपने रज़ा के कुर्बान जाऊँ
जिस ने सिखाया नामे मुहम्मद ﷺ

आँखों में आ कर दिल में समा कर
रंगत रचा जा नामे मुहम्मद ﷺ

अपने जमीले रज़वी के दिल में
आ जा समा जा नामे मुहम्मद ﷺ

(वसीम बेख़ुद माण्डलवी इंडिया)

आओ सब को बताते हैं, येह जश्न है पंद्रह सौ सालह
आज मुहम्मद आते हैं, येह जश्न है पंद्रह सौ सालह

एक नया सा जोश उभर कर, दुनिया पर छा जाता है
चाँद महे मीलाद का यारो, हम को नज़र जब आता है
फिर फूलें न समाते हैं, येह जश्न है पंद्रह सौ सालह
आज मुहम्मद आते हैं, येह जश्न है पंद्रह सौ सालह

इस उम्मत पर रब्बे अकबर, ने ऐसा एहसान किया
इस आलम में पैदा उस ने, नबियों का सुलतान किया
शुक्र बजा हम लाते हैं, येह जश्न है पंद्रह सौ सालह
आज मुहम्मद आते हैं, येह जश्न है पंद्रह सौ सालह

बुलबुल, कोयल, चिड़िया, मैना, अपनी अपनी रागों में
गीत खुशी के चहक चहक कर, गाते रहते बागों में
फूल भी हँसते जाते हैं, येह जश्न है पंद्रह सौ सालह
आज मुहम्मद आते हैं, येह जश्न है पंद्रह सौ सालह

आमिना बीबी के घर से, वह शान के साथ निकलती है
दाई हलीमा गोद में ले के, प्यारे नबी को चलती है
याद वही दिन आते हैं, येह जश्न है पंद्रह सौ सालह
आज मुहम्मद आते हैं, येह जश्न है पंद्रह सौ सालह

बेखुद अपनी क़िस्मत देखो, उस दिन वह एअजाज़ मिला
हम को हादी, हामी, रहबर, और रब का हमराज़ मिला
तभी तो हम भी मनाते हैं, यह जश्न है पंद्रह सौ सालह
आज मुहम्मद आते हैं, यह जश्न है पंद्रह सौ सालह

इमाम अहमद रज़ा खान (رحمۃ اللہ علیہ)

मुस्तफा जाने रहमत पे लाखों सलाम
शमअे बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम

शहरे यारे इरम ताजदारे हरम
नौ बहारे शफाअत पे लाखों सलाम

हम गरीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फकीरों की सर्वत पे लाखों सलाम

जिस तरफ उठ गई दम में दम आ गया
उस निगाहे इनायत पे लाखों सलाम

पतली पतली गुले कुद्स की पत्तियां
उन लबों की नज़ाकत पे लाखों सलाम

जिस सुहानी घड़ी चमका तैबा का चाँद
उस दिल अफ़रोज़ साअत पे लाखों सलाम

किस को देखा येह मूसा से पूछे कोई
आँख वालों की हिम्मत पे लाखों सलाम

हाथ जिस सम्त उठा गनी कर दिया
मौजे बहरे समाहत पे लाखों सलाम

एक मेरा ही रहमत में दावा नहीं
शाह की सारी उम्मत पे लाखों सलाम

काश ! महशर में जब उन की आमद हो और
भेजें सब उन की शौक़त पे लाखों सलाम

डाल दी क़ल्ब में अज़मते मुस्तफा
सय्यदी आला हज़रत पे लाखों सलाम

मुझ से खिदमत की कुदसी कहें हाँ रज़ा
मुस्तफा जाने रहमत पे लाखों सलाम

स	उनवान	पेज

स	उनवान	पेज